करियें, 'जिसमें यहां जो व्यक्ति मरें, वही पुरुष निर्व्वाण पा सकें। मैंने यह सुनकर उनकी बातको ही स्वीकार किया और उस अवधिसे जो व्यक्ति भक्तिपूर्ण हृदयसे इस केदारकुण्डमें स्नान, केदारेश्वरपूजा और मेरी पूजा करते हैं, उनको कांशीतर स्थानमें भी देहपात होनेसे मैं मुक्त करता हूं। यदि कोई केदारतीर्थमें स्नानकर स्थिरचित्तसे पितृपुरुषोंका श्राद्धविधान करे, तो उसके वंशके एकोत्तरशत पुरुष फिर भवयातना नहीं भोगते। अमावस्यायुक्त मङ्गलवारको इस कुण्डमें पितृपिण्ड प्रदान करनेसे, गयामें पिण्डदानका फल मिलता है। यदि कोई हिमालय जाकर केदारेश्वरका दर्शन पानेके अभिलाषी हों, तो उनका "काशीस्थित केदारलिङ्गका दर्शन करनेसे ही तुम पूर्णकाम होगे" कहकर काशीके उन लिङ्गमें ही बुद्धि प्रदान करना कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति चैत्रमासके कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको उपोषित रह, दूसरे दिन सवेरे केदारतीर्थका गण्डुषत्रय मात्र जलपान करते हैं, शिवलिङ्ग उनके अन्तरमें वास करते हैं। कोई स्त्री या पुरुष, हिमालयमें केदारतीर्थका जलपानकर जो फल पाते हैं, काशीमें इस तीर्थके जलपानसे भी वैसे ही पुण्यभागी होते हैं। जो व्यक्ति धन, वस्त्र और अन्नादि द्वारा केदारेश्वरके भक्तको भी पूजा करते हैं, अन्तमें उनका मेरे लोकमें आना निश्चित है। छः महीनेतक केदारेश्वरका प्रणामकारी व्यक्ति, यमादि दिक्पालोंसे भी सदा प्रणाम पाता है। कलिकालमें इन केदारेश्वरकी महिमा सभी जान न सकेंगे; किन्तु जो उनकी महिमा जानेंगे, वह सभी विषय जान सकेंगे। हे प्रिये! एकबार भी केदारेश्वरका दर्शन करनेसे, मनुष्य मेरे अनुचरोंमें गण्य होते हैं, सुतरां सर्व्वतोभावसे काशीस्थ केदारेश्वरका दर्शन करना उचित है। केदारेश्वरके उत्तर चित्राङ्गदेश्वर लिङ्ग हैं; जीव उनकी पूजा करनेसे स्वर्गभोग करता है और केदारेश्वरके दक्षिण जो लिङ्ग हैं; उन नीलकण्ठेश्वरका दर्शन करनेसे सर्पदंष्ट्र होनेपर भी मनुष्यको विषभय नहीं रहता। केदारेश्वरके वायुकोणमें अम्बरीषेश्वर लिङ्ग हैं; इनका दर्शन करनेसे मनुष्योंकी भवयातना दूर होती है। उनके पास ही इन्द्रद्युम्नके लिङ्गकी अर्चना करनेसे मनुष्य दीप्तिमान् विमानमें आरूढ़ हो देवलोकमें जाते हैं। उनके दक्षिण कालञ्जरेश्वर नामक लिङ्ग हैं; जो व्यक्ति इनका दर्शन करते, वह जरामरणविवर्ज्जित हो कैलासमें वास करते हैं और इन चित्राङ्गदेश्वरके उत्तर क्षेमेश्वर विराज रहे हैं; उन लिङ्गके दर्शनसे मनुष्य दोनो लोकमें मङ्गललाभ करते

हैं। कार्त्तिकेयने कहा,' हे विन्ध्यविमर्दन! आदिदेव महादेवने केदारेश्वरकी जैसी महिमा कही थी, मैंने भी तुमसे उसी तरह कही। जो मनुष्य इन केदारेश्वरका उत्पत्तिवृत्तान्त सुनते हैं, वह उसी मुहूर्त्तमें निष्पाप हो चरम समयमें शिवलोकमें जाते हैं।

सप्तसप्ततितम अध्याय समाप्त ॥ ७७ ॥

अष्टसप्ततितम अध्याय।

धर्म्मेश्वरलिङ्गका उत्पत्तिविवरण।

पार्व्वतीने कहा, हे प्रभो महादेव! काशीमें ऐसे कौन लिङ्ग हैं, जिनका नाम उच्चारण करनेसे जीवका महापातक क्षय होता है और जिनकी सेवा करनेसे परम प्रसन्नता लाभ होनेकी वजह साधुगण सदा उनकी सेवा करते हैं; जिनके पास दान या होमकार्य्य अनन्त फलप्रद होता है और जिनका ध्यान, स्मरण, दर्शन, जप, प्रणाम और स्पर्श या पञ्चामृत द्वारा यथाविधि स्नान करा उनकी पूजा करनेसे, मनुष्योंको असीम मङ्गल लाभ होता है? हे जगदीश्वर! उन पवित्रतम लिङ्गका विषय मुझसे कहिये। कार्त्तिकेयने कहा, हे कुम्भयोने! तब भगवतीकी ऐसी बात सुनकर जगदीश शङ्करने जो उत्तर दिया, वह मुझसे सुनो। महादेवने कहा, अयि प्रिये! तुमने जो पूछा, मैं वह विषय कहता हूं। इसको सुननेसे जीवगणका भवबन्धन मुक्त होता है। अयि पार्व्वती! मैंने पहले काशीधाममें अपना यह परम रहस्य किसीसे नहीं कहा, अथवा दूसरा कोई इस तरह पूछना भी नहीं जानता। हे प्रिये! काशीमें असंख्य लिङ्ग हैं सही, किन्तु तुम्हारे अभिप्रायानुसार उनमें सर्व्वोत्कृष्ट विषय कहता हूं सुनो। हे विश्वरूपे! जहां तुम मुक्तिरूपिणी होकर विराजिता हो; जहां तुम्हारे पत्र वज्रायुध गणपति अवस्थित हैं; त्रिपुरासुरके साथ संग्रामके समय जयाभिलाषी हो मैंने जिन लिङ्गकी स्तुतिकर जयलाभ किया था; जिन लिङ्गके पास पापविनाशक पितृगणका सन्तोषविधायक एक तीर्थ विराज रहा है; जिस तीर्थमें वृत्रघाती देवराज स्नानकर वृत्रासुरवधजनित घोर पापसे मुक्त हुए थे; धर्मराजने जिनके पास कठोर तपस्याकर दण्डधरत्वपद पाया था; जिनके पास तिर्य्यग्योनि भी परम ज्ञान लाभ करते और एक वटवृक्ष सुवर्णमय हुआ था और दुर्द्दमनामा परमदुर्व्वृत्त नरपतिकी जिनको देखनेकी अवधिसे धर्म्ममें मति हुई थी, हे प्रिये पार्व्वती! उन परम महिमात्मक मेरे लिङ्गका पापनाशक माहात्म्य और आविर्भाववृत्तान्त वर्णन करता हूं, सुनो। धर्म्मेश्वरका आयतन धर्म्मपीठ नामसे विख्यात हुआ है; उनके दर्शनमात्रसे जीवके

सब पाप दूर होते हैं। अयि विशालाक्षि! पहले एकबार सूर्य्यात्मज यमने संयमी हो उस पीठके पास तपस्या करना आरम्भ की। शीतकालमें जलमें अवस्थान वर्षाकालमें अनाच्छादितदेहसे अनावृतस्थानमें अवस्थिति और ग्रीष्मऋतुमें प्रदीप्त पञ्चाग्निके भीतर वास करते हुए उन्होंने स्वाभीष्ट घोर तपस्याकी चित्तैकाग्रता प्रकाश की थी। यमने पहले एक पैरसे अवस्थान, फिर अङ्गुष्ठके ऊपर केवल निर्भर रह खड़े होकर तपस्या की थी। वह कोई वर्ष केवल वायु आहार कर बिताते; किसो समय अति तृष्णार्त्त होकर भी कुशाग्रपरिमित जलपानकर कितने ही दिन बिताते थे। यमराजने मेरा दर्शन पानेके लिये समाधिस्थ हो दिव्य षोड़शयुगतक तपश्चरण किया। फिर मैं महात्मा यमको इस तरह दीर्घकालव्यापी तपश्चरणसे परितृप्त हो उन्हें वर देनेके लिये गया। पार्व्वति! यमराज वहां काञ्चनशाख नामक एक अति सुन्दर बटवृक्षकी छायामें समय समयपर तपस्याजनित ताप दूर करते हुए वहां दीर्घकालतक तपस्या करते थे। वह बटवृक्ष कितने ही पक्षियोंका वासस्थान था; उसके सब नवपल्लव मन्द वायुके झकोरेसे आन्दोलित होनेपर जान पड़ता था, मानो वृक्ष पथगमनसे श्रान्त पथिकोंको अपनी शीतल छायामें विश्राम देनेके लिये बुला रहा है और जो उसका आश्रय ग्रहण करते थे, वह वृक्ष उन लोगोंको स्वप्रसूत स्वादु सुपक्व फल प्रदानकर परितृप्त करता था। मैंने वहां उपस्थित हो देखा, कि उस बटमूलमें यम, निर्म्मलगगनमें द्वितीय सूर्य्यकी तरह देदीप्यमान हो, सामने तेजोमय एक मेरे लिङ्गको निजतपःसाक्षिरूपमें भक्तिके साथ प्रतिष्ठितकर और शुष्कवृक्षोंकी तरह निश्चलदेहसे नासाग्रमें निश्चल दृष्टि स्थापन किये हुए कठोर तपस्या आचरण करते हैं। यह देख मैंने उनसे सम्बोधनकर कहा,—महाभाग! शमन! तुम्हारी तपस्यासे मुझे सन्तोष हुआ है; अब और तपस्या मत करो, अभिलषित वरकी प्रार्थना करो। धर्म्मराज मेरी बात सुनकर नयन खोल मुझे देखते ही भक्तिभावसे प्रणामकर आनन्दपूर्ण हृदयसे तपोविरत हो स्तव करने लगे, हे कारणचयके भी कारण! आपको नमस्कार है! हे कारणशून्य! आपको नमस्कार है। हे देव! आप कार्य्यमय होकर भी कार्य्यसे पृथग्भूत हैं; आपको नमस्कार है। हे अनिर्व्वचनीयस्वरूप! हे विश्वरूप! हे परमाणुस्वरूप! हे परापर! हे अपारपार! आपको नमस्कार है। हे परसागरपारकारिन्! हे अग्निभूषण! आपको नमस्कार है। हे देव! आप ही ईश्वर हैं, आपका कोई ईश्वर नहीं है; हे प्रभो! आप गुणमय

होकर भी गुणातीत हैं; आप स्वयं कालरूपी होकर भी कालके वशमें प्रकृतिरूपी हैं; हे अनिर्व्वचनीयमूर्त्ते! आपको नमस्कार है। हे अचिन्त्यमहिमन्! आप निर्व्वाणस्वरूपी होकर भी निर्व्वाणपद प्रदान करते हैं। आप ही आत्मा, आप ही परमात्मा, आप ही चराचरके अन्तरात्मा, हैं; आपको कोटि कोटि प्रणाम करता हूं। हे जगदम्बी! हे जगद्रूपिन्! आप द्वारा ही यह विश्व प्रकाशित आपके अधीन है. सुतरां आप इसके स्रष्टा, पाता और संहर्त्ता हैं—ब्रह्मा, विष्णु, और महेश्वर; आपको नमस्कार है। जो वेद-विधानसे कार्य्य करते हैं, आप उनके निकट सुखमय और जो वेदविरोधी कार्य्य आचरण करते हैं, वह आपको अति भयङ्कर देखते हैं; आपकी बातसे श्रद्धापर व्यक्तिका सदा ही मङ्गल होता है और आपकी बातके अविश्वासी लोग आपको अतिशय उग्ररूपी देखते हैं; हे रुद्र! आपको नमस्कार है। हे शङ्कर! आप द्वेषपरायण व्यक्तिके निकट शूलपाणि हैं; जो वाक्य और मनसे प्रणत होते हैं, वही आपके शिवरूपका दर्शन पाते हैं। आप आश्रितगणके श्रीकण्ठ हैं; हे नाथ! आप दुर्व्वृत्तोंके निकट विषोग्रकण्ठरूपसे अवस्थान करते हैं। हे शङ्कर! हे शान्त! हे शम्भो! हे चन्द्रशेखर! हे फणिभूषण! हे पिनाकपाणे! हे अन्धकारे! आपको वारंवार नमस्कार है। हे अनन्तमहिमन्! मैं दीनचेता हूं, आपका कुछ भी स्तव करना नहीं जानता। हे देव! आप वाक्यके अगोचर हैं; मेरा यह स्तव करना नहीं, केवल प्रणाम मात्र है। हे भगवन्! जो व्यक्ति आपकी भक्ति या पूजा करना जानते हैं, इस संसारमें वही धन्य हैं; हे देव! जो व्यक्ति आपका स्तव करते हैं, वह देवताओंसे भी पूजा पाते हैं।

कार्त्तिकेयने कहा,—सूर्य्यात्मज यमने इस तरह स्तवकर वारवार "शिवाय नमः" ऐसा वाक्य उच्चारण करते हुए वारवार मस्तक-लुण्ठित करते हुए महादेवको सहस्रवार प्रणाम किया। तब त्रिलोचनने तपःखिन्न धर्म्मराजको अति यत्नके साथ भूमिसे उठा ऐसा वर दिया, कि हे भास्करनन्दन! आजको अवधिसे अखिल-संसारके पापपुण्यके विचारका भार तुम्हारे अर्पित हुआ; तुम्हारा नाम "धर्म्मराज" हुआ। इस अवधिसे मेरे आदेशसे मेरे शासनस्थ लोगोंका शासन करो! हे धर्म्मराज! आजसे तुम दक्षिणके अधिपति हो समस्त जीवगणके शुभाशुभ कर्म्मके साक्षी होकर रहो। आजसे तुम जो सदसत् पथ दिखाओगे, उत्तमाधम व्यक्तिगण यथाक्रम उसी राहसे अपने अपने कर्म्मार्ज्जित लोकका अनुसरण करें। हे धर्म्म! इस काशीमें तुम्हारे द्वारा जो मेरे लिङ्ग आराधित हुए हैं, मनुष्यगण इन लिङ्गका दर्शन, स्पर्शन

या पूजाकर अचिरमें सिद्धिलाभ करेंगे। जो महामति इस धर्म्मतीर्थमें स्नानकर भक्तिके साथ एकबार भी तुम्हारे स्थापित इन लिङ्गका दर्शन करेंगे, वह चतुर्व्वर्ग सिद्धि पावेंगे। यहां महापातकी भी यदि एकबार दैवगतिसे इन धर्म्मेश्वर लिङ्गका दर्शन करें, तो वह कभी नरक यन्त्रणा न भोगेंगे और स्वर्गमें देवता भी उनके सौभाग्यका साधुवाद देंगे। जिनके भाग्यमें काशीमें धर्म्मपीठ पाकर भी अपनी मङ्गलचेष्टा करनेकी बुद्धि नहीं है, हे धर्म्म! वह किसी उपायसे भी तेज लाभकर चरितार्थ हो नहीं सकते। हे धर्म्मराज। आज तुम्हारा जैसा अभीष्ट सिद्ध हुआ, इन धर्म्मेश्वरके भक्तभावको वैसे ही सिद्धि मिलेगी। गुरुतर पापिष्ठ व्यक्ति द्वारा भी यदि धर्म्मेश्वर एकबार अर्च्चित हों, तो वह उसका सब भय दूर करेंगे। जो व्यक्ति धर्म्मेश्वरकी आराधना करेंगे, वह तुम्हारा बन्धुत्वपद पा सकते हैं। काशीमें पत्र, फल, और जलसे धर्म्मेश्वरकी पूजा करनेपर, मनुष्य स्वर्गमें देवगण द्वारा मन्दारमालासे पूजित होते हैं। जो पापकर्म्मा तुमसे भीत हों, धर्म्मेश्वरकी पूजाकर तुम्हारे साथ सख्यस्थापन करना उनका कर्त्तव्य है, उससे उनका वह भय दूर होगा। उत्तरवाहिणी गङ्गामें स्नानकर, धर्म्मेश्वरकी पूजाकर इस पीठमें जो कुछ दान किया जाय, वह युगान्तरमें भी अनन्तफल दान करता है। कार्त्तिकमासकी शुक्लाष्टमी तिथिको जो व्यक्ति धर्म्मेश्वरयात्रा, अहोरात्र उपवास और रात्रिजागरणाकर नानारूप उत्सव करेंगे, वह फिर कभी जठरयातना न भोगेंगे और जिनके द्वारा यमेश्वरके पास तुम्हारा रचित यह स्तव पठित होगा, वह पापमुक्त हो शिवलोकमें जा तुम्हरे बन्धु हो अभिमुखमें रहेंगे। हे सूर्य्यपुत्र धर्म्मराज! मैं तुम्हारे प्रति परम सन्तुष्ट हुआ हूं, तुम्हारे अदेय मेरा कुछ भी नहीं है; जो अभीष्ट हो उसकी प्रार्थना करो, उसे मैं तत्क्षणात् प्रदान करूंगा। कार्त्तिकेयने कहा,—यम, दयामय महादेवकी सौम्यमूर्त्ति और फिर अभीष्टदानमें औत्सुक्य देख आनन्दरसमें आप्लुत हो क्षणकाल किंकर्त्तव्य-विमूढ़वत् निस्तब्ध रहे।

अष्टसप्ततितम अध्याय समाप्त ॥ ७८ ॥

एकोनाशीतितम अध्याय।

धर्म्मेश्वरका उपाख्यान।

स्कन्दने कहा, सुधासागर शिवने धर्म्मराजको आनन्दवाष्पसलिलसे रुद्धकण्ठ देख अमृतनिस्यन्दी करयुगलसे उनका स्पर्श किया। महातपा धर्म्मराजकी तपोवह्नि प्रज्वलित देह उनके स्पर्श सुखसे रोमाञ्चित हुई। फिर सूर्य्यपुत्रने शान्त पारिषद्गणसे

वर्त्तमान हैं; परन्तु नर्म्मदेश्वर लिङ्गकी महिमा एक प्रकार अद्भुत है। देवाधिदेव यह बात कह उस लिङ्गमें लीन हुए। नर्म्मदा भी अद्भुत पवित्रता पाकर अत्यन्त हृष्टा हुईं। फिर दर्शनमात्रसे पापहारिणी हो वह स्वदेशमें प्रत्यागत हुईं। उन मुनिप्रवरगणने भी मार्कण्डेयकी बात सुनकर हृष्टचित्त हो अपना अपना हितानुष्ठान किया स्कन्दने कहा, मनुष्य भक्तियोगसे नर्म्मदेश्वरका माहात्म्य सुन पापकञ्चुकमुक्त हो उत्तम स्थान पाते हैं।

द्विनवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९२ ॥

त्रिनवतितम अध्याय।

सतीश्वर-प्रादुर्भाव।

अगस्त्यने कहा, हे स्कन्द! नर्म्मदेश्वर लिङ्गका कलुषहारी माहात्म्य मैंने सुना, अब सतीश्वर लिङ्गकी उत्पत्तिकथा कहिये। स्कन्दने कहा, हे मित्रावरुणनन्दन! काशीमें जैसे सतीश्वर लिङ्गका आविर्भाव हुआ वह कहता हूं, सुनो। हे मुने! अगले समयमें ब्रह्माने घोर तपस्या की थी, इससे ब्राह्मणप्रिय सर्व्वज्ञ नाथ देवदेव सन्तुष्ट हो उन्हें वर दान करनेपर उद्यत हुए और उन्होंने कहा, हे लोककर्त्तः! कहो, किस वरकी प्रार्थना करते हो? ब्रह्माने कहा, हे देवादिदेव! यदि मेरे प्रति प्रसन्न हों, वाञ्छित वर प्रदान करते हैं, तो यह वर प्रदान करिये, जिसमें आप मेरे पुत्र और देवी भगवती दक्षकी कन्या हों, सर्व्वज्ञाता महादेवने ब्रह्माकी ऐसी बात सुन देवी भगवतीके मुखकी ओर दृष्टिपात ईषत् हास्यकर चतुराननसे कहा, हे पितामह ब्रह्मन्! तुम्हारे अदेय क्या है? अतएव तुम्हारी प्रार्थना सिद्ध हो। ऐसा कहकर भगवान् शशिमौलि ब्रह्माके कपालदेशसे बालक हो आविर्भूत हुए। तब उस बालकने रोते रोते ब्रह्माके मुखकी ओर देखा। तब ब्रह्माने उस बालककी रोते देख कहा, "मुझे पिता पाकर क्यों मुहुःमुहुः रोदन करते हो?" तब बालक परमेष्ठीने ब्रह्माकी बात सुनकर कहा, हे सृष्टिकर्त्तः! मैं नाम लिये रो रहा हूं। हे पितामह! मुझे नाम प्रदान करो। अगस्त्यने कहा, हे षडानन! ईश्वर महादेव शिशुत्व पाकर क्यों रोये थे, यदि यह जानते हो, तो कहिये, मुझे सुननेके लिये अत्यन्त कौतूहल हो रहा है। स्कन्दने कहा, हे कुम्भोद्भव! मैं उन सर्व्वज्ञ देवदेवका पुत्र होनेके कारण कुछ कुछ जानता हूं, अतएव रोदनका कारण कहता हूं, सुनो। परमात्मा देवादिदेव मन ही मन विचार करने लगे, कि अहो! सत्यलोकपति, विधाता, परमेष्ठी चतुराननकी कैसी आश्चर्य बुद्धिवृत्ति है। यह सोचते सोचते महेश्वरका आनन्द उदय हुआ, अगस्त्यने कहा, हे सर्व्वधर्मे

आनन्दवर्द्धन प्राज्ञ षड़ानन! अब कहिये, कि विधाताका कैसा बुद्धिविभव महेश्वरने मन ही मन विचारा था, जिससे बाल्यावस्थामें भी आनन्दाश्रु निर्गत हुआ। अगस्त्यकी बात सुन तारकारि स्कन्दने कहा, हे अगस्त्य मुने! देवाधिदेवने मन ही मन यह विचारा था, कि "अपत्यके सिवा अनेकका उद्धार नहीं" ब्रह्माका यह प्रथम मनोरथ और द्वितीय मनोरथ यह, कि स्मरणकर्त्ताके भी भवदुःखमोचक इन महेश्वरके मेरा पुत्रभाव स्वीकार करनेपर प्रतिक्षणमें दर्शन अङ्गस्पर्श, एक शय्यापर शयन, एक आसनपर उपवेशन और एकत्र आहार करूंगा, जो वाक्य और मनके अतीत हैं, उन्हें पुत्र पानेपर मैं क्या नहीं पाऊंगा? जो जीव इनका सकृत् स्पर्श या एक बार आनन्दसे दर्शन करते हैं, वह फिर जन्म नहीं पाते, केवल आनन्द भोग करते हैं; वह यदि किसी तरह मेरे घरकी क्रीड़ापुत्तली हों, तो मैं निःसंशय परम सुखका भाजन हूंगा। सर्वज्ञ उन महेश्वरने विधिका ऐसा मनोरथ जान नयनमें आनन्दवाष्प धारण किया था। स्कन्ददेवकी ऐसी बात सुन अगस्त्य सातिशय आनन्दित हुए और उनके चरणद्वयको प्रणामकर उन्होंने कहा, जय, जय, सर्व्वज्ञनन्दनकी जय! तुम विधिका चित्त भी पहचान सके, महेश्वरका मनोभाव भी समझे,—तुमने यथार्थ ही मनको पहचाना, तुम चिरात्मा स्वरूप हो, तुम्हें नमस्कार है। भगवान् स्कन्दने श्रोताका आनन्द देख नितान्त तुष्ट हो कहा, "धन्य! धन्य! हे अगस्त्य! तुम्हीं यथार्थ सुनना जानते हो, तुम्हारे आगे कथा कहनेसे मेरा श्रम सार्थक हुआ। ऐसा कहकर षड़ाननने फिर कहा, तब शिशुरूपी देवदेवका ब्रह्माने रुद्र (रोदन हेतु) नाम रखा। देवी भगवती भी सती नामसे दक्षकी कन्या हुईं। उन सती देवीने वरप्रार्थिनी हो काशीमें कठोर तपस्याकर सामने लिङ्गरूपमें आविर्भूत भगवान् हरको देखा। उन लिङ्गरूपी हरने उनसे स्पष्ट स्वरमें कहा, हे महादेवी! और तपस्याका प्रयोजन नहीं है, मैं प्रसन्न हुआ हूं, तुम्हारे नामसे इन लिङ्गका नाम सतीश्वर होगा। अयि दक्ष सुते! जैसे तुम्हारा मनोरथ इनसे सिद्ध हुआ, वैसे ही इन लिङ्गको आराधना करनेसे दूसरोंका भी सिद्ध होगा। इन लिङ्गको अर्चनाकर कुमारी, मनकी अपेक्षा उन्नत पति और कुमारपुरुष, श्रेष्ठभार्य्या पावेंगे। इनके अर्चनाफलसे जो व्यक्ति जैसा अभिलाष करेंगे, इसमें सन्देह नहीं, कि उनका वही अभिलाष पूर्ण होगा। आजसे आठवें दिन तुम्हारे पिता दक्ष प्रजापति मेरे हाथ तुम्हें सम्प्रदान करेंगे; इससे तुम्हारा मनोरथ सफल होगा। यह कहकर देवादिदेव वहां ही अन्तर्हित हुए।

वह दक्षकन्या सतीदेवी भी आनन्दसे अपने भवन गईं। पिता दक्षने आठवें दिन वह कन्या भगवान् रुद्रको सम्प्रदान की। स्कन्दने कहा, हे मुने! इस तरह काशीमें सतीश्वर लिङ्ग प्रादुर्भूत हुए थे; स्मरण करनेसे भी यह लिङ्ग परम सत्त्वगुण प्रदान करते हैं। रत्नेश्वरके पूर्व्व अवस्थित सतीश्वर लिङ्गका दर्शनकर मनुष्य तत्क्षणात् पापमुक्त होते और क्रमसे ज्ञान पाते हैं।

त्रिनवतितम अध्याय समाप्त॥ ९३॥

चतुर्नवतितम अध्याय।

अमृतेश्वरादि लिङ्ग-प्रादुर्भाव।

स्कन्दने कहा, हे महामुने! जिनका नाम भी मुक्ति प्रदान करता है, उन अमृतेश्वरप्रमुख और लिङ्गकी बात भी कहता हूं। अगले समय काशीमें सनारु नामक एक गृहस्थ मुनि थे। वह नित्य ब्रह्मयज्ञरत, नित्य अतिथिपूजक और नित्य लिङ्गपूजामें तत्पर रहते थे। वह कभी तीर्थमें प्रतिग्रह नहीं करते थे। उन सनारुमुनिके उपजन्धनि नामक पुत्र थे। एक दिन सनारुनन्दन, वनमें प्रविष्ट हो सर्पं द्वारा दष्ट हुए। फिर उनके वयस्कगण उन उपजन्धनिको उनके आश्रम ले आये। सनारु विलापकर स्वर्गद्वारके समीप भूमिमें उन मृत उपजन्धनिको ले गये। वहां औफलाकृति एक लिङ्ग अति गुप्तभावसे थे; ऋषि उस शवको उनके ऊपर रख चिन्ता करने लगे, कि किस तरह सर्पदष्ट व्यक्तिका संस्कार करूं, उसी समय वह बालक, निद्रित व्यक्तिके निद्राभङ्गकी तरह जीवन पाकर उठा। यह देखकर ऋषि विचार करने लगे, कि इस मेरे आत्मज उपजन्धनिने देवके बाहर सर्पाघातसे मरकर कैसे पुनर्जीवन पाया? इसी समय एक पिपीलिका एक मृतपिपीलकको वहां लाई और वहांकी भूमिस्पर्श कराते ही वह पिपीलिक पुनर्ज्जीवित हो पिपीलकाके साथ चला गया। वह मुनि इससे ही अपने पुत्रके पुनर्ज्जीवन पानेका हेतु जानकर, हाथसे वहांकी भूमि खोदने लगे। कुछ क्षणके उपरान्त उन्होंने देखा, कि औफलाकृति एक लिङ्ग वहां प्रतिष्ठित हैं। तब वह उनकी पूजादि समाप्तकर उनका यथार्थ नाम "अमृतेश्वर" रख, उन्हें बारबार प्रणाम करते हुए पुत्रके साथ अपने गृह आये। मृत व्यक्तिको जीवित देखकर सभी आश्चर्य्यान्वित हुए। हे मुनिवर! वह अमृतेश्वर लिङ्ग काशीमें भक्तगणके सिद्धप्रद हो अवस्थित हैं; किन्तु कलिकालमें उन्हें कोई देख न सकेगा। मृत व्यक्ति इन लिङ्गका स्पर्श करनेसे, जीवन पाते हैं और जीवितगण स्पर्श कर अमृतत्व पाते हैं। त्रिभुवनमें कोई लिङ्ग अमृतेश्वरके सदृश न होनेके

कारण, भगवान् महादेव द्वारा परम यत्नसे कलिकालमें यह लिङ्ग गोपित है। काशीमें अमृतेश्वरका नाममात्र उच्चारण करनेसे किसी समय उपसर्गजन्य भय नहीं रहता। हे अगस्त्य! मोक्षद्वार-सन्निहित मोक्षद्वारेश्वर शिवके समीप करुणेश्वर नामक दूसरे एक प्रसिद्ध लिङ्ग हैं; उनका दर्शन करनेसे, किसीको भी आनन्दधामसे बाहर होना नहीं पड़ता। जो व्यक्ति मणिकर्णिकामें स्नानकर करुणेश्वरका दर्शन करते हैं, उनका क्षेत्रोपसर्गजन्य भय सहज ही दूर होता है। जो मनुष्य सोमवारको करुणापुष्प द्वारा करुणेश्वरकी अर्च्चनाकर एकभक्तव्रती होंगे, उनपर देव करुणेश्वर प्रसन्न हो कभी उन्हें क्षेत्रसे बाहर नहीं करते; सुतरां ऐसा करना सबका कर्त्तव्य है। करुणापुष्पकी तरह उसके पत्र और फल द्वारा भी उनकी पूजा की जा सकती है। करुणेश्वर लिङ्गका सन्धान जो व्यक्ति नहीं जानते, वह "हे देवदेव! आप सन्तुष्ट हों" कहकर करुणावृक्षकी पूजा करनेसे भी वही फल पावेंगे। जो ब्राह्मण सोमवारको पूर्व्वोक्त व्रताचारी होते, करुणेश्वर उनपर सन्तुष्ट हो उनका अभिलाष पूर्ण करते हैं। काशीमें सर्व्वतोभावसे करुणेश्वरका दर्शन करना चाहिये। यह मेरा कहा करुणेश्वरमाहात्म्य जो व्यक्ति सुनते हैं, उन्हें कभी काशीमें उपसर्गजन्य भय नहीं रहता। काशीमें स्वर्गद्वारेश्वर और मोक्षद्वारेश्वर इन दो लिङ्गके दर्शनसे मनुष्यको क्रमिक स्वर्ग-मोक्ष मिलता है। काशीमें विराजमान ज्योतिरूपेश्वर लिङ्गकी पूजा करनेसे पूजकोंको परम ज्योति मिलती है। यह ज्योतिरूपेश्वर चक्रपुष्करिणीके किनारे प्रतिष्ठित हैं, उनके दर्शनसे निश्चित ज्योतिरूप मिलता है। भागीरथी स्वर्गसे काशीमें आनेकी अवधिसे प्रतिदिन परमानन्दसे उन ज्योतिरूपेश्वरकी पूजा करती हैं। पहले नारायणके कठोर तपस्या करनेपर वह तेजोमय लिङ्ग आविर्भूत हुए थे; इसलिये यह क्षेत्र अति मङ्गलदायक है। चक्रपुष्करिणीस्थित वह महालिङ्ग दूरस्थ व्यक्ति द्वारा आराधित होकर भी उसी दण्ड सिद्धि प्रदान करते हैं। चतुर्द्दश लिङ्ग जैसे अति वीर्य्यशाली और कर्म्मसूत्रके छेदक हैं, इन आठको भी वैसा ही समझना। दक्षेश्वरादि अष्ट लिङ्ग, प्रणवेश्वर प्रभृति चतुर्द्दश लिङ्गके समान और शैलेश्वरादि चतुर्द्दश लिङ्ग भी इन्हींको तरह अति महत् हैं। छत्तीस तत्त्वस्वरूप और क्षेत्रसिद्धिसूचक इन छत्तीस लिङ्गमें सदाशिव सदा अवस्थित रह जीवगणको तारकज्ञान उपदेश करते हैं। हे मुने! इन छत्तीस लिङ्गकी सेवा करनेसे जीवका कभी दुःख नहीं होता, यही काशीके रहस्य हैं, यही इस क्षेत्रमें अपने प्रभावसे मोक्ष प्रदान करते हैं और इनकी अवस्थानके कारण ही काशीका मोक्षक्षेत्र

नाम हुआ है, युग युगमें यह और इनके सिवा अन्यान्य सब सिद्ध लिङ्ग प्रकाश हुए हैं। इस महादेवके अनादिधाम आनन्दधाममें जो वास करते हैं, उन्हें सर्व्वसिद्धि मिलती है। यह शिवका आनन्दकानन योगसिद्धि, तपःसिद्धि व्रतसिद्धि और मन्त्रसिद्धि, अणिमादि अष्टसिद्धिका उत्पत्तिस्थान है। इस मोक्षलक्ष्मीकी वासभूमि आनन्दवनमें पुण्यप्रभावसे एकबार उपस्थित हो, कारभीरुव्यक्तियोंको फिर परित्याग करना उचित नहीं। काशीलाभ ही महातपस्या और महत् पुण्य समझना। जहां हो, एक दिन जीवकी मृत्यु निश्चय है, फिर कर्म्मानुरूप सद्गति मिलती है; सुतरां मृत्यु और सद्गतिको अवश्यम्भावीरूप जानकर सर्व्वतोभावसे जीवको कर्म्मनाशिनी काशीकी सेवा करना उचित है। यह क्षणभङ्गुर मनुष्यजन्म पाकर जो काशीकी सेवा नहीं करते, उन मूढ़चेताओंको निश्चय दैव वञ्चना करते हैं। दुर्लभ मनुष्य जन्म पानेपर यदि दुर्लभ काशीधाम प्राप्त हो, तो इन दोके मिलनसे मुक्ति करगता ही रहती है। इस संसारमें ऐसा योग या तपस्या नहीं, जिसके प्रभावसे काशीकी सेवा न करनेपर भी उसका सेवाफलस्वरूप श्रेष्ठनिर्व्वाण मिले। मैं बारम्बार सत्य कहता हूं, कि इस भूमण्डलमें काशीतुल्य मुक्तिस्थान और कहीं नहीं है। यहां स्वयं महादेव और उत्तरवाहिनी भागीरथी अवस्थानकर जीवगणको मुक्तिप्रदान करती हैं, इसलिये यहां ही मुक्ति होती है और कहीं मुक्तिस्थान नहीं। एकमात्र विश्वेश्वर मुक्तिदाता हो जीवगणको काशीप्राप्त करा मुक्त करते हैं। मात्र इस काशीमें ही सायुज्यमुक्ति मिलती है, और स्थानमें तद्दितरसान्निध्यादि मुक्ति वह भी अति क्लेशसे मिलती ; कि यहां बिना आयासके सायुज्यमुक्ति मि ती है। कार्त्तिकेयने कहा, हे महात्मन्! अगस्त्य! भविष्यत्में महर्षि व्यास और उनके शिष्योंमें जो बातचीत होगी, वह कहता हूं, सुनो।

चतुर्नवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९४ ॥

पञ्चनवतितम अध्याय।

व्यासभुजस्तम्भ।

व्यासने कहा, हे मतिमन् सूत! सर्व्वज्ञ स्कन्दने अगस्त्यसे जो मेरा भविष्यद् विषय कहा था, वह सुनो। कार्त्तिकेयने कहा, हे महाभाग कुम्भयोने! मुनीन्द्र पराशरात्मज जिस तरह मोह प्राप्त होंगे, वह तुम मुझसे सुनो। उन बुद्धिमान् व्यासने, वेद चतुष्टयको नानाशाखामें विभागकर, सूत प्रभृतिको अष्टादश पुराणका उपदेश दे वेद, पुराण और स्मृतिका सार संग्रह कर सबका मनोहारी पापनाशक और सर्व्वशान्तिविधायक महाभारत नामक एक प्र-

न्यकी रचना की ; जो सुननेसे लोगोंकी ब्रह्महत्यादि पाप दूर करता है। एक दिन उन्होंने भूमण्डल पर्यटन करते करते नैमिषारण्यमें उपस्थित हो शौनकादि अष्टाशीति सहस्र तापसियोंको देखा। उस समय वह सब सर्व्वाङ्गमें भस्म लेपनकर कण्ठमें रुद्राक्षमाला धारणपूर्व्वक शिवनामसे कृतादर हो रुद्रसूक्त जप और शिवलिङ्गकी अर्चना करते थे और बार बार कह रहे थे, कि एकमात्र विश्वनाथ ही मुक्तिदाता हैं। महामुनि व्यासने उनको अकपट शिवभक्ति देखकर तर्ज्जनी उठाके उच्चस्वरसे कहा, समुदय शास्त्रके सारमर्म्म उद्घाटनसे जाना गया है, कि भगवान् हरिके सिवा कोई आराधनीय नहीं ; चतुर्व्वेद, महाभारत, रामायण और पुराण शास्त्र सबमें सब जगह हरिकी ही जाननेकी बातें दिखाई देती हैं। मैं शपथ करके कह सकता हूं, जैसे वेदपर शास्त्र नहीं है, उसी तरह हरिके सिवा देवता नहीं हैं। उन्हींके एकमात्र मुक्तिदाता और सर्व्वाभीष्टप्रद होनेके कारण उनका ही ध्यान करना कर्त्तव्य है। और कोई ध्येय नहीं है। सुखाभिलाषी व्यक्तिगणको सर्व्वतोभावसे एकमात्र भोगमोक्षप्रदायी भगवान् जनार्द्दनकी ही सेवा करना चाहिये ; जो मूढ़तावश केशवके सिवा और देवकी सेवा करते हैं, उन्हें संसारचक्रमें बारबार घूमना पड़ता है। एकमात्र हृषीकेशको ही जगदीश्वर समझो, उनका सेवक होनेपर त्रिभुवनसे सेवा मिलती है। एकमात्र विष्णु ही धर्म्मप्रदान करते हैं, एकमात्र हरि ही अर्थप्रदाता है, एकमात्र चक्री ही काम प्रदान करते हैं और भगवान् अच्युत ही मोक्षविधान करते हैं। उन हरिको परिहारकर और देवताओंकी उपासना करनेसे साधुके सामने वेदहीन विप्रकी तरह अवमानित होना पड़ता है ; इस तरह व्यासवाक्य समाप्त होनेपर तपस्विगण कम्पान्वित हृदयसे कहने लगी, हे मुनिवर! पाराशर! आप वेदविभागकर्त्ता हैं, अष्टादश पुराणतत्त्वज्ञ और जिनसे चतुर्व्वर्ग निश्चय होते हैं, उस महाभारतके भी रचयिता हैं ; सुतरां हम सबके आप पूजनीय हैं। हे सत्यवतीतनय! इस सभामें आपकी अपेक्षा किसीके तत्त्वज्ञ होनेपर आपके पूर्व्वोक्त वाक्यका किसीको विश्वास नहीं। यहां शपथकर जो कहा, यदि शिवक्षेत्र काशीमें जा इस तरह शपथकर कह सकें, तो हमलोग आपकी बातका विश्वास कर सकते हैं। जहां स्वयं भगवान् विश्वनाथ विराजित हैं, वहां युगधर्म्म प्रवेश कर नहीं सकते और वह पृथिवीके मध्यमें होनेपर भी मर्त्त्यलोकमें गण्य नहीं ; अब उस काशीक्षेत्रमें ही जाना चाहिये। महामुनि व्यास उन लोगोंकी बात सुन भीतरसे क्रुद्ध होकर दश सहस्र शिष्योंके साथ काशीमें उपस्थित हुए।

उन्होंने वहां आते ही पंचनदमें स्नान किया और बिन्दुमाधवकी अर्चनाकर फिर पादोदकतीर्थमें स्नानादि समाप्तकर भगवान् आदिकेशवकी पञ्चरात्रिविधानसे पूजा की। फिर शङ्खध्वनिनादसे प्रेमोन्मत्त वैष्णवोंसे अभिनन्दन पा हरिका स्तव करने लगे;—हे विष्णो! हे हृषीकेश! हे अच्युत! हे अनन्त! हे माधव! हे गोविन्द! हे वैकुण्ठ! हे मधुसूदन! हे केशव! हे त्रिविक्रम! हे उपेन्द्र! हे जनार्द्दन! हे श्रीवत्सलाञ्छन! हे श्रीकान्त! हे गदाधर! हे शार्ङ्गिन्! हे पीतवासः! हे दैत्य-दलन! हे कैटभमर्द्दन! हे जनार्द्दन! हे बलिध्वंसिन्! हे चतुर्भुज! हे केशिसूदन! हे कंसारे! हे नारायण! हे कृष्ण! हे शौरे! हे देवकीहृदयानन्दन! हे यशो-दानन्दवर्द्धन! हे पुण्डरीकाक्ष! हे दैत्यारे! हे बलप्रिय! हे इन्द्रस्तुत! हे दामोदर! हे वसुदायिन्! हे वासुदेव! हे विष्वक्-सेन! हे गरुड़ध्वज! हे वनमालिन्! हे गोप! हे पुरुषोत्तम! हे पद्मनाभ! हे अधोक्षज! हे सलिलशायिन्! हे भूमिधर! हे नृसिंह! हे यज्ञवराह! हे गुणा-तीत! हे गोपीवल्लभ! हे गोपालप्रिय! हे पर्व्वतधारिन्! हे सागरमथन! हे आद्यन्तरहित! हे नित्यानन्दमय! हे भुवनपालक! हे नीलकमलकान्ते! हे पूतनाधातुशोषण! आपके वक्षमें कौस्तुभ विराज रहा है, आपको बारबार विजय हो। हे जगद्रक्षामणे! हे नरकान्तक! मेरी रक्षा करिये, रक्षा करिये। हे सहस्र-शीर्ष पुरुष! हे इन्द्रसुखदायिन्! हे आद्यन्तरहित! आप सर्व्वत्र सर्व्वदा विरा-जते हैं, आपको बारबार नमस्कार करता हूं। पराशरतनय इस तरह विष्णुका स्तवकर परमानन्दसे हरिगुणकीर्त्तन करते हुए विश्वेश्वरके मन्दिरकी ओर चले। वह तुलसीमालाधारी वैष्णवगणके साथ ज्ञानवापी किनारे उपस्थित हो स्वयं ही वेणुवाद्यके अनुसार नृत्य करते हुए श्रुतिपर हुए। शिष्यगणसमवेत व्यासदेव नृत्य समाप्त और दक्षिण हाथ उठाकर बारबार उच्चैःस्वरसे कहने लगे, बारबार सब शा-स्त्रोंको उद्घाटनकर जाना गया है,—"एक मात्र हरिको ही सेवा कर्त्तव्य है।" इत्यादि स्वप्रतिज्ञात श्लोकावली पाठ कर रहे थे, हे अगस्त्य! इसी समय अलक्षितभावसे नन्दीने उनका हस्त और वाक्यस्तम्भन किया, तब विष्णुने अदृश्यभावसे आकर कहा, हे व्यास! तुम बड़े ही अपराधी हुए हो; तुम्हारे इस अपराधसे मुझे भी विशेष भय हुआ है। इस ब्रह्माण्डमें विश्वनाथ महादेवके सिवा और कुछ भी नहीं है। उन्होंने दयाकर मुझे चक्र-धर रमानाथ बना संसारपालनका भार प्र-दान किया है और उनका भक्तिमान् होनेके कारण ही मैंने परमैश्वर्य पाया है। अब यदि मेरा शुभ तुम्हारे द्वारा प्रार्थनीय

हो, तो उन्हीं शिवका स्तव करो, और कभी फिर ऐसा काम न करना। विष्णुकी बात सुनकर व्यासने इङ्गित कर बताया, कि नन्दीने मुझे देखते ही हस्तस्तम्भन किया है और इसके साथ ही साथ वाक्य भी स्तम्भित हुआ है। अब आपके मेरे कण्ठदेश स्पर्श करनेपर मैं वाक्शक्ति पा शिवका स्तव करूंगा। व्यासकी बातसे भगवान् केशवने बहुत छिपाकर उनका कण्ठ स्पर्श किया और उनके वहां अन्तर्हित होनेपर, व्यास उसी तरह हाथकी स्तम्भनावस्थामें ही विश्वेश्वरका स्तव करने लगे। व्यासने कहा, इस त्रिभुवनमें रुद्र ही सर्व्वमय ब्रह्म हैं, उनके सिवा और कुछ भी नही है; यदि है, तो मुझे वह आत्मपरिचय प्रदानकर स्वाधिष्ठित भूमि निर्द्देश करें। क्षीरोदधिने मन्दरमथित हो देवगणको जो कालकूट विष प्रदान किया था, जिसके प्रभावसे विष्णु कृष्णवर्ण हुए थे, महादेवके सिवा उस विषको जीर्ण करनेके लिये कोई अग्रसर नहीं हुआ। जिनके बाण श्रीपति, रथ पृथिवी, सारथी स्वयं ब्रह्मा, रथके अश्व चतुर्व्वेद और जिनके शरक्षेपसे त्रिपुरका यावतीय ग्राम एककालमें दग्ध हुए थे; कोई व्यक्ति उन महेश्वरके समान हो नहीं सकता। केवल पुष्पमय बाणके साहाय्यसे ही त्रिभुवनविजयी काम सब देवताओंके सामने जिनके दृष्टिपातसे भस्मसात हुए थे, उन महादेवके सिवा कोई भी स्तवका पात्र नहीं है। वेदचतुष्टय, ब्रह्मा, विष्णु, मन और वाग्देवी भी जिनकी महिमा नहीं जानतीं, मेरे जैसे मूढ़ व्यक्ति द्वारा वह अनन्तमहिमा विश्वनाथ कैसे ज्ञात हो सकते हैं? जो विश्वाधार होकर भी विश्वके भीतर ही सर्व्वदा विराज रहे हैं, जिनसे इस विश्वकी सृष्टि स्थिति प्रलय होता है, उन अनाद्यन्त महादेवको बार-बार प्रणाम करता हूं। जिनका नाम एकबार उच्चारण करनेसे अश्वमेधका फल मिलता है, जिनको प्रणाम करनेसे तुच्छ इन्द्रत्वसे भी श्रेष्ठपद मिलता है, जिनका स्तव करनेसे सत्यलोक मिलता और जो पूजित होनेपर मोक्ष प्रदान करते हैं, उन महादेवको प्रणाम किया। मैं शिवके सिवा दूसरे देवताको नहीं जानता और उनके सिवा किसी देवताका स्तव नहीं करता और मैं सत्य कह सकता हूं, कि शिवा उनके और किसीको नमस्कार नहीं करता। महामुनि व्यासके इस तरह महादेवका स्तव करनेपर, नन्दी शिवके आदेशसे उनका हस्तस्तम्भ-निवारण और "ब्राह्मणगणको नमस्कार किय।" कह ईषद्धास्यकर फिर कहने लगे। नन्दिकेश्वरने कहा, हे मुनिवर! इस तुम्हारे रचित परम पवित्र स्तवका जो व्यक्ति पाठ करेंगे, भगवान् महेश्वर उनके प्रति सन्तुष्ट होंगे। वह दुःखप्रशान्तिकारी और शिव शान्ति-

अविभायक व्यासाष्टकका, जो नित्य प्रातः-काल पाठ करेंगे, वह मातृहन्ता, पितृघाती गोघ्न, बालहन्ता, सुराप और स्वर्णापहारी होनेपर भी इन सब पापोंसे मुक्त हो सकेंगे। कार्त्तिकेयने कहा, हे मुने! महामुनि व्यास उसी अवधिसे परम शैव हो घण्टाकर्णह्रदके सामने व्यासेश्वर नामक शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा करते हुए सर्व्वाङ्ग भस्म-लेपन और कण्ठमें रुद्राक्षमाला धारणकर रुद्रसूक्त द्वारा उनकी पूजा करने लगे और वह उसी दिनसे मुक्तिक्षेत्र काशीको यथार्थ ज्ञान शैवसंन्यास अवलम्बनकर आजनक काशीमें ही अवस्थान करते हैं। जो व्यक्ति घण्टाकर्णह्रदमें स्नानकर व्यासेश्वरका दर्शन करते, वह अन्य स्थानमें मृत होनेपर भी काशीमृत्युका फल पाते हैं। काशीमें व्यासेश्वरकी पूजा करनेसे कभी ज्ञानभ्रष्ट या पापाक्रान्त होना नहीं पड़ता। व्यासेश्वरके भक्तगण कलिकालमें कभी शैवोपसर्गजन्य भय नहीं पावेंगे। काशीवासी व्यक्ति शैवपाप दूर करनेकी इच्छासे घण्टाकर्णह्रदमें स्नानकर यत्नके साथ व्यासेश्वरका दर्शन करते रहें।

पञ्चनवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९५ ॥

षसावतितम अध्याय।

व्यासशापविमोचण।

अगस्त्यने कहा, हे कार्त्तिकेय! यह कहिये, कि शिवभक्त शिवप्रभाववेदी महाज्ञानी मुनिवर व्यासने यदि शैवका रहस्य जानकर शैवसंन्यासका आश्रय किया था, तो किस कारण काशीक्षेत्रको अभिशप्त किया? स्कन्दने कहा, हे मुनिवर! तुमने उत्तम प्रश्न किया, इस समय मुझसे व्यासका भविष्यवृत्तान्त सुनो। महर्षि व्यास नन्दिकृत हस्तस्तम्भनावधिसे परमानन्दसे महेश्वरका स्तव करने लगे। वह काशीक्षेत्रके तीर्थबहुल और बहुलिङ्गमय होनेपर भी विश्वेश्वरकी सेवा और मणिकर्णिकामें स्नान अवश्य कर्त्तव्य है, कारण लिङ्गोंमें विश्वेश्वर और तीर्थोंमें मणिकर्णिका ही श्रेष्ठ है" यह बात कहते निरन्तर इन दोका सम्मान करते थे। वह प्रतिदिन स्नात हो मुक्तिमण्डपमें अवस्थानपूर्व्वक और वृथा वाक्यव्यय न कर शिवमहिमा कीर्त्तन करते और शिष्योंको शैवका माहात्म्य प्रकाशक उपदेश देते, कि इस क्षेत्रमें जो कुछ सहसत् कार्य्य अनुष्ठित होता, वह कल्पान्तकालमें भी अक्षय होता है; सुतरां यहां सभी पुण्य सञ्चय करो। वह और भी कहते, कि जो शैवसिद्धि लाभकी इच्छा करें, वह कभी मणिकर्णिका परित्याग न करें और प्रतिदिन चक्रपुष्करिणीमें स्नानकर पुष्प, फल, विल्वपत्र और जल द्वारा विश्वेश्वरकी अर्चना करें। ज्ञानी मनुष्य अपने वर्ण आश्रमकी धर्मरक्षाकर नित्य श्रद्धापूत हो शैवमाहात्म्य सुने और यथाशक्ति गुप्तदान करें। उसमें विघ्ना-

प्रशमनके लिये अन्नदान करना उचित है। इस स्थानमें नियत परोपकारी हों, पर्व्व-दिनमें विशिष्ट स्नानदानादिकर परमानन्दसे भगवानकी अर्च्चना करें और इस क्षेत्रमें तिथिविशेषोल्लिखित यात्रोत्सवादि सम्पादनकर क्षेत्रदेवताओंकी अर्च्चना करें। इस क्षेत्रमें परदार, परद्रव्य और परापकार परिहारकर किसीके मर्म्मपर आघात न करें। कभी परनिन्दा, परहिंसा न करें। प्राणान्तमें भी मिथ्यावाक्यका प्रयोग न करें। किन्तु सदसत् चाहे किसी कार्य्य द्वारा हो यहांके प्राणीकी प्राणरक्षा कर्त्तव्य होनेके कारण उसमें मिथ्यावाक्य दोषावह नहीं होता। कारण,काशीमें एकमात्र जीवकी प्राणरक्षा करनेसे निश्चय ही त्रिलोकरक्षाका फल मिलता है। जो क्षेत्रसंन्यासी हो काशीवासी हुए हैं, वह रुद्र और जीवनमुक्त कहकर निर्द्दिष्ट हैं। उनकी अर्च्चना करनेसे भगवान् महादेव प्रसन्न होते हैं। सुतरां परम यत्नके साथ उनकी पूजा और नमस्कारादिकर उन्हें सन्तुष्ट करें। साधु व्यक्तिगण महादेवके सन्तोषार्थ दूरस्थित होकर भी काशिवासियोंका योगक्षेम विधान करते रहें। काशीवासी व्यक्तियोंको अपना इन्द्रियदमन और मनका चाञ्चल्य निवारण करना सब तरहसे उचित है। पण्डित व्यक्ति कभी मृत्यु या मुक्तिका अभिलाष या देहशोषणका कोई उपाय विधान नहीं करते। यहां व्रतादि अनुष्ठानके लिये शरीरका स्वास्थ्य और परमसिद्धि लाभके लिये दीर्घायु होनेका अभिलाष करें। श्रेयोलाभार्थी हो यत्नके साथ आत्मरक्षाकर, महाकष्टमें पड़के भी आत्मत्यागका अभिलाष न करें। और जगह भारतवर्षमें भी जो सञ्चय नहीं होता, काशीक्षेत्रमें एक दिनमें ही वह फल मिलता है, और जगह आजीवन योगानुष्ठानसे जो अर्ज्जित होता, काशीमें एकबार मात्र प्राणायामसे वह फल मिलता है। इस आनन्दकाननमें मणिकर्णिकामें एकबार स्नान करनेसे जो पुण्य मिलता है, इसमें सन्देह है, कि आजीवन समस्त तीर्थपर्य्यटनसे भी वह फल मिलता है या नहीं। यावज्जीवन यावल्लिङ्गकी आराधनासे जिस पुण्यका मिलना सुकठिन है, एकबार विश्वेश्वरकी अर्च्चना करनेसे ही वह पुण्यसञ्चय होता है। सहस्र जन्मका पुण्य सञ्चय रहनेसे ही विश्वेश्वरका दर्शन मिलता है। यथाविधान कोटिसंख्यक धेनुप्रदानसे जो पुण्य मिलता है, वह पुण्य एकबार विश्वेश्वरका दर्शन करनेसे भी मिलता है। षोड़शविध महादानसे महर्षिगणद्वारा जो पुण्य कीर्त्तित है, मनुष्य वह फल विश्वेश्वरको पुष्प चढ़ानेसे ही पाते हैं। अश्वमेधादि यज्ञका जैसा फल है, विश्वेश्वरको पञ्चामृत पान करानेसे ही वह पुण्य मिलता है। सहस्र वाजपेय यागका जो फल कहा गया है, नैवेद्य

प्रदानसे विश्वेश्वरका सन्तोष करनेसे ही वह फल मिलता है। जो व्यक्ति विश्वेश्वरको ध्वज, छत्र और चामरादि द्वारा भूषित करते, वह पृथिवीके एकच्छत्र राजा होते हैं। विश्वेश्वरको उत्तम पूजाद्रव्य देनेसे संसारमें मनुष्यको उन्हें कभी किसी सम्पत्तिका अभाव नहीं रहता। जिनके द्वारा विश्वेश्वरको पूजाके लिये सब ऋतुमें पुष्पशाली उद्यान प्रदत्त होते हैं, उनके वंश सर्व्वदा कल्पवृक्षकी छायामें सुशीतल रहते और विश्वेश्वरके स्नानीय दुग्धके लिये जो धेनु प्रदत्त करते हैं, उनके पूर्व्वपुरुषगण क्षीरसागर किनारे वास करते हैं। विश्वेश्वरमन्दिरको जो व्यक्ति चूर्णलेपनसे संस्कृत और चित्रकार्य्यसे चित्रित करते हैं, उनके लिये कैलासधाममें विचित्रभवन निर्दिष्ट है। इस काशीमें भिक्षुब्राह्मण और नित्य एक एक शैवगणको भोजन करानेसे निःसन्देह कोटिगुण अधिक फल होता है। यहां तपोनुष्ठान, दान, स्नान, होम और जपादिद्वारा मनुष्य विश्वेश्वरका प्रीतिविधान करें। और जगह कोटि जप करनेसे जो पुण्य अर्जित होता है, यहां अष्टोत्तरशत जपसे उससे अधिक फल मिलता है। और जगह कोटि होम करनेसे जो पुण्य अर्ज्जित होता, इस काशीधाममें अष्टोत्तरशत होमसे ही वैसा पुण्य पाया जाता है। काशीमें विश्वेश्वरके पास रुद्रसूक्त जप करनेसे समग्र वेदपारायण पाठका पुण्य सञ्चय होता है। विश्वेश्वरके ध्यानसे जो पुण्य होता, वह मुझे भी अविदित है। काशीमें नित्यवासकर मनुष्य उत्तरवाहिणी गङ्गाकी सेवा करें। विषम विपदमें पड़के भी काशीधामको त्याग न करें, कारण, यहां विपन्नाशक विश्वेश्वर सदा विराजित हैं। काशीमें अनुष्ठित कर्म्म महा फलदायक होनेके कारण तुमलोग यहां स्नान, दान और जपादिका अनुष्ठानकर समय बिताओ। यहां पहले यत्नके साथ कृच्छ्र चान्द्रायणादि व्रतका अनुष्ठान करना, उससे किसी समय किसी तरहका इन्द्रियविकार नहीं होता। कारण काशीमें इन्द्रियविकार होनेसे काशीवासका फल नहीं मिलता। अगस्त्यने कहा, हे कार्त्तिकेय! व्यासदेवने जो सब इन्द्रियशुद्धिविधायक चान्द्रायणादिकी बातें कही थीं, मुझे उनके सुननेकी इच्छा है। स्कन्दने कहा, मनुष्य जिससे पवित्र होते हैं, उस कृच्छ्रचान्द्रायणादिका विषय कहता हूं, सुनो। एकाहार, नक्ताहार, अयाचिताहार और एक उपवास, इन चारोंमें एकपाद कृच्छ्र कहा गया है। वट, उदुम्बर, पद्म, विल्वपत्र और कुशोदक यथाक्रम इन प्रत्येकको प्रतिदिन सेवा करनेसे पूर्णकृच्छ्र व्रत होता है। पिण्याक, घृत, तक्र, अम्बु और सक्तु; यह एक एक दिन भोजनकर प्रत्येकको दूसरे दिन उपवास करनेसे, सौम्यकृच्छ्र कहा जाता है। तीन

दिन प्रातःकाल और तीन दिन सायं-काल हविष्यभोजन मात्र, तीन दिन अया-चितभोजन, तीन दिन उपवास, तीन दिन एकैकग्रास भोजन और शेष तीन दिन उपवास करनेसे यति कृच्छ्रव्रत अनुष्ठित होता है। एकविंशति दिवस केवल दुग्ध पानकर प्राणधारण करनेसे कृच्छ्राति-कृच्छ्रव्रत होता है। द्वादशाह उपवाससे पराकव्रत निर्दिष्ट है। तीन दिन प्रातमें तीन दिन सायंकालमें और तीन अयाचितभोजनकर दूसरे तीन दिन उपवास करनेसे प्राजापत्यव्रतका अनुष्ठान होता है। गोमूत्र, गोमय, दुग्ध, दधि, घृत और कुशोदक, नित्य यथाक्रमसे पानकर एकाह उपवास करनेसे कृच्छ्रसान्तपनव्रत होता है। सान्तपन द्रव्यके बिना सेवन किये बिना उपवास करनेसे महासान्तपन व्रत होता है। ब्राह्मण तप्तकृच्छ्रानुष्ठानके समय नित्य एकबार स्नान करें। तीन दिन उष्णजल, क्षीर, घृत और वायुपान, तीन दिन शुद्ध उष्णजल, तीन दिन उष्ण-दुग्ध, तीन दिन उष्णघृत और शेष तीन दिन केवल वायुभक्षण करके रहें! तप्त-कृच्छ्रमें दुग्धका और जलका परिमाण एकपल और घृतका परिमाण दोपल मात्र है। एकाह्निककृच्छ्रमें घृताक्त यावक-पान विहित है। दिनमें दोनो हाथ उठा वायुभक्षणकर रात जलमें अव-स्थानकर बितानेसे प्राजापत्यके समान व्रत अनुष्ठित होता है! त्रिसन्ध्या स्नानकर कृष्णपक्षमें एकैक ग्रास ह्रास और शुक्लपक्षमें एकैक ग्रास वृद्धि करते हुए भोजन करनेसे चान्द्रायणव्रत अनुष्ठित होता है। समाहित ब्राह्मण यदि प्रातः-काल चार ग्रास और सायंकालको ग्रास-चतुष्टय भोजन करें, तो उनका शिशुचान्द्रा-यण-व्रतका आचरण होता है। संयत व्य-क्तिके दिनके मध्यभागमें अष्ट संख्यक ग्रास भोजनको यति-चान्द्रायण कहते हैं। इस तरह एक मासतक एक सौ चौबीस ग्रास भोजनकर व्रतानुष्ठान करनेसे मनुष्य निश्चय चन्द्रलोकमें जाते हैं। देहशुद्धि जलसे, मनःशुद्धि सत्यसे, आत्मशुद्धि विद्या और तपस्याके अनुष्ठानसे और ज्ञानार्ज्जनसे ही बुद्धिकी शुद्धि होती है। जीवगण काशीसेवी होनेपर वह ज्ञान पा सकते हैं। काशीसेवासे महादेवकी करुणा होती है और शिवका कृपाभाजन होनेपर, कर्म्म-सूत्र छेदन कर महोदय लाभ किया जा सकता है। इन सब कारणोंसे ही काशीक्षेत्रमें नित्य विशेष यत्नसे भी स्नान, दान, तपस्या, जप, व्रत, पुराणश्रवण, धर्म्म-शास्त्रविहिताचरण, प्रति मुहूर्त्तमें शिव-चरणानुध्यान, त्रिसन्ध्यामें शिवलिङ्गकी अ-र्चना, उनका लिङ्ग स्थापन, साधुसम्भाषण, बारबार शिव शिव उच्चारण, अतिथिसेवा, तीर्थाश्रयीगणोंके साथ भलाई, आस्तिक्य-बुद्धि, नम्रता, मानापमानमें अभेदबुद्धि,

कामनाशून्यत्व, अनुद्धतभाव, रागहीनता, अप्रतिग्रह, दम्भशून्यता, दयार्द्रबुद्धि और मात्सर्य्य, लोभ, आलस्य, पक्षपात और हीनतादि परिहारकर सत्पथके पथिक हो। व्यासमुनि प्रतिदिन शिष्योंको ऐसा उपदेशकर स्वयं त्रिकालज्ञान और भिक्षाको ही उपजीविकाकर शिवलिङ्गकी अर्चनामें आसक्त रह काशीमें रहने लगे। एक दिन महादेवने व्यासकी परीक्षा करनेकी इच्छासे भगवतीसे कहा, हे प्रिये! आज उन धार्म्मिकवर व्यासको भिक्षाके लिये सर्व्वत्र पर्य्यटन करनेपर भी तुम इन्हें भिक्षासे वञ्चित करना। भवानी शिव-वाक्य ग्रहणकर प्रत्येक गृहस्थोंके भवनमें जा व्यासको भिक्षा देनेके लिये वारण कर आईं। इधर व्यासके सिवा सब भिक्षा-जीवीगण भिक्षा पाने लगे, केवल अधिष्ठ महर्षि व्यास समस्त दिन पर्य्यटन करके भी कुछ न पा सायंकालको अतिकातरभावसे अपने स्थानमें आ शिष्योंके साथ उस रात उपवासकर रहे। दूसरे दिन माध्याह्निक अनुष्ठान सम्पन्नकर सब शिष्योंके साथ बहिर्गत हो, अभागी पुरुषके धनलाभसे वञ्चित होनेकी तरह, वह अशेष सब गृहस्थोंके घर गये, किन्तु कहीं उन्हें भिक्षा न मिली। यह देखकर परिश्रान्त व्यासको चिन्ता हुई, "किस कारण भिक्षा नहीं मिलती, क्या किसीने निषेध कर दिया है?" उन्होंने इस तरह चिन्ताकुल मानसके शिष्योंको सम्बोधनकर कहा, तुम लोग भी मेरे शिष्य होनेके कारण भिक्षा नहीं पाते, इस समय मैं आदेश करता हूं, तुम लोगोंमें दोनों न व्यक्ति जाकर इसका याथार्थ जान आवें। दूसरे दिन भी जब देखता हूं, कि असीम प्रयास पाकर भी कणामात्र भिक्षा नहीं मिली; तब जान पड़ता है, कि कोई गुरुतर अशुभ सञ्चय हुआ है। इस विशाल काशीपुरीका एकवारगी ही अन्नशून्या होना सम्भव नहीं, तब क्या समस्त पुरवासिगण राजदण्डसे दण्डित हुए हैं। या हमलोगोंके किसी ईर्षापरायण व्यक्तिने हम सबको भिक्षा देनेके लिये मना किया है, अथवा सब पौरजन ही इस समय विपन्न हुए हैं। तुम लोग शीघ्र इसका अनुसन्धान करो। गुरुका ऐसा आदेश पा शिष्यमण्डलीसे दो तीन मनुष्य पौरजनका सम्पत्फल प्रत्यक्ष करते हुए व्यासके पास उपस्थित हो कहने लगे। शिष्यगणने कहा, हे गुरो! अवहित होइये। यह नगरी किसी तरहके उपसर्ग या अन्नक्षयकी दुर्गतिसे पीड़िता नहीं है। विशेषतः जहां स्वयं भगवान् विश्वेश्वर और भागीरथी साक्षात् विराज रही हैं, वहां ऐसी आशङ्काका कोई कारण नहीं। इस काशीके गृहिगण जैसे सम्पत्तिशाली हैं, अलकादिनगरीको बातका प्रयोजन ही क्या है, हम लोग समझते हैं, कि गोलोकधाममें भी ऐसा धन नहीं है। वे

महामुने! जान पड़ता है, रत्नाकर समुद्रने जिन सब रत्नोंको आंखोंसे भी नहीं देखा, वह रत्न शिवनिर्म्माल्यभोजियोंके भवनमें है; यहां प्रति गृहमें जितना परिमाण राशीकृत धान्य है, स्वर्गीय कल्पवृक्षको भी उतना प्रदान करनेकी क्षमता नहीं है। यहां स्वयं देवी विशालाक्षीके सब फल देनेके कारण यहांके व्यक्ति मात्र ही धनवान् हैं। इस मोक्षलक्ष्मीके विलसस्थान काशीमें जब मोक्षपद भी अति सुलभ है, तो दूसरे धनादिकी क्या बात कहूं? वामार्द्ध भगवतीदेह होता है। हे देव! यह काशीक्षेत्र ही धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष पानेका एकमात्र स्थान है, यहां कलि या काल प्रवेश करनेमें समर्थ नहीं होता, इसलिये काशीवासी कभी गर्भ-यन्त्रणा नहीं भोगते। यहां भगवान् विश्वपति भक्तगणकी पीड़ा दूर करनेके लिये सदा व्यस्त रहते हैं इस काशीमें नाद विन्दु और कलात्मक ध्वनि साक्षात् विश्वेश्वरके विराजित रहनेके कारण उनके साथ मन्त्र, प्रणव और वेदचतुष्टय शरीरी हो निश्चय विराज रहे हैं। यहां साक्षात् वाग्देवी सरस्वतीके नदीरूपसे प्रवाहिता होनेके कारण इस काशीधाममें किसी धर्म्मशास्त्रका अभाव नहीं है। स्वर्गवासी देवगण स्वर्गवास परित्याग करके भी यहां रहते हैं। काशीमें पतिपरायणा नारीगण पार्व्वती समाना हो विश्वेश्वरको प्रीति-कामनासे सब सत्कार्य्य करती हैं। यहांके पुरुषमात्र गणाधिप और कार्त्तिकतुल्य हैं, सभी तारकदृष्टि हैं। यहां जो भालदेश त्रिपुण्ड्रसे अङ्कित करते हैं, उन्हें ही साक्षात् चन्द्रमौलि शिव कहते हैं। जो विविध उपसर्ग जनित पीड़ा सहकर इस क्षेत्रको परित्याग नहीं करते, उन्हें सर्व्वज्ञता होती है। यहांके ब्राह्मणगण वेदज्ञ और गङ्गासलिलपूतात्मा हो शिवसारूप्य लाभ करते हैं। क्षेत्र संन्यासकारीगण सहज ही मोक्षपद पाते हैं। इस काशीपुरीमें अवस्थान करनेसे सभी हृषीकेश पुरुषोत्तम और अच्युतस्वरूप होते हैं। यहांकी स्त्री और पुरुषमात्र त्रिनयन और चतुर्भुजस्वरूप हैं। यहांके सभी श्रीकण्ठ, मृत्युञ्जय और सबकी देह मोक्षलक्ष्मी द्वारा आक्रान्त रहनेसे सब गृहमें नागगण प्रतिरात्रि अपनी अपनी फणामणिकी किरण द्वारा विश्वेश्वरकी आरति करनेके लिये पातालसे उपस्थित होते हैं। सप्तसमुद्र नित्य कामधेनुके साथ पञ्चपीयूषधारा द्वारा भगवान्‌को स्नान कराने आते हैं। मन्दार, पारिजात, सन्तान, हरिचन्दन और कल्पवृक्ष, यह पञ्चवृक्ष, अन्यान्य वृक्षोंको साथ ले और देवगण, योगिगण, महर्षिगण सभी काशीनाथकी सेवाके लिये उपस्थित होते हैं। काशीक्षेत्र विद्याकी जन्मभूमि, लक्ष्मीका चिरन्तन आवासस्थान और

त्रिगुणात्मिका काशी ही मुक्तिक्षेत्र है। महामुनि व्यासने शिष्यगणकी ऐसी बात सुन फिरसे इस शेष श्लोकके पढ़नेका आदेश किया। शिष्यगणने कहा, काशी-क्षेत्र विद्याकी जन्मभूमि, लक्ष्मीका चिरन्तन आवासस्थान और त्रिगुणात्मिका काशी ही मुक्तिक्षेत्र है! कार्त्तिकेयने कहा, हे अगस्त्य! व्यासमुनिको उस समय क्षुधा और तृष्णा पीड़ा दे रही थी, सुतरां उन्होंने शिष्योंकी ऐसी बात सुनकर क्रोधसे काशीको अभिशप्त किया। व्यासने कहा, जिस हेतु इस काशीमें विद्वान् व्यक्तिगण विद्यागर्व्व, धनिगण धनगर्व्व और कृतिगण मुक्तिगर्व्वकर भिक्षुकको भिक्षा देनेमें अव-हेला करते हैं, उस पापसे यहांकी विद्या, धन और मुक्ति पुरुषत्रय पर्य्यन्त चलेगी। वह ऐसा शाप दे क्षुधाकी ज्वालासे फिर भिक्षार्थ निकले और समस्त नगरी पर्य्यटन करनेपर भी कुछ न पा सायंकालको नितान्त क्षुण्णमानससे प्रत्यागमनकालमें अस्ताभिमुखी दिवाकरका दर्शन करते हुए भिक्षाभाण्ड दूर फेंक आश्रमकी ओर चले। पथमें भगवतीने संन्यासगृहिणी मानवी हो एक गृहद्वारदेशमें खड़ी हो व्यासको अपने आलयमें अतिथि होनेके लिये प्रार्थना की और कहा, हे प्रभो! आज बहुत ढूंढ़नेपर भी भिक्षुक नहीं मिले। अति-थिको बिना भोजन कराये मेरे स्वामी आहार नहीं करते; वह कबसे वैश्वदेवादि कार्य्य समापकर अतिथिके आनेकी प्रतीक्षा करते हैं; सुतरां आज आपको अतिथि होना पड़ेगा। अतिथिको बिना भोजन कराये जो भोजन करते हैं, वह व्यक्ति अपने पूर्व्वपुरुषोंके साथ उदरमें पापराशि भरते हैं। अब आप दयाकर मेरे घर उपस्थित हो मेरे पतिदेवका गार्हस्थ्य धर्म्म सफलकर कृतार्थ करिये। व्यासने कहा, हे सुशीले! तुम कौन हो, कहां रहती हो? इसके पहले मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा। निश्चय तुम कोई शरीरिणी पवित्रा देवी हो; नहीं तो तुम्हें देख मेरी इन्द्रियगण किस कारण ऐसी परितृप्त होती हैं? हे सर्व्वाङ्गसुन्दरि! तुम क्या सुधा हो; मन्दराघातसे भय पाकर यहां गुप्तभावसे रही हो? निश्चय तुम चन्द्रकी कला हो; कुहू या राहुके भयसे इस काशीधाममें सीमन्तिनीरूप धारणकर अवस्थान करती हो। अथवा तुम लक्ष्मी हो; अपने आलय कमलनिकरके सङ्कुचित होनेके कारण सर्व्वदा प्रकाशमान काशीमें आकर रही हो। क्या तुम काशीकी अधिष्ठात्री देवी हो? या साक्षात् मोक्ष-लक्ष्मी हो, जो चरम समयमें ब्राह्मण और चाण्डालपर समान दृष्टि रखनेके कारण नित्य सेविता होती हैं? या तुम मेरी अदृष्टदेवी हो नारी स्वरूपा हुई हो? अथवा वह भक्तिवत्सला भवानी तुम्हीं हो? तुम दानवी, नागी, किन्नरी, विद्याधरी,

गन्धर्व्वी, यक्षिणी, या नारी चाहे जो हो मुझे जान पड़ता है, कि तुम मेरी अदृष्ट देवी हो मोह दूर करनेकी इच्छासे आई हो, अथवा यह सब चिन्तायें मेरे पक्षमें नितान्त निष्प्रयोजन हैं। अब तुम्हें देखनेकी अवधिसे क्षिधोने मेरी स्वाधीनता हरण की है; तुम्हारा आदेश पाते ही उसी मुहूर्त्तमें उसका पालन करूंगा। तपस्या व्यय करनेसे जो न होगा, उसके सिवा अपने साध्य सब कार्य्य ही तुम्हारी अनुमति पानेपर कर सकता हूं। हे सुन्दरि! ऐसी स्त्रीगण महत्की मङ्गल-हानिकर कार्य्यमें नियोग नहीं करतीं। हे सुन्दरि! सत्य वचन कहो, तुम कौन हो? इस देहमें मिथ्या बोलनेकी ऐसी सम्भावना नहीं। हे कुम्भयोने। तब त्रिभुवनजननीने व्यासका प्रश्न सुनकर कहा, हे मुनिवर! मैं यहांके गृहपतिकी सहधर्म्मिणी हूं। आप मुझे नहीं जानते, किन्तु मैं आपको शिष्यगणके साथ पर्य्यटन करते देखती हूं। हे तापस! अधिक वाक्यप्रयोग निष्प्रयोजन है। सूर्य्यास्तगमनके पहले ही मेरे स्वामीके प्रतिथि हो उन्हें कृतार्थ कीजिये। महर्षि व्यास देवीकी यह बात सुनकर नम्रताके साथ कहने लगे। व्यासने कहा, हे सुभगे! मेरा एक नियम है, जहां उसका प्रतिपालन होता है, वहीं भिक्षा करता हूं। तपस्वीकी ऐसी बात सुन भगवतीने कहा, हे तपोधन! आपका कैसा नियम है, उसके व्यक्त करनेपर मैं समझती हूं पतिदेवकी अनुकम्पासे उसमें त्रुटि होना सम्भव नहीं। तब सत्यवती-तनयने आनन्दके साथ उनसे कहा, मैं जहां भोजन करूंगा, वहां मेरे दस सहस्र शिष्यगण भी भिक्षाकार्य्य समाधा करेंगे और सूर्य्यके अस्त होनेपर मैं भोजन नहीं करता। व्यासके ऐसा कहनेपर भवानी-का वदन प्रफुल्ल हुआ और उन्होंने "विल-म्बका प्रयोजन नहीं है" कह सब शिष्योंके साथ शीघ्र उन्हें आने कहा। तब फिर महर्षिने कहा, हे पतिपरायणे! तुम्हारी ऐसी क्या देवसिद्धि है, जिसके प्रभावसे शिष्योंके साथ मुझे भोजन कराओगी? यह सुन भगवतीने मृदु मृदु हास्यकर कहा, हे प्रभो! मेरे यहां चाहे कितने ही अतिथि आवें, मैं सबकी तृप्ति कर सकती हूं; मेरे पतिके प्रभावसे मेरे आलयमें सदा इतना द्रव्यभण्डार रहता है। हे मुने। मैं प्राकृत गृहिणीकी तरह अतिथि आनेपर तब उद्योग नहीं करती; मेरे पतिके पादपद्मके प्रसादसे भवनमें सब ओर सब गृह सर्व्वदा अतिथिके अभिलाषानुरूप द्रव्यभण्डारसे परिपूर्ण रहते हैं। आप आश्रममें जा शिष्यगणको साथ लेकर आ-इये। मेरे अतिथिप्रिय वृद्ध पति अधिक विलम्ब सह न सकेंगे; सूर्य्यास्तगमनके पहले ही आप शीघ्र आ आतिथ्यसम्पत्

पूर्ण करिये। तब व्यास क्षिप्रगतिसे चारो ओरसे शिष्यगणको बुला उनके साथ आ अतिथिपथावलोकिनी उन देवीसे "हे मातः! हम सब समागत हुए हैं, देखता हूं अब सूर्य्यदेवके अस्तगत होनेमें विलम्ब नहीं है, आप शीघ्र हमलोगोंको भोजन करा परितृप्त करिये" कहकर उस मन्दिरके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रवेश करते ही वहांके मणिसमूहकी किरणराशि उनके देहपर पतित हो सूर्य्यकिरणकी तरह शोभा देने लगी। फिर सबलोग अट्टालिकाके भीतर गये। उन लोगोंके वहां जाते ही किसीने आकर पादप्रक्षालन, किसीने पूजा किसीने अन्नादि परिवेशनकर सबको भोजन कराया। उन व्यासप्रमुख तापसोंने पहले उन सब अन्न-व्यञ्जनादिके गन्धसे आमोदित हो उसके उपरान्त देख और भोजनकर अभूतपूर्व्व सन्तोष पाया। भोजनके अन्तमें आचमनकर चन्दन, माला और नूतन वसनसे विभूषित हो सायंकृत्य समाप्तकर गृहस्वामीके सामने बैठे और उनका बहुतर आशीर्व्वादसे अभिनन्दनकर आश्रम जानेका उद्योग करने लगे। तब उन देवी गृहिणीने प्राचीन गृहस्वामीका इङ्गित समझकर व्यासदेवसे प्रश्न किया, हे तपोधन! मुझसे तीर्थवासियोंका धर्म्म कहिये; मैं उसी तरह काशीमें अवस्थान करूंगी। धार्म्मिकवर पराशरसुतने गृहिणीका प्रश्न सुन, उनके द्वारा औरोंका सुदुर्लभ आतिथ्यसत्कारसे परम परितृप्त हो मृदुहास्यकर उन गृहिणीरूपिणी भवानीसे कहा, हे पूतान्तःकरणे! मातः! आपका ज्ञात कार्य्य ही धर्म्म है, आप पति-सेवा प्रभावसे किसी धर्म्मसे अज्ञात नहीं हैं, तथापि आपने जब पूछा, तो मैं भी कुछ कहूंगा; कारण, किसीके कुछ पूछने-पर, यदि वह व्यक्ति स्वल्पज्ञ भी हो, तथापि उसे कुछ कहना उचित है। हे सुभगे! आपका वृद्ध पतिका सन्तोष उत्पादनके सिवा और कोई धर्म्म नहीं है। गृहिणीने कहा, सत्य यही मेरा धर्म्म है और साध्यानुसार मैं इसका प्रतिपालन भी करती हूं; मैं आपसे साधारण धर्म्मकी बात पूछती हूं; आप कहिये। व्यासने कहा, जिससे लोगोंको कष्ट न हो, ऐसा वाक्यप्रयोग, पराईकी उन्नतिमें अनसूया, सदा विचारपूर्व्वक कार्य्य करना और अपने भवनकी मङ्गलचिन्ता, यही साधारण धर्म्म है! गृहिणीने कहा, यह कहिये, कि इन सब धर्म्मोंमें आपका कोई धर्म्म है। यह बात सुन व्यास कुछ उत्तर न दे स्तब्ध हो रहे। तब गृहस्थ उनसे कहने लगे, कि तुम्हारे मतसे धर्म्म यदि ऐसा ही हो, तो तुम्हीं धार्म्मिक हो, कारण, तुम दमनमें और अभिसम्पात प्रदानमें अत्यन्त सक्षम हो; सुतरां तुममें धैर्य्यकी पराकाष्ठा दिखाई देती है। तुम्हारा काम, क्रोध दमन करना सम्भव है,

परायेको कष्ट न हो ऐसा वाक्य प्रयोग करना तुम्हीं उत्तमरूपसे जानते हो और परोन्नतिमें असहिष्णुता तुममें ही दिखाई देती है। तुम्हीं उत्तमरूपसे विचारकर कार्य्य करते हो और निरन्तर ग्रहकी उन्नतिचिन्ता करते रहते हो। हे विद्वन्! जो व्यक्ति दुरदृष्टवश अपना प्रयोजन सिद्ध न कर सकनेपर अभिसम्पात प्रदान करते हैं, उसका पाप किसे होता है? मुझे इसका उत्तर दो। व्यासने कहा जो व्यक्ति दुरदृष्टवश अपना प्रयोजन सिद्ध न करसकनेपर क्रोधसे शाप प्रदान करते हैं, वह शाप उन विवेचनाशून्य शापदाताको ही होता है। ग्रहस्थने कहा, हे द्विजवर! तुम शाप अभागी होनेके कारण कहीं भिक्षा नहीं पाते, किन्तु निर्दोषी क्षेत्रवासियोंने तुम्हारा क्या अपराध किया था? हे तपोधन! मेरी इस नगरीका सम्मत् जिसको आंखका शूल होता है, उन्हींपर अभिशाप आक्रमण कर सकता है। हे कोपनस्वभाव! तुम इस शापशून्य क्षेत्रमें रहनेके अनुपयुक्त होनेके कारण मेरे वाक्यसे तुम शीघ्र यहांसे अपसृत हो। तुम इस मोक्षक्षेत्र काशीधाममें वास करनेके अयोग्य पात्र हो। काशीमें काशीवासियोंपर अत्याचारी व्यक्ति निजकृतकर्म्मके फलसे रुद्रपिशाच होते हैं। व्यासने यह सब बातें सुन शुष्कतालुकण्ठ और कम्पान्वित कलेवर हो भवानीके पदतलमें पड़ रोते रोते कहा, मातः रक्षा करिये! इस अनाथकी रक्षा करिये। हे मातः! आपका निज सन्तान अति मूर्ख है, आज शरणागत होता हूं, मेरी रक्षा करिये। मेरा चित्त पापराशिसे परिपूर्ण है। यह सत्य है, कि शिवशाप अन्यथा करनेकी किसीकी क्षमता नहीं है, किन्तु मातः! आप शरणागतके प्रति करुणाकर कोई उपाय करिये, जिससे इस दासका प्रति अष्टमी और चतुर्द्दशीतिथिको आनन्दधाममें प्रवेश करनेकी अनुमति हो; यह मैं जानता हूं कि तुम्हारा वाक्य महादेवके अलङ्घनीय है। दयामयी पार्व्वतीने व्यासकी बात सुन विश्वेश्वरके मुखकी ओर दृष्टिपात किया और उनका अभिप्राय जानकर "ऐसा ही होगा" कहकर क्षेत्रमङ्गलालय शिव और दुर्गाका वहीं अन्तर्धान हुआ। व्यास भी अपना अपराध कहते कहते क्षेत्रके बाहर जा उस अवधिसे रातदिन क्षेत्रपर दृष्टिनिक्षेप करते हुए अष्टमी, चतुर्द्दशीके दिन क्षेत्रमें प्रवेश करते रहे। भागीरथीके पूर्व्वपार लोलार्कके अग्निकोणमें अवस्थानकर पराशरसूत आजतक काशीशोभा अवलोकन करते हैं। कार्त्तिकेयने कहा, हे घटोद्भव! सुने! महर्षि व्यास इस तरह क्षेत्रको अभिशापकर उस कारण स्वयं ही क्षेत्रसे वहिष्कृत हुए थे। इन सब कारणोंसे जिन व्यक्तियोंके मुखसे काशीक्षेत्रका प्रशंसावाद उच्चारित

होगा वह शुभ लाभ कर सकेंगी, इसके विपरीतसे विपरीत घटना होती है। जिनके कर्णकुहरमें व्यासशापविमोक्षण नामक विशुद्ध अध्याय प्रवेश करता है, उन्हें कभी उपसर्गजन्य भय पाना नहीं पड़ता।

षण्णवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९६ ॥

सप्तनवतितम अध्याय।

क्षेत्रतीर्थ-वर्णन।

अगस्त्यने कहा, हे शिवनन्दन! व्यासदेवका ऐसा भविष्यत् वाक्य सुनकर मैं आश्चर्यान्वित हुआ। हे षड़ानन! अब आनन्दकाननमें जहां जहां लिङ्गस्वरूप जो जो तीर्थ हैं, वह मुझसे प्रकाश कीजिये। कार्त्तिकेयने कहा, हे कुम्भयोने! पहले भगवान् शङ्करने पूछनेपर पार्व्वतीसे जो कहा था, वह मैं अविकल कहता हूं सुनो। देवीने कहा था, हे महेश्वर! इस काशीधाममें जिस जिस स्थलपर जो जो तीर्थ हैं हे प्रभो! वह सब मुझसे व्यक्त कीजिये। तब देवदेवने कहा, हे विशालाक्षि! तुमने जो विषय पूछा, वह कहता हूं, सुनो। हे देवि! लिङ्ग सभी तीर्थ कहे जाते हैं और इन लिङ्गरूप तीर्थ सम्बन्धसे ही जलाशयका नाम भी तीर्थ हुआ है। ब्रह्मा, विष्णु, अर्क और गणेशादि यावतीय देवमूर्त्ति ही शिवलिङ्ग कहकर विख्यात और जहां जहां शिवलिङ्ग अवस्थित हैं, वह भी तीर्थ है। इस वाराणसीमें महादेव ही प्रथम तीर्थ हैं, उनके उत्तर सारस्वतपदप्रद एक महाकूप है; क्षेत्रके पूर्व्वोत्तरभागमें अवस्थित इस कूपका दर्शन करनेसे मनुष्य पशुपाशसे मुक्त होते हैं। उसके पीछे मूर्त्तिमती वाराणसी विराज रही हैं, वह मनुष्यगण द्वारा पूजिता होनेपर सदा सुखराशि प्रदान करती हैं। महादेवके पूर्व्व गोप्रेक्ष नामक परम लिङ्ग अवस्थित हैं, उनका दर्शन करनेसे सम्यक् गोदानजनित फल लाभ किया जाता है। पहले भगवान् शम्भु द्वारा अवलोकित हो गोगणके गोलोकसे वहां अवस्थित होनेके कारण उनका नाम गोप्रेक्ष हुआ है। उक्त गोप्रेक्ष लिङ्गके दक्षिण दधीचीश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनके दर्शनसे मनुष्य यज्ञानुष्ठानजनित फल पाते हैं। उनके दक्षिण मधुकैटभपूजित अत्रीश्वर नामक लिङ्ग विराजमान हैं. यत्नके साथ उनका दर्शन करनेसे विष्णुपद मिलता है। गोप्रेक्ष लिङ्गके पूर्व्व अवस्थित विज्वरेश्वर लिङ्गकी पूजा करनेसे मनुष्य क्षणकालमें विज्वर होते हैं। विज्वरेश्वरके पश्चिम चतुर्व्वेदफलप्रद वेदेश्वर नामक लिङ्ग विराज रहे हैं। उक्त वेदेश्वरके उत्तर क्षेत्रज्ञ आदिकेशव अवस्थित हैं, उनका दर्शन करनेसे निःसन्देह त्रिभुवनका दर्शन होता है। उनके पूर्व्व अवस्थित सङ्गमेश्वर

लिङ्गका स्पर्शन करनेसे मनुष्य निष्पाप होते हैं। उक्त लिङ्गके पूर्व्व चतुर्मुखलिङ्ग विराजित हैं, उनकी अर्चना करनेसे ब्रह्मलोकमें वास होता है। यहीं शान्तिकारी गौरी हैं, पूजिता होनेपर वह परम शान्ति विधान करती हैं। वरणानदीके पूर्व्व दन्तीश्वर नामक एक लिङ्ग हैं, मनुष्य उनकी पूजा करनेसे कुलवर्द्धन बहुपुत्र लाभ कर सकते हैं। उक्त दन्तीश्वरके उत्तर कापिलह्रद नामक एक तीर्थ है, इस ह्रदमें स्नान और वृषभध्वजकी अर्चना करनेसे राजसूययज्ञका सम्पूर्ण फल मिलता है। अधिक क्या, पुत्रगण यदि इस तीर्थमें श्राद्ध करें, तो रौरवादि नरकसे उनके पूर्व्वपुरुषगण भी पितृलोक पाते हैं। हे मुने! गोप्रेक्ष लिङ्गके उत्तर अनुसूयेश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे रमणीगण निःसन्देह सम्पूर्ण पातिव्रत्यफल पाती हैं। उक्त लिङ्गके पूर्व्वस्थित सिद्धिविनायककी पूजा करनेसे, जिसकी जैसी वासना हो सफल होती है। सिद्धिविनायकके पश्चिम हिरण्यकशिपुप्रतिष्ठित, हिरण्य और अश्वसमृद्धिप्रद एक लिङ्ग और हिरण्यकूप नामक एक कूप है। उसके पश्चिम मुण्डासुरेश्वर नामक सिद्धिप्रद एक लिङ्ग और गोप्रेक्ष लिङ्गके नैऋतकोणमें अभीष्टदायक वृषभेश्वर नामक लिङ्ग विराज रहे हैं। हे मुने! महादेवके पश्चिम स्कन्देश्वर लिङ्ग अवस्थित हैं, मनुष्य इनकी पूजा करनेसे मेरा सालोक्य पाते हैं। उक्त स्कन्देश्वरके पास शाखेश्वर, विशाखेश्वर और नैगमेयेश्वर नामक लिङ्ग हैं और वहां ही नन्दी प्रभृति मेरे अन्यान्य गणोंके प्रतिष्ठित शत सहस्र लिङ्ग विराजमान हैं, इन सबका दर्शन करनेसे मनुष्य उन्हीं गणका सालोक्य पाते हैं। नन्दीश्वर लिङ्गके पश्चिम कुबुद्धिनाशक शिलादेश्वर और वहां ही महाबलप्रद हिरण्याक्षेश्वर नामक लिङ्ग अवस्थित हैं। उनके दक्षिण सर्व्वसुखप्रद अट्टहास नामक लिङ्ग अट्टहासके उत्तर प्रसन्नवदन नामक शुभ एक लिङ्ग विराज रहे हैं। भक्तगण उक्त प्रसन्नवदनाख्य लिङ्गका दर्शन करनेसे सर्व्वदा प्रसन्नमुख रह सकते हैं। उसके उत्तर मनुष्योंका मलनाशक प्रसन्नोदक नामक एक कुण्ड है। पूर्व्वोक्त अट्टहास लिङ्गके पश्चिम मित्रावरुण नामक महापापहारी दो लिङ्ग विराजमान हैं, उनकी अर्च्चना करनेसे मनुष्य उनके लोक जाते हैं। अट्टहास लिङ्गके नैऋतकोणमें अवस्थित वृद्धवाशिष्ठ नामक लिङ्गकी पूजा करनेसे महत् ज्ञानोदय होता है। उक्त वसिष्ठेश्वरके समीप विष्णुलोकप्रद कृष्णेश्वर और उनके दक्षिण ब्रह्मतेजोविवर्द्धक याज्ञवल्क्येश्वर नामक लिङ्ग हैं। उनके पीछे प्रह्लादेश्वर लिङ्ग हैं, स्वयं भगवान् शिव भक्तगणोंके अनुग्रहके लिये इन लिङ्गमें लीन हैं, उनकी अर्च्चना करनेसे परम भक्तिका उदय होता

है। उक्त प्रह्लादेश्वरके पूर्व्व स्वर्लीन मानस लिङ्ग हैं, यत्नके साथ उनकी पूजा करना मनुष्योंका कर्त्तव्य है। परमानन्द-प्रार्थी ज्ञाननिष्ठ व्यक्तियोंको जो गति मिलती है, उक्त लिङ्गके समीप जो प्राण-त्याग करते हैं, उन्हें भी वही गति मिलती है। स्वर्लीन लिङ्गके सामने वैरोचनेश्वर लिङ्ग और उनके उत्तर महाबलविवर्द्धक बलीश्वर लिङ्ग और वहां ही पूजकगणके सर्व्वसिद्धिप्रद वाणेश्वर लिङ्ग विराजमान हैं। चन्द्रेश्वरके पूर्व्व विद्येश्वर नामक जो लिङ्ग हैं, उनकी सेवा करनेसे समस्त विद्या प्रादुर्भूत होती है। उनके दक्षिण महासिद्धिविधायक वीरेश्वर लिङ्ग और वहां ही सर्व्वदुष्टविमर्द्दिनी विकटा देवी और पञ्चमुद्र नामक महापीठ विराजमान है। यह पीठ सर्व्वसिद्धिप्रद होनेके कारण विख्यात है, यहां महामन्त्रका जप करनेसे, निःसन्देह अविलम्ब सिद्धिलाभकी जाती है। इस पीठके वायुकोणस्थित सागरे-श्वरलिङ्गकी पूजा करना कर्त्तव्य है, उनका दर्शन करनेसे सम्पूर्ण अश्वमेधयज्ञका फल लब्ध होता है। उक्त लिङ्गके ईशान-कोणमें तिर्य्यक्योनिनिवारक वाणेश्वर और उनके उत्तर महापापराशिके संहार-कारी सुग्रीवेश्वर, ब्रह्मचर्य्यफलप्रद हनु-मदीश्वर और महाबुद्धिदायक जाम्बव-दीश्वरलिङ्ग विराज रहे हैं। गङ्गाके पश्चिम किनारे अवस्थित आश्विनेयेश्वर नामक शिवलिङ्गद्वयकी पूजा करना कर्त्तव्य है और उनके उत्तर गोगणाकार क्षीरपूरित भद्रह्रद नामक एक ह्रद है। मनुष्यको यथाविधि सहस्र कपिला गोदान करनेसे जो फल होता है, इस ह्रदमें स्नान करनेसे भी निःसंशय वैसा ही फल मिलेगा। पूर्व्वभाद्रपद नक्षत्रयुक्त पौर्णमासी होनेपर, यहां परम प्रण्यकाल उपस्थित होता है, उस समय उक्त ह्रदमें स्नान करनेसे अश्व-मेधयज्ञका फल मिलता है। उक्त ह्रदके पश्चिम तटस्थित भद्रेश्वर लिङ्गका दर्शन करनेसे, मनुष्य निःसन्देह उस पुण्यसे गोलोकपुरी जाते हैं। भद्रेश्वरके नैऋत-कोणमें उपशान्त नामक शिवलिङ्ग हैं, हे सुने। इन लिङ्गका स्पर्श करनेसे मनुष्य परम शान्ति पाते और उक्त उपशान्त नामक शिवलिङ्गका दर्शन करनेसे शतजन्मा-र्ज्जित पापपुञ्ज परिहारपूर्व्वक मङ्गलराशि सञ्चय करते हैं। उनके उत्तर योनिचक्र-निवारक चक्रेश्वर नामक लिङ्ग और उत्तर महापुण्य विवर्द्धक एक चक्रह्रद है। जो व्यक्ति उक्त ह्रदमें स्नानकर परम भक्तिके साथ चक्रेश्वरकी अर्च्चना करते हैं, वह शिवलोक जाते हैं। उसके नैऋतकोणमें शूलेश्वर नामक एक लिङ्ग हैं। यत्नके साथ उनका दर्शन करना विधेय है। हे वरवर्णिनि! पहले स्नानके निमित्त मेरे द्वारा शूल न्यस्त होनेसे शूलेश्वरके सामने यह महान् ह्रद समुत्पन्न हुआ है। मनुष्य

उक्त हृदमें स्नानकर भगवान् शूलीश्वरका दर्शन करनेसे; संसारगह्वर परित्यागकर, रुद्रलोक जाते हैं। पहले देवर्षि नारदने उक्त लिङ्गके पूर्व्व घोर तपस्याकर फिर एक परम लिङ्ग प्रतिष्ठित और एक शुभ कुण्ड स्थापित किया था, इस कुण्डमें स्नानकर नारदेश्वर लिङ्गका दर्शन करनेसे, मनुष्य निश्चित महाघोर संसारसागरसे उत्तीर्ण होते हैं। नारदेश्वरके पूर्व्व स्थित वभ्रात-केश्वर नामक लिङ्गका दर्शन करनेसे सब पापोंसे मुक्त हो, मनुष्य निर्म्मल गति पाते हैं। उक्त लिङ्गके सामने अविकुण्ड अवस्थित है, वहां स्नान करनेसे फिर गर्भयन्त्रणा भोगना नहीं पड़ती। उसके वायुकोणमें सर्व्वविघ्ननाशक विघ्नहर्त्ता नामक गणेश और विघ्नहर नामक एक कुण्ड है, उसमें स्नान करनेसे विघ्नशान्ति होती है। उसके उत्तर अनारकेश्वर नामक परम लिङ्ग और अनारक नामक कुण्ड है। इस कुण्डमें स्नान करनेसे मनुष्यकी निरय-गति नहीं होती। हे महामुने! उनके उत्तर वरणानदीके सुरम्य तटपर वरणेश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनकी आराधनासे अच्छ-पाद नामक एक शैवने इस स्थूल शरीरमें ही परमसिद्धि पाई थी। उनके पश्चिम परम निर्व्वाणदाता शैलेश्वर लिङ्ग हैं। उनके दक्षिण अक्षयसिद्धदाता कोटीश्वर लिङ्ग और कोटितीर्थहृद वर्त्तमान है, इस हृदमें स्नान और कोटीश्वरलिङ्गकी पूजाकर मनुष्य कोटि गोदानका फल पाते हैं। कोटीश्वरके अग्निकोणमें एक महा-श्मशान स्तम्भ है, उसमें रुद्रदेव सदा उमाके साथ अवस्थान करते हैं। इस स्तम्भको भूषणादि द्वारा अलङ्कृत करनेसे मनुष्य रुद्रपद पाते हैं। यहां ही कपा-लेश्वर लिङ्ग हैं और उनके निकट कपाल-मोचन नामक महातीर्थ है, इसमें स्नान करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है। इसके उत्तर ऋणमोचन नामक तीर्थ शोभित है, यहां स्नान करनेसे नरगण ऋणसे मुक्त होते हैं; यहां ही अङ्गारक तीर्थ और अङ्गार निर्म्मल कुण्ड विद्यमान है, इस अङ्गारक तीर्थके स्नानफलसे पुन-र्ज्जन्म नहीं होता। जो व्यक्ति मङ्गलवार चतुर्थी तिथिको इसमें स्नान करते हैं, वह व्याधिमुक्त और चिरसुखी होते हैं। उसके उत्तर ज्ञानदाता विश्वकर्म्मेश्वर नामक लिङ्ग हैं। उनके दक्षिण महा-कुण्डेश्वर लिङ्ग और शुभोद नामक शुभ-कूप वर्त्तमान है; इस कूपमें स्नान करना अवश्य उचित है और वहां मैंने अति सुन्दर मुण्डमाला निक्षेप की थी इस कारण पापहारिणी देवी महामुण्डा आविर्भूता हुई थीं। वहां मेरे खट्वाङ्ग धारण कर-नेके कारण खट्वाङ्गेश्वर लिङ्ग आविर्भूत हुए, इन खट्वाङ्गेश्वरका दर्शन करनेसे मनुष्य निष्पाप होते हैं। इनके दक्षिण भुवनेश्वर लिङ्ग और उनके नामका कुण्ड

विराजमान हैं, इस कुण्डके स्नानफलसे मनुष्य भुवनेश्वर होते हैं। उसके दक्षिण विमलेश्वर लिङ्ग और विमलोदक जो कुण्ड है, उसमें स्नान और उनका दर्शन करनेसे मनुष्य मलमुक्त होते हैं। यहां त्र्यम्बक नामक ऋषिने सिद्ध हो पाञ्चभौतिक देहसे रुद्रलोक पाया था। उनके पश्चिम अति-पुण्यदायक भृगुमुनिका आश्रम है, विधि-पूर्व्वक उनकी अर्च्चना करनेसे मनुष्य शिवलोक जाते हैं। उनके दक्षिण महा-फलदाता शुभेश्वर लिङ्ग विराज रहे हैं, इनके प्रसादसे महातपा कपिल मुनि सिद्ध हुए थे। वहां उनके प्रतिष्ठित कपिलेश्वर नामक लिङ्ग वर्त्तमान हैं और पास ही एक रमणीय गुहा है, जो व्यक्ति उस गुहामें प्रवेश करते हैं, उन्हें फिर गर्भमें प्रविष्ट करना नहीं पड़ता। यहां अश्व-मेधफलदायक यज्ञोद नामक कूप है। यह कपिलेश्वर ही अकारादि पञ्चवर्णा-त्मक ओङ्कारेश्वरस्वरूप हैं, किन्तु मत्स्यो-दरीके उत्तरकूलमें जो नादेश्वर हैं, उन्हें मेरा स्वरूप जानना। नादेश्वर ही परम ब्रह्म परमगति और दुःखसंसार-मोचनके उत्कृष्ट स्थान कहे जाते हैं। जब उन नादेश्वर लिङ्गके दर्शनार्थ जाह्नवी समागत हुईं, तबसे उसे मत्स्योदरी कहते हैं, वहांका स्नान बहुपुण्य संघटित होता है। हे महादेवि! जब मत्स्योदरी गङ्गा पश्चिमस्थित कपिलेश्वर लिङ्गमें समागत होती हैं, तो एक योग होता है, उसे सचराचर प्राप्त कर नहीं सकते। कपि-लेश्वरके उत्तर उद्दालकेश्वर लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे सबको सुलभ परम सिद्धि लाभ होती है। उसके उत्तर सर्व्वार्थ सिद्धिदाता वाष्कलीश लिङ्ग और उनके दक्षिण कौस्तुभेश्वर लिङ्ग वर्त्तमान हैं। इन कौस्तुभेश्वर लिङ्गकी अर्च्चनासे मनुष्य कभी रत्नराशिशून्य नहीं होते। इनके दक्षिण शङ्कुकर्णेश्वर लिङ्ग हैं, इनकी सेवाकर आज भी साधक परम ज्ञान पाते हैं। कपिलेश्वरके समीप जो गुहा है, उसके द्वारदेशमें अघोरेश्वर लिङ्ग और उसके उत्तर अघोरद नामक अश्वमे-धयागका फलदाता एक शुभ कूप है। वहां गर्गेश्वर और दमनेश्वर नामक दो शुभ लिङ्ग हैं, इनकी आराधनासे गर्ग और दमन नामक मुनिद्वयने इस देहसे ही सिद्धि लाभ की थी और इन लिङ्गद्वयकी सेवासे वाञ्छितसिद्धि होती है। उनके दक्षिण रुद्रावास नामक एक महाकुण्ड और रुद्रेश्वर लिङ्ग हैं, उनकी पूजा करनेसे कोटि रुद्रपूजाका फल होता है। हे अपर्णे! पहले फाल्गुनीनक्षत्रयुक्त चतुर्द्दशी ही इस कुण्डमें स्नानका अति प्रशस्तकाल है, उस समय स्नानसे महाफल होता है। मनुष्य रुद्रकुण्डमें स्नान और रुद्रेश्वरका दर्शनकर जहां तहां मरनेसे भी रुद्रलोक पाता है। उनके नैऋतकोणमें महाल-

येश्वर लिङ्ग हैं। उनके सामने उनके नामका एक कूप है, वहां श्राद्धकर मनुष्य यदि कूपमें पिण्ड निक्षेप करें, तो वह और उनके एकतीस पुरुष रुद्रलोक पाते हैं। हे देवि! यहां वैतरणी नामक पश्चिममुखी एक दीर्घिका है, वहांके स्नानसे मनुष्य नरकगामी नहीं होते। रुद्रकुण्डके पश्चिम वृहस्पतीश्वर लिङ्ग हैं, गुरुवार पुष्यानक्षत्र योगमें उनका दर्शन करनेसे दिव्यवाणी लाभ होती है, रुद्रावासके दक्षिण कामेश्वर लिङ्ग और उनके दक्षिण उनके नामका महाकुण्ड है, वहां स्नान करनेसे मनुष्य जो चिन्ता करता, वही सिद्ध होता और वहां चैत्रमासकी शुक्ल त्रयोदशीको यात्रा करनेसे अभीष्टसिद्धि होती है। भमेश्वर लिङ्गके पश्चिम नलकूबर लिङ्ग और उनके सामने धनधान्यसमृद्धिदाता एक पवित्र कूप वर्त्तमान है। नलकूबरेश्वर लिङ्गके पूर्व्व सूर्य्यचन्द्रमेश्वर नामक दो लिङ्ग हैं, उनकी अर्चना करनेसे अज्ञानान्धकार नष्ट होता है। उनके दक्षिण अध्वकेश्वर लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे मोह विनष्ट होता है। वहां ही महासिद्धिप्रद सिद्धीश्वर नामक और मण्डलेश्वर नामक पदप्रदाता मण्डलेश्वर नामधेय लिङ्ग हैं। कामकुण्डके पूर्व्व समृद्धिदाता च्यवनेश्वरलिङ्ग और वहीं राजसूययज्ञके फलदाता सनकेश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनके पीछे योगसिद्धिकर सनत्कुमार लिङ्ग और उनके उत्तर अशेष ज्ञानदाता सनन्देश्वर लिङ्ग हैं। दक्षिण आह्नतीश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे होम फल पाया जाता है। उनके दक्षिण पुण्यजनक पञ्चशिखेश्वर लिङ्ग हैं, उनके पश्चिम सुकृतवर्द्धक मार्कण्डेय ह्रद है। मनुष्य इस ह्रदमें स्नान करनेसे शोकके कवलसे निष्कृति पाते हैं। उसमें स्नान और दान अक्षयपुण्यप्रद है। उसके उत्तर ही निखिल समूहपूजित कुण्डेश्वर नामक लिङ्ग हैं। पाशुपतमन्त्रसे दीक्षित हो द्वादश वर्ष तपश्चरण करनेसे जो फल मिलता है, कुण्डेश्वरके दर्शनसे भी मनुष्य वह फल पानेमें समर्थ हैं। मार्कण्डेय ह्रदके पूर्व्व शाण्डिलेश्वर नामक लिङ्ग और पश्चिम चण्डेश्वर लिङ्ग हैं। सूर्य्योपरागकालमें स्नानादि करनेसे जो पाप विनष्ट होता है, उनका दर्शन करनेसे भी वह पाप विनष्ट होता। कपालेश्वरके दक्षिण श्रीकण्ठ नामक कुण्ड है, मनुष्य उस कुण्डमें स्नान करनेसे लक्ष्मीकी दयाके दाता होते हैं। उस कुण्डके पास ही महालक्ष्मीश्वर नामक लिङ्ग हैं, मनुष्य श्रीकण्ठकुण्डमें स्नानकर उनका दर्शन करनेसे दिव्य स्त्रीगण द्वारा चामरसे वीजित होते हैं। सुरगण जब रमणीगणसे परिवृत हो मत्स्योदरीमें आते हैं, तो उसी स्थानसे आते जाते हैं, इसलिये उसका नाम "स्वर्गद्वार" है। उस कुण्डके दक्षिण ब्रह्मपददायी लिङ्ग हैं और

वहीं "गायत्रीश्वर" और सावित्रीश्वर नामक दो लिङ्ग हैं। मनुष्य यत्नके साथ उनकी पूजा करें। मत्स्योदरीके सुरम्य तटपर सत्यव्रतीश्वरनामधेय लिङ्ग हैं और गायत्रीश्वर और सावित्रीश्वरके पूर्व तपः-ओवर्द्धक लिङ्ग हैं। लक्ष्मीश्वरके पूर्व उग्रेश्वर नामक महालिङ्ग हैं, मनुष्य उनकी पूजा करनेसे जातिस्मर होते हैं। उनके दक्षिण उग्रकुण्ड अवस्थित है। वहां स्नान करनेसे कनखलतीर्थमें स्नानकी अपेक्षा अधिक सुकृत लाभ होता है। इनके पश्चिम करवीरेश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे मनुष्य रोगमुक्त होते हैं। उनके वायव्य पापप्रणोदन मरीचीश्वर लिङ्ग हैं और मरीचिकुण्ड है, वहां ही उनके पीछे चन्द्रशेखर लिङ्ग और चन्द्र-कुण्ड है। इन्द्रेश्वरके दक्षिण कर्कोट-पुष्करिणी है। इसमें सन्देह नहीं, वहां स्नानकर कर्कोटेश्वरका दर्शन करनेसे नाग-समूहपर आधिपत्य लाभ होता है। उनके पीछे ब्रह्महत्या पातकनाशक दमिचण्डीश नामक लिङ्ग है। उनके दक्षिण रुद्रलोक फलप्रद महाकुण्ड है, उस कुण्डके पश्चिम अग्नीश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनके पूर्व अग्निलोकदायी आग्नेयकुण्ड है। उसके दक्षिण और एक कुण्ड है, उस कुण्डमें स्नान करनेसे मनुष्य पूर्वपुरु-षोंके साथ मिलकर स्वर्ग जाते हैं। उसके पूर्व चन्द्रलोकफलप्रद बालचन्द्रेश्वर नामक लिङ्ग हैं, बालचन्द्रेश्वरकी चारों ओर प्रमथसमूह परिवृत कितने ही लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे गाणपत्यपद मिलता है। बालचन्द्रेश्वरके समीप पितृगणका एक कुण्ड है, उसमें स्नानकर पिण्डदान देनेसे सप्तपुरुषका उद्धार होता है। उस कूपके पूर्व विश्वेश्वर नामक अति पवित्र लिङ्ग हैं, विश्वेश्वरके पूर्व वृद्धकालेश्वर लिङ्ग हैं, उनके सामने सर्व्वप्रकार रोग-नाशक कालोद नामक कूप है नारी या नरको उसका जलपान करनेपर शतकोटि कल्पमें भी इस जगत्में प्रत्यावर्त्तन करना नहीं पड़ता। मनुष्य इसका जल पान करनेसे जन्मबन्धसे विनि-मुक्त होते हैं। इस कूपमें मानवसमूह जो कुछ दान करते हैं, वह प्रलयकालमें भी क्षय नहीं होता। जो उस कूपका संस्कार करते, वह रुद्रलोकमें सुखसे वास करते हैं, कालेश्वरके उत्तर दक्षेश्वर नामक लिङ्ग हैं, उनकी अर्चना करनेसे सहस्र अपराध विनष्ट होते हैं। उनके पूर्व महाकालेश्वर नामक महालिङ्ग और महाकुण्ड भी है, उस कुण्डमें स्नानकर महाकालेश्वरकी पूजा करनेसे इस स्थावर जङ्गमात्मक जगत्की पूजा होती है। उनके दक्षिण अन्तके-श्वर लिङ्गका दर्शन करनेसे अन्तकका भय नहीं रहता। उनके दक्षिण हस्तपाले-श्वर नामक विख्यात लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे हस्तिदानका पुण्य मिलता है।

वहां ऐरावतेश्वर लिङ्ग और ऐरावत कुण्ड है, उन लिङ्गकी पूजा करनेसे धन धान्य सम्पत्ति मिलती है। उनके दक्षिण कल्याणप्रद मालतीश्वर लिङ्ग अवस्थित हैं। हस्तीपालेश्वरके उत्तर विजयदाता जयन्तके लिङ्ग हैं। महाकाल कुण्डके उत्तर नन्दीश्वर नामक लिङ्ग हैं, और वहां ही महापापापनोदन विख्यात नन्दिकुण्ड है। वहां स्नान, दान और श्राद्धादि करनेसे अक्षय सुकृत मिलता है। यहां ही धन्वन्तरीश्वर लिङ्ग और उनके नामका एक कुण्ड है, इस लिङ्गका नाम तुङ्गेश्वर और वह कुण्डका वैद्येश्वर नाम अभिहित है। इस कुण्डमें धन्वन्तरिने आरोग्यकर अमृतमय महौषध निक्षेप किया था; इस कुण्डमें स्नान और लिङ्गका दर्शन करनेसे उत्कट पापसमूह और सर्व्वप्रकार व्याधिकी विनष्ट होती है। उनके उत्तर सर्व्वरोगोपशमकारी हलीशेश्वर लिङ्ग हैं। तुङ्गेश्वरके दक्षिण श्रेयस्कर शिवेश्वर लिङ्ग हैं। उनके दक्षिण जमदग्नीश्वर नामक मङ्गलमय लिङ्ग हैं। उनके पश्चिम भैरवकूप और भैरवेश्वर नामक लिङ्ग हैं, उस कूपका सलिल पान करनेसे सर्व्वयोगका फल मिलता है। उसके पश्चिम योगसिद्धिदाता शुकेश्वर लिङ्ग अवस्थित हैं। उसके नैरित्‌कोणमें विमलोदक नामक कूप और व्यासेश्वर नामक लिङ्ग अवस्थित हैं। इस कूपमें स्नानकर देव और पितृगणका तर्पण करनेसे सर्व्वप्रकार अभिलषित प्राप्ति होती है। व्यासतीर्थके पश्चिम घण्टाकर्णह्रद है। इस ह्रदमें स्नान और व्यासेश्वरका दर्शनकर कुदेशमें मरनेसे भी काशीमें मरनेका फल मिलता है। घण्टाकर्णह्रदके निकट पञ्चचूड़ा नामक एक अप्सरःसरोवर है। उस सरोवरमें स्नानकर तमीश्वर नामक लिङ्गका दर्शन करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें जाते और पञ्चचूड़ाके प्रणयपात्र होते हैं। उस सरसीके दक्षिण सर्व्वप्रकार जाड्यशान्तिकर गौरीकूप है। पञ्चचूड़ाके उत्तर महापापापहारी मन्दाकिनी तीर्थ है, यह तीर्थ स्वर्गलोकमें भी महापुण्यप्रद होनेके कारण कीर्त्तित है, मर्त्त्यलोककी तो बात ही नहीं। उसके उत्तर हीव मध्यस्थमें प्रधान मध्यमेश्वर लिङ्ग विराजित हैं, चैत्रमासीय अशोकाष्टमीको यहां जागरण करनेसे कभी शोककवलित होना नहीं पड़ता और मनुष्य सदा ही आनन्दयुक्त होते हैं। सुकृतिप्रद इस मध्यमेश्वर लिङ्गके क्षेत्रका परिमाण चारो ओर एक क्रोश है। पितृगण सदा ऐसी बात कहते हैं, कि "हमलोगोंके कुलोत्पन्न क्या कोई चित्तसंयमपूर्व्वक मन्दाकिनी तीर्थमें स्नानकर विप्र यति शैवगणको भोजन करायेंगे?" मनुष्य मन्दाकिनीतिर्थमें स्नानकर मध्यमेश्वरका दर्शन करनेसे एकविंशति पुरुषके साथ चिरकाल इन्द्रलोकमें वास करनेमें समर्थ होता है। मध्यमेश्वरके दक्षिण

विश्वदेवेश्वर नामधेय पवित्र लिङ्ग अवस्थित हैं, उनको अर्च्चना करनेसे त्रयोदश विश्वदेव अर्च्चित होते हैं, उनके पूर्व्व महावीरत्वदाता वीरभद्रेश्वर नामक लिङ्ग हैं। उनके दक्षिण मङ्गलदायिनी भद्रकाली हैं, और वहां अतिमात्र कल्याणदायक भद्रकालह्रद है। उस ह्रदके पूर्व्व परम ज्ञानप्रद आपस्तम्बेश्वर लिङ्ग वर्त्तमान हैं। उनके उत्तर पुण्यकूप और पुण्यकूपके उत्तर शौनक ह्रद है, उसके पश्चिम शौनकेश्वर नामक लिङ्ग हैं, शौनक ह्रदमें स्नान करनेसे उत्तम बुद्धि और मृत्युभयहारी दिव्यज्ञान लाभ होता है। उसके दक्षिण तिर्य्यक्योनिसे परित्राणकारक एक लिङ्ग हैं; उनका नाम जम्बुकेश्वर है। उनके उत्तर गानविद्याप्रद मतङ्गेश्वर लिङ्ग हैं; इनके वायुकोणमें मुनिगणप्रतिष्ठित कितने ही लिङ्ग हैं, वह सभी सिद्धिप्रद हैं। मतङ्गेश्वरके दक्षिण अवस्थित त्र्यम्बकेश्वर लिङ्गका दर्शन करनेसे कभी अपमृत्युका भय नहीं रहता। पास ही कितने पितृलिङ्ग और शाण्डिल्येश्वर नामक एक लिङ्ग हैं, जिनकी सेवा करनेसे पितृगण परम प्रीति लाभ करते हैं। उनके दक्षिण कितने ही सिद्धगणका आवासस्थान कूप है, वहां आयुरूपधारी सूर्य्यकिरणगामी सिद्धगण प्रतिष्ठित जो सिद्धेश्वर नामक लिङ्ग है, उनका दर्शन करते ही समस्त सिद्धि लाभ होती है।

उनके पश्चिम सिद्धवापी है, वहां स्नान और उसका जलपान करनेसे भी सिद्धि मिलती है। इसके पूर्व्व जो व्याघ्रेश्वर लिङ्ग हैं, उनका दर्शन करनेसे चोर या व्याघ्रका भय नहीं रहता। उनके दक्षिण ज्येष्ठ स्थान तीर्थोंमें सर्व्वसिद्धिप्रद ज्येष्ठेश्वर लिङ्ग हैं। आनन्दनिलय प्रहसितेश्वर नामक लिङ्ग दक्षिण स्थापित हैं। उनके उत्तर निवासेश्वर लिङ्ग हैं; इनके प्रसादसे काशीवास सफल होता है। निकट ही चतुःसमुद्र कूप ; यहां स्नान करनेसे अब्धिस्नानका फल मिलता है। वहां ही ज्येष्ठपदप्रदा ज्येष्ठा देवी हैं। चण्डीश्वर नामक लिङ्ग व्याघ्रेश्वरके दक्षिण अवस्थित हैं; उत्तर पितृगणका प्रीतिप्रद दण्डखात सरोवर है। वहां ग्रहणके अन्तमें स्नान करनेसे अतिशय पुण्यफल मिलता है, वहां ही जैगीषव्येश्वरलिङ्गविशिष्ट जैगीषव्यगुहा है; वहां त्रिरात्र उपवास करनेसे निर्म्मल ज्ञान मिलता है। उनके पीछे महापुण्यप्रद देवलेश्वर लिङ्ग हैं, पास ही शतवर्ष परमायुप्रद शतकालेश्वर लिङ्ग हैं : इनके ही आविर्भावके लिये भगवान् महेश्वरने शतवर्ष अपेक्षा की थी। इनके दक्षिण शातातपेश्वर लिङ्ग हैं, यह महाजपका फल प्रदान करते हैं। उनके पश्चिम महाफलके हेतु स्वरूप हेतुकेश्वर हैं; दक्षिण महाज्ञानविधायक अक्षपादेश्वर हैं। उनके सामने पुण्योदक नामक कूप

चार कणादेश्वर लिङ्ग हैं। वहां कूपमें स्नानके उपरान्त करणादेश्वर लिङ्गका दर्शन करनेसे मनुष्य धन-धान्यहीन नहीं होते। उनके दक्षिण भूतीश्वर नामक लिङ्ग हैं, यह साधुगणकी भूतिवृद्धि करते हैं। उनके पश्चिम पापक्षयकारी आषाढ़ीश्वर लिङ्ग और पूर्व सर्वकामप्रद दुर्वासेश्वर लिङ्ग वर्त्तमान हैं। उनके दक्षिण सर्वपापध्वंसकारक भारभूतेश्वर लिङ्ग हैं। व्यासेश्वरके पूर्व महाज्ञानविधायक शङ्केश्वर और लिखतेश्वर नामक लिङ्गद्वय प्रतिष्ठित हैं। मनुष्य भक्तिपूर्वक उनका दर्शन करें। एकवार मात्र विश्वेश्वरका दर्शन करनेसे निष्ठापूर्वक पाशुपतव्रतके उद्यापनका फल होता है। योगज्ञानविधायक अवधूतेश्वर लिङ्ग और सर्वपापहारी अवधूत-तीर्थ विश्वेश्वरके ईशान कोणमें अवस्थित है। पशुपाशमोचनकारी पशुपतीश्वर लिङ्ग अवधूतेश्वरके पूर्व स्थापित हैं। महाभिलषितप्रद गोभिलेश्वर लिङ्ग उनके दक्षिण और विद्याधरपदविधायक जीमूतवाहनेश्वर पश्चिम स्थापित हैं। पञ्चनदमें मयूराक और गभस्तीश्वर लिङ्ग है। उनके उत्तर अवस्थित दधिकल्पह्रद नामक महाकूपमें स्नानकर गभस्तीश्वरका दर्शन अति दुर्लभ है; दधिकल्पेश्वर नामक लिङ्ग उनके उत्तर अवस्थित हैं, इन लिङ्गके दर्शनसे मनुष्य कल्पान्त पर्य्यन्त शिवलोक पाते हैं। गभस्तीश्वरके दक्षिण जो शिवालया मङ्गलागौरी हैं, उनके उद्देशसे ब्राह्मणदम्पतीको भोजन करा यथाशक्ति भूषित करानेसे अक्षय पुण्य होता और उन्हें वेष्टन करनेसे भूमण्डल प्रदक्षिणका फल प्राप्त होता है। मङ्गलागौरीके समीप मुखप्रेक्षेश्वर लिङ्गके उत्तर वदनप्रेक्षणा नाम्नी देवी और लक्ष्मीश्वर और वर्षेश्वर नामक लिङ्गद्वय प्रतिष्ठित हैं, उनका दर्शन करनेसे सुवर्णके साथ भूमिदानका फल और सर्वसिद्धि मिलती है। शुभप्रदा चर्चिका देवी उनके उत्तर अवस्थिता हैं, इनके सामने शान्तिविधायक रेवतेश्वर लिङ्ग और उनके समीप शुभप्रद पञ्चनदेश्वर लिङ्ग प्रतिष्ठित हैं। मङ्गलागौरीके पश्चिम मङ्गलोदक नामक महाकूप है, उसके पास ही उपमन्यु प्रतिष्ठित शुभ महालिङ्ग हैं। व्याघ्रपादेश्वर नामक व्याघ्रभीतिहारी लिङ्ग उनके पीछे अवस्थित हैं। पापहारी शशाङ्केश्वर लिङ्ग गभस्तीश्वरके नैऋतमें अवस्थित हैं। चैत्ररथेश्वर लिङ्ग उनके पश्चिम स्थापित हैं, यह दिव्यगति प्रदान करते हैं। महापापहारी जैमिनीश्वर लिङ्ग रेवतेश्वरके पश्चिम अवस्थित हैं। मुनिगण प्रतिष्ठित और भी कितने ही लिङ्ग वहां ही विद्यमान हैं। इनके वायुकोणमें राक्षसभयहारी रावणेश्वर लिङ्ग, नरादेश्वर लिङ्ग, खाण्डकेश्वर, प्रचण्डेश्वर, योगीश्वर, धातेश्वर यह रावणेश्वरसे

क्रमान्वयमें दक्षिण अवस्थित हैं। धातेश्वरके पुरोभागमें सोमेश्वर और सोमेश्वरके नैऋतकोणमें सुवर्णप्रद कनकेश्वर लिङ्ग विराज रहे हैं। उनके उत्तर पाण्डवोंके स्थापित पञ्चलिङ्ग हैं, उनके दर्शनमात्रसे साधुगण परमानन्दित होते हैं। उनके सामने सम्बर्त्तेश्वर और पश्चिम श्वेतेश्वर लिङ्ग विराज रहे हैं। श्वेतेश्वरके पीछे कलसेश्वर हैं, उनका दर्शन करनेसे कालभय नहीं रहता। उनके उत्तर पापनाशक चित्रगुप्तेश्वर लिङ्ग और उनके पीछे बहुफलदायी हर्षेश्वर लिङ्ग विराजित हैं। कलसेश्वरके दक्षिण अवस्थित ग्रहेश्वर लिङ्गका दर्शन करनेसे जीवकी सब ग्रहबाधा दूर होती है। चित्रगुप्तेश्वर लिङ्गके पीछे यहच्छेश्वर लिङ्ग हैं, इनका दर्शन करनेसे सर्व्वफल मिलता है। ग्रहेश्वरके दक्षिण उतथ्य वामदेवेश्वर और उनके दक्षिण कम्बलेश्वर और अश्वेश्वर नामक लिङ्गद्वय विराज रहे हैं और वहां जो एक विशुद्ध लिङ्ग हैं, उन्होंने नलकूबरसे पूजा पाई थी। उनके दक्षिण मणिकर्णिकेश्वर और पलितेश्वर लिङ्ग हैं और वहां जो जराचरेश्वर पीछे पापनाशन लिङ्ग हैं, उसके पश्चिम निर्झरेश्वर लिङ्ग हैं, इन लिङ्गके नैऋतकोणमें पितामहेश्वर लिङ्ग और पितामहस्रोतिकातीर्थ है; उस तीर्थमें श्राद्धकारी बहुफलदायक होता है। उसके दक्षिण बरुणेश्वर और दक्षिण वाणीश्वर नामक लिङ्ग विराज रहे हैं, पितामहस्रोतिकामें सिद्धिप्रद कुष्माण्डेश्वर, उनके पूर्व्व राजसेश्वर और उनके दक्षिण गङ्गेश्वर नामक लिङ्ग विराज रहे हैं। उनके उत्तर बहुविध निम्नगेश्वर लिङ्गका अधिष्ठान है। वहां जो वैवस्वतेश्वर लिङ्ग हैं; उनके दर्शनसे जीवका जमलोकगमन निवारित होता है। पीछे अदितीश्वर लिङ्ग और उनके सामने चक्रेश्वर नामक लिङ्ग विराज रहे हैं। उनके सामने जो कालकेश्वर नामक लिङ्ग हैं, जो अपने देहकी छाया दिखाकर जीवगणका विश्वास उत्पादन करते हैं। उनके सामने तारकेश्वर और तारकेश्वरके सामने स्वर्णभारेश्वर उत्तरमरुतेश्वर और मरुतेश्वरके सामने अक्रेश्वर लिङ्ग विराज रहे हैं। अक्रेश्वरके दक्षिण रम्भेश्वर और वहां जो अग्नीश्वर लिङ्ग विराजित हैं। उनके उत्तर लोकपालेश्वर और वहां जो नाग, यक्ष, गन्धर्व्व, किन्नर, अप्सरा और देवर्षियोंके स्थापित अनेक लिङ्ग हैं। अक्रेश्वरके दक्षिण पापापह फाल्गुनेश्वर और उत्तर द पाशुपतेश्वरके लिङ्ग हैं। उनके पश्चिम समुद्रेश्वर उत्तर ईशानेश्वर और उनके पूर्व्व ल[illegible]श्वर लिङ्ग हैं, जिनका दर्शन करनेसे जीवगण सर्व्वसिद्धिसम्पन्न होते हैं। जो रागद्वेषादि परिहारकर उनकी पूजामें मन लगाते हैं वह सर्व्वसिद्धि-

सम्पन्न होते और उन्हें मनुष्योंमें न गिनकर मैं निर्व्वाणपद प्रदान करता हूं। इन लाङ्गलीश्वरमें मधुपिङ्ग, श्वेतकेतु तापस हयको उस देहमें ही मैंने सिद्धि प्रदान की थी। इनके पास ही कपिलेश्वर और नकुलीश्वर विराज रहे हैं और उनके पास ही प्रीतिकेश्वर लिङ्ग है। इस लिङ्गके मेरे अत्यन्त प्रीतिकर होनेके कारण, यहां जो व्यक्ति मात्र एक उपवास करते हैं, वह शतवर्षाधिक उपवासका फल पाते हैं। जो व्यक्ति मेरे पर्व्वके दिन उपवासी रह इन प्रीतिकेश्वरमें रात्रिजागरण करते हैं, मैं उन्हें अनुचर बनाता हूं। जो उनके दक्षिण अवस्थित शुभोदकपुष्करिणीका जल पीते हैं, उन्हें फिर संसार-यातना भोगना नहीं पड़ती, उनके पश्चिम दण्डपाणिदेव काशीरक्षक हो अवस्थान करते हैं और उनके पूर्व्व तारेश्वर, दक्षिण कालेश्वर और उत्तर नन्दीश्वर लिङ्ग विराज रहे हैं, जो व्यक्ति श्रद्धापूत हृदयसे इस पुष्करिणीका जल पान करते, उनके हृदयमें पूर्व्वोक्त लिङ्ग विराजते हैं, सुतरां यह जल जिनके द्वारा पीत हो; वही कृतकृत्य होते हैं। अविमुक्तेश्वरके पास मोक्षेश्वर लिङ्गके दर्शनसे मोक्ष मिलता है। उनके उत्तर दयामय करुणेश्वर लिङ्ग हैं, उनके पूर्व्व स्वर्णाक्षेश्वर लिङ्ग हैं उन स्वर्णाक्षेश्वरके उत्तर ज्ञान-देश्वर लिङ्ग और सौभाग्यगौरी हैं, जिनकी पूजा करनेसे जीवको परम सौभाग्य लाभ होता है। विश्वेश्वरके दक्षिण प्रतिष्ठित निकुम्भेश्वर लिङ्गकी पूजा करनेसे देववासी मनुष्योंको शीघ्र मङ्गल मिलता है। उनके पीछे देव वघ्ननायक हैं, चतुर्थीको विशेष यत्नके साथ पूजा करनेसे सब विघ्न दूर होते हैं। निकुम्भेश्वरके अग्निकोणमें भगवान् विरु-पाक्षेश्वर अवस्थान कर लोगोंको सिद्धि-प्रदान करते हैं। उनके दक्षिण प्रतिष्ठित शुक्रेश्वर लिङ्गकी उपासना करनेसे पुत्र पौत्रादि लाभ होते हैं। शुक्रकूपके जलमें नहाये हुए व्यक्ति अश्वमेध यज्ञका फल पाते हैं। उनके पश्चिम भवानी प्रतिष्ठित लिङ्गद्वय भक्ताभिलाष पूर्ण करते हुए विराज रहे हैं। शुक्रेश्वरके पूर्व्व अलकेश्वर लिङ्गकी पूजासे विशेष फल मिलता है। वहीं मदालसेश्वर नामक लिङ्गद्वय विराजित हैं। श्रीरामचन्द्रने दशाननको निपातितकर इन उपरोक्त लिङ्गकी स्थापन किया था, उनके दर्शनसे सब विघ्न दूर होते और सब प्रकारकी सिद्धि मिलती है, ब्रह्महत्यादि पापसे भी मनुष्य मुक्त हो सकते हैं। यहां जीवगणके दूसरे एक पुण्यदायकने त्रिपुरान्तक लिङ्गकी उपासना की थी। उनके पश्चिम दत्तात्रेयेश्वर नामक लिङ्गद्वय विराज रहे हैं। उनके समीप एक सरोवर और उस पापापह सरोवरके पीछे ध्रुवेश्वर नामक लिङ्ग विराज रहे हैं। उनके पास ही ध्रुवकुण्ड

है इस कुण्डमें तर्पण करनेसे पितृगण परम सन्तोष पाते हैं। पैशाच पदनाशक पिशाचेश्वर लिङ्ग हैं, उनके समीप पितृकुण्ड है, वहां पितृगण पिण्ड पानेसे परम प्रसन्न होते हैं। ध्रुवेश्वरके पास तारेश्वर लिङ्ग हैं, उन्हें हो वैद्यनाथ कहते हैं। उनके सामने ही प्रियव्रतेश्वर नामक लिङ्ग स्थापित हैं, उनके दक्षिण मुचुकुन्देश्वर, पास ही गौतमेश्वर, पश्चिम भद्रेश्वर, दक्षिण ऋष्यशृङ्गेश्वर, विराजित हैं और उनके सामने ही ब्रह्मेश्वर, ईशानकोणमें पर्ज्जन्येश्वर लिङ्ग, पूर्व्व नहुषेश्वर लिङ्ग स्थापित हैं। सामने विशालाक्षीश्वर विराज रहे हैं। इनके दक्षिण जरासन्धेश्वर लिङ्गका दर्शनकर मनुष्य ज्वरमुक्त होते हैं, उनके सामने हिरण्यक्षेश्वर, पश्चिम गयाधीश्वर, पूर्व्व भगीरथेश्वर और उनके सामने दिलीपेश्वर नामक शिवलिङ्ग स्थापित हैं। ब्रह्मेश्वरके पश्चिम अवस्थित कुण्डमें स्नानकर वहांके लिङ्गके दर्शनसे परम अभीष्टलाभ होता है। वहीं विश्ववसुने एक लिङ्ग स्थापन किया है, उनके पूर्व्व मुण्डेश्वर, दक्षिण विधीश्वर, उनके दक्षिण वाजिमेधेश्वर लिङ्ग विराज रहे हैं। दशाश्वमेधमें नहाये हुए व्यक्ति द्वारा अवलोकित होनेपर वह दश अश्वमेधका फल देते हैं। उनके उत्तर मातृ तीर्थ है, वहां जो स्नान करते हैं, मातृगण उनपर प्रसन्न हो उनकी अभीष्ट सिद्धकर जठर यन्त्रणा दूर करती हैं। उस कुण्डके दक्षिण महालिङ्ग पुष्पदन्तेश्वर विराजित हैं, उनके अग्निकोणमें देवर्षिगणके स्थापित कितने ही लिङ्ग हैं, जो पुष्पदन्तेश्वरके दक्षिण स्थित सिद्धेश्वर लिङ्गकी पञ्चोपचारसे अर्चना करते हैं, उन्हें स्वप्नमें सिध्यादेश मिलता है। हरिश्चन्द्रेश्वरके सेवाकारी व्यक्ति राजा होते हैं, उनके पश्चिम नैऋतेश्वर उनके दक्षिण क्षेमेश्वर, उनके दक्षिण चित्राङ्गेश्वर और उनके दक्षिण केदारेश्वर लिङ्ग हैं, उनका दर्शन कर जीव शिवानुचर होते हैं। चन्द्रवंशीय और सूर्य्यवंशीय राजाओंने केदारेश्वरके दक्षिण कितने ही लिङ्ग स्थापित किये हैं। लोलार्कके दक्षिण अवस्थित आशाविनायक लिङ्गके दर्शनमात्रसे जीवकी आशा पूर्ण होती है। उनके पश्चिम वह्नफलप्रद करन्धमेश्वर लिङ्ग हैं। उनके पश्चिम महादुर्गा विराज रही हैं, वह भक्तोंकी दुर्गति दूर करती हैं उनके दक्षिण शुष्केश्वर लिङ्ग हैं, शुष्कानदीके सलिलसे उनकी अर्चना होती है। उनके पश्चिम जनकेश्वर उत्तर शङ्कुकर्णेश्वर और पूर्व्व सिद्धिदाता महासिद्धेश्वर लिङ्ग स्थापित हैं। सिद्धिकुण्डमें स्नात व्यक्ति द्वारा यह लिङ्ग अवलोकित होनेपर सर्व्वसिद्धि प्रदान करते हैं। वाङ्व्यननमा लिङ्ग शङ्कुकर्णेश्वरके वायुकोणमें हैं, उनके आगे विभाण्डेश्वर, उत्तर कहोलेश्वर और कहोलेश्वरके सामने ही हा-

रेश्वर लिङ्ग और द्वारेश्वरी शक्ति विराज रही हैं; उनके आराधक व्यक्ति क्षेत्रवास-जनित सिद्धि पाते हैं। वहां ही विविध अस्त्रधारणपूर्व्वक नाना रूपधारी प्रमथगण अवस्थानकर काशीकी रक्षा करते हैं। और वहीं कात्यायनेश्वर और हरिद्रीश्वर नामक लिङ्ग हैं, कात्यायनेश्वरके पीछे लाङ्गलेश्वर, उनके पीछे मुकुटेश्वर लिङ्ग स्थापित हैं, जो व्यक्ति वहांके मुकुटकुण्डमें स्नानकर एकमात्र मुकुटेश्वर लिङ्गका दर्शन करते हैं,उन्हें सर्व्वलिङ्गयात्राका फल मिलता है, यहां योगाभ्यास या तपस्या करनेसे परम सिद्धि लाभ होती है। हे प्रिये! यहां शतसहस्र लिङ्गके विराजमान रहनेके कारण काशीमें यह स्थान मेरा अति प्रीतिदायक और यहां अपने प्रिय पञ्चायतनमें मैं सृष्टिस्थिति और प्रलय सब समयमें ही अवस्थान करता हूं। हे प्रिये! जो व्यक्ति यह विषय जानते हैं, पापराशि कभी उन्हें पीड़ादायक नहीं होती; मैं सत्य कहता हूं, जिन्हें शिवलोकमें आनेका अभिलाष है, उन्हें सर्व्वतोभावसे वहां आना कर्त्तव्य है। मैंने तुमसे संक्षेपमें इन लिङ्गकी बात कही, इनमें कितने ही लिङ्ग दो तीनबार प्रतिष्ठित हुए हैं। यह सत्य है, कि मैंने यह सब बातें नहीं कहीं, किन्तु उन सब नामोंसे उनकी पूजा भी करना चाहिये। यह सब लिङ्ग कूप, वापी और कुण्डादि जो कुछ मुझसे सुना, सुकृति मनुष्योंको इन सबके ऊपर श्रद्धावान् होना विधेय है। इनके दर्शनसे उत्तरोत्तर समधिक फल पाया जाता है। काशीमें जितने लिङ्ग, कूप, सरोवर, वापी या देवमूर्तियां हैं, उनकी गणना कोई कर नहीं सकता। दूसरे जगहके देवगणका अपेक्षा काशीस्थ तृणादि प्रभृति परम श्रेष्ठ हैं, कारण, इन्हें फिर जन्म लेना नहीं पड़ता। काशी ही सर्व्वलिङ्गमयी और सर्व्वतीर्थमयी है; काशीका दर्शन करनेसे स्वर्गलोकमें वास होता और चरमकालमें सेवा करनेसे निर्व्वाणपद लाभ होता है। हे प्रिये! मैंने बहुत योगसाधनसे तुम्हें प्रियतमा-रूपमें लाभ किया, किन्तु सुखकी जन्म-भूमि देवी काशी स्वाभाविक ही मेरी प्रियतमा हैं। हे देवि! जिनके कण्ठसे काशीधाम उच्चारित होता है या जो काशीकी प्रशंसा करते हैं, उन अपने भक्त और अपने सेवकोंको मैं शाख, विशाख, स्कन्द, नन्दी और गणेशके समान समझता हूं। काशीवासी ही मुमुक्षु है; बहुत तपस्या और बहुत दान, बहुत व्रत करनेसे ही मनुष्य काशीवासी होते हैं। जो आनन्दधाममें अवस्थान करते, उनका सब तीर्थोंमें स्नान, सब यज्ञमें दीक्षा और सब व्रतोंका उद्यापन हो चुका। जो देव, दानव, नाग और मनुष्यगण अन्तिमकाल काशीमें वास नहीं करते, उन्हें भूमिका भारस्वरूप समझना उचित है। अन्य-

स्नानीय वेदज्ञ ब्राह्मणकी अपेक्षा काशीस्थ चाण्डाल भी प्रशंसनीय होता है, कारण, यह चाण्डाल भवसमुद्रसे पार हो बारबार सन्त्राणकारी ब्राह्मणको नीच बनाता है। जो काशीमें मरकर देह धारण करते हैं, उन्हींको सर्व्वज्ञ और बहुदर्शी कहा जाता है। जो मनुष्य इन सब तीर्थोंका रहस्यमय पवित्र अध्याय सुनते हैं, उन्हें काशीसन्दर्शनजनित पुण्यलाभ होता और नित्य प्रभातमें इस अध्यायका पाठ करनेसे सर्व्वतीर्थ दर्शनका पुण्यसञ्चित होता है। जो सुकृती इस लिङ्गात्मक अध्यायका जप करते हैं, कभी उन्हें यमदूत या पापसे किसी तरहका भय नहीं रहता। पवित्र हो एकाग्रचित्तसे इस अध्यायका जप करनेपर ब्रह्मयज्ञका फल मिलता है। इस अध्यायपाठकारी मनुष्योंको सर्व्ववापीमें जलपानका और सर्व्वलिङ्गकी आराधनाका फल सञ्चित होता है। इस अध्यायका पाठ करना मेरे भक्तोंका कर्त्तव्य है, कारण, दूसरे क्षुद्र और स्वल्पफलदायी स्तवादिसे विशेष कोई प्रयोजनसिद्धि नहीं होती। एकबार मात्र इस अध्यायके पढ़नेसे जो पुण्य होता है, सन्देह है, कि काशीमें बहुत महादान करनेसे भी वैसा पुण्य मिला है, या नहीं। सब लिङ्गोंका दर्शन और सब तीर्थोंमें स्नानसे जैसा पुण्य होता है, इस अध्यायके पढ़नेसे भी मनुष्योंके लिये वही पुण्यसञ्चय होता है। इस काशी-लिङ्गावली नामक अध्यायका अध्ययन ही महातपस्या और महाजपके समान मिलिष्ट है। मैं कहता हूं, जो मनुष्य इस अध्यायको पढ़ेंगे उनकी ब्रह्महत्या, अगम्यागमन अभक्ष्यभक्षण, गुरुपत्नीगमन, अभिचार, स्वर्णचौर्य्य, पितृमातृहत्या भ्रूणहत्या प्रभृति देह मन और वाक्य द्वारा ज्ञान और अज्ञान दशामें सञ्चित महापातक उपपातकादि रहनेसे उस मुहूर्त्तमें ही वह विनष्ट होते हैं। इस अध्यायके पाठकारी व्यक्तिको पुत्रपौत्र—धन, धान्य, स्त्री, क्षेत्र, स्वर्ग, और मोक्ष प्रभृति जो कुछ अभिलषित होगा, वह निश्चय ही प्राप्त होगा। महादेव भगवतीसे यह सब विषय कह रहे थे, इसी समय नन्दिकेश्वरने वहां आ प्रणामकर कहा, हे नाथ! महाप्रसाद निर्म्मित हुआ है, सामने यह सज्जीकृत रथ भी है, ब्रह्मादि देवगण आये हैं, गरुड़ध्वज भगवान् विष्णु महामुनिगणको साथ ले स्वानुचरवर्गके साथ आ द्वारदेशमें आपकी प्रतीक्षा करते हैं। चतुर्द्दशभुवनस्थित सब साधुगण आपका प्रावेशिक महोत्सव सुन यहां आये हैं। कार्त्तिकेयने कहा, नन्दीकी ऐसी बात सुनते ही हरपार्व्वतीने उस रथपर आरूढ़ हो त्रिविष्टपसे प्रस्थान किया।

सप्तनवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९७ ॥

अष्टनवतितम अध्याय ।

मुक्ति-मण्डपप्रवेश ।

व्यासने कहा, हे महात्मन् सूत ! स्कन्दने प्रश्नकर्त्ता अगस्त्यसे महादेवकी उत्सवविधायिनी जो सब वाक्परम्परा कीर्त्तन की थी, वह सब कहता हूं, सुनो । स्कन्दने कहा, हे महाप्राज्ञ अगस्त्य ! त्रैलोक्यका आनन्दकर सर्व्वपापनाशक महादेवके वाराणसीप्रवेशका वृत्तान्त सुनो । चैत्रमासकी शुक्ल त्रयोदशीको महेश्वर, मन्दरपर्व्वतसे वाराणसी आ असीम आनन्दलाभ करते हुए इधर उधर विचरण करने लगे । फिर मोक्षलक्ष्मीके विलासभवनसदृश प्रासादके सम्पूर्णरूपसे निर्म्मित होनेपर, कार्त्तिकमासीय अनुराधानक्षत्रान्वित शुक्लप्रतिपदको अश्विके समराशिस्थित और दूसरे शुभ ग्रहोंके उच्चस्थानमें अवस्थित होनेपर भगवान् महादेव, त्रिलोचन पीठसे अन्तर्गृहमें प्रविष्ट हुए । उसी समय देववादित्रनिचय ध्वनित होने लगी, दिङ्मण्डल प्रशान्त हुआ और ब्राह्मणवदनोच्चारित रमणीय वेदध्वनिसे अन्य शब्द पराभूत हो आकाशमण्डल परिपूरित हुआ । हे कुम्भसम्भव ! महेश्वरके प्रासादमें प्रवेशके समय जो मङ्गलवाद्य हुए थे, उससे भूर्लोक, भूवर्लोकका मध्यभाग सम्यक् व्याप्त हुआ था । उस समय सब लोग नितान्त आनन्दित हुए थे । गन्धर्व्वनिकर मङ्गलसङ्गीत, अप्सरागण नृत्य और सिद्धचारणगण मनोहर स्तुति पढ़ने लगी । देवगणको अतुल हर्ष हुआ उस समय चारो ओर सौरभमय वायु प्रवाहित होती थी । घनमण्डलीने गगनसे कुसुम वर्षण किया और सब प्रकारके स्थावर और जङ्गमगण मङ्गलमय वेश और यथासम्भव मङ्गलरावकर परमानन्दसागरमें स्नान करते थे । हे ऋषि ! उस समय निखिल देव, दानव, गन्धर्व्व, नाग, विद्याधर, साध्य, किन्नर और नर-नारीगणके प्रतिपदमें धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष निर्व्विघ्नसे उदित हुआ था । हे मुने ! उस समयके धूपोद्गत धूमसमूहसे गगनमण्डलने जो कृष्णवर्ण धारण किया था, आज भी उसमें वही कृष्णता विराजमान है । तात्कालिक नीराजन निमित्त जो सब दीप ज्वालित हुए थे, उन दीपोंकी ज्योति ही इस समय भी आकाशमण्डलमें नक्षत्ररूपसे शोभमान हैं । उस समय सब गृहोंके ऊर्द्धभागमें हो विचित्रवर्ण केतनसमूहने पवनवेगसे सुमन्द आन्दोलित हो मनोहर शोभा सम्पादन किया था और सब मन्दिरोंकी पताकाशिकरकी उज्ज्वलता जाज्वल मान हुई थी । कहीं गायकगण उत्कृष्ट गान, कहीं नर्त्तकीगण मनोहर नृत्य करते थे । कहीं चतुर्व्विध वाद्य वादित होते, चन्दनरससे प्रति पथकी मट्टी पिच्छिल हुई थी । उस समय समुदय प्राङ्गणभूमि ही हरित, श्वेत, मा-

ष्मिष्ठ, नील, पीत और वर्ण्य (?) वर्ण कुसुम-समूहके निर्मित माल्यसे सुशोभित हुई थी। गोपुरके आगे रत्न और मणिनिबद्ध कृत्रिम शोभा दे रहे थे। सुधाधवलित हर्म्यमाला उस दिनसे ही सौधनामसे अभिहित हुई। हे कुम्भयोने! जो सब द्रव्य चेतनाविहीन थी, वह भी उस समय मानो चेतनावानकी तरह शोभा पाती थी। विश्वमें जितने प्रकारके मङ्गलद्रव्य कीर्त्तित हैं, उन सबने मानो उस दिन जगतमें अभिनव जन्मग्रहण किया था। इस तरह महा समारोह देखते देखते भगवान् महादेव मुक्तिमण्डपमें प्रविष्ट हुए। फिर भगवान् महेश्वर कुमारनिकरसे परिवेष्टित हो भवानीके साथ उत्कृष्ट आसनपर आसीन हुए, भगवान् कमलयोनिने महर्षिवृन्दके सहित समवेत हो उनका शुभ अभिषेक कार्य्य सम्पन्न किया। फिर देवगण, महोरगगण, समुद्रचतुष्टय, पर्व्वत और दूसरे पवित्र जीवनिचयने असंख्य रत्न, वस्त्र, विविध विचित्र माला और असाधारण गन्धद्रव्य द्वारा महेश्वरकी पूजा की और ब्राह्मी आदि मातृगणने उनकी आरति की, फिर समस्त सुरसमूहके पूज्य महेशानने पहले सब मुनीन्द्रगणको उनकी मनोवृत्तिके अनुकूलभावसे सम्भाषणके उपरान्त विहित समादरसे ब्राह्मणोंसे सम्भाषणकर अत्यन्त सम्मानके साथ, "मेरे समीप अवस्थान करो" कह नारायणकी समस्त देवगणके सामने प्रशंसाकर कहा, हे विष्णो! मेरी समुदय प्रभुताके तुम्हीं एक मात्र निदान हो। तुम दूर अवस्थित रहकर भी सदा ही मेरे समीप वर्त्तमान रहते हो। तुम्हारे सिवा मेरा कार्य्य करनेमें कोई सक्षम नहीं है। तुमने ही दिवोदास नृपतिको ऐसा उपदेश दिया था, कि उपदेशबलसे ही उन्हें परम असाधारण सिद्धिलाभ हुई और हमलोगोंका भी अभिलषित सिद्ध हुआ है। हे विष्णो! तुम अपने अभिलषित वरकी प्रार्थना करो। ऐसा कोई पदार्थ नहीं है, जो मैं तुम्हें देनेमें असमर्थ हूं। मैंने जो फिर यह आनन्दकानन पाया, उसके तुम और यह गणपति ही प्रधान कारण हैं। हे नारायण! जहां पञ्चत्व लाभ करनेसे फिर संसारमें प्रत्यावर्त्तन करना नहीं पड़ता, ब्रह्मरसायनकी आकरस्वरूप परम सौख्यभूमि यह काशी मुझे जैसी प्रिय है, यह निश्चय समझो, कि त्रैलोक्यमें मेरा वैसा प्रियस्थान कोई नहीं है। भगवान् विष्णुने वरद महादेवकी ऐसी बातें सुनकर कहा, हे प्रभो! पिनाकपाणे, आप यदि मेरे प्रति प्रसन्न हुए हैं, तो यह वरदान करिये, कि कभी मैं आपके चरणकमलसे दूर अवस्थान न करूं। विष्णुकी बात सुन महेश्वरने परितुष्ट हो कहा, मधुसूदन! इस काशीक्षेत्रमें तुम सदा मेरे पास रहोगे। हे विष्णो! जो मेरे असाधारण भक्त भी

बिना तुम्हारी पूजा किये मेरी पूजा करेंगी, उनकी वाञ्छितसिद्धि न होगी। इस मुक्तिमण्डपमें वास करनेसे जीव सदा जो आनन्द-उपभोग कर सकते हैं, कैलास पर्व्वतपर भी भक्तोंको क्या वैसा सुख सम्भव है? जो नर निमेष परिमित काल भी अचञ्चलचित्तसे मेरे इस दक्षिण मण्डपमें अवस्थिति करें, वह गाढ़भक्तिपूर्ण अनन्यचित्त मनुष्यगण फिर कभी जरायुवास यन्त्रणा न भोगेंगे। यावत्तीर्थके मुकुट-स्वरूप चक्रतीर्थमें स्नानकर संयतमानससे जो क्षणकालमात्र भी मुक्तिमण्डपमें अव-स्थान करेंगे, वह समस्त दुष्कृतिसे मुक्ति लाभकर मेरे पारिषद्‌ होनेमें सक्षम होंगे। इस मुक्तिमण्डपमें अवस्थिति करते हुए क्षणकाल मात्र भी भक्तिपूर्व्वक मेरा स्मरण, यथाशक्ति दान और पवित्र कथा स्मरण करेंगे, वह निश्चय ही कोटि गोदानका फल लाभ करेंगे। हे उपेन्द्र! जो नरगण मणिकर्णिकामें स्नानकर क्षणकाल भी इस मुक्तिमण्डपमें वासकर मेरा स्मरण करेंगे, उन्हें निश्चय ही सर्व्वप्रकारकी तपस्या और सर्व्वतीर्थावगाहनका सम्पूर्ण फल प्राप्त होगा। हे विष्णो! इस अविमुक्त क्षेत्रमें यद्यपि प्रतिपदमें ही अनन्त तीर्थ हैं, तथापि वह समस्त तीर्थ एकत्र होकर भी मणिकर्णिकाकी तुल्य भी नहीं सकते। यहां ऐसे असीम पवित्र मण्डपोंके वर्त्तमान रहने-पर भी यह मुक्तिमण्डप सर्व्वापेक्षा श्रेष्ठ है; कारण, यह साक्षात् मुक्तिका आश्रय-स्थान है। हे हरे! द्वापरयुगमें यह "मुक्ति-मण्डप" कुक्कुटमण्डपके नामसे विख्यात होगा। नारायणने कहा, हे प्रभो! त्रिनेत्र! आपने जैसा कहा, किस लिये द्वापरयुगमें यह मुक्तिमण्डप कुक्कुटमण्डपके नामसे विख्यात होगा? दयाकर वह मुझसे कहिये। महादेवने कहा, हे नारा-यण! भविष्यत् द्वापरयुगमें कहीं महा-नन्द नामक एक ब्राह्मण उत्पन्न होगा। वह ऋगवेदाध्यायी, तीर्थ प्रतिग्रहसे निरत, दम्भशून्य, सरलान्तःकरण और सदा अति-थिप्रिय होगा, फिर वह यौवनागममें अपने जनककी मृत्युके उपरान्त कामशरसे व्यथित हो कुपथमें पदविक्षेप करेगा और किसी व्यक्तिके साथ वञ्चनाकर उसकी भार्य्याहरण करेगा। ब्राह्मण महानन्द उस कुलटाके जालमें पतित हो अपेय पान और अखाद्य भोजनमें प्रवृत्त होगा। इस तरह कुत्सित आचारसे सर्व्वस्वान्त और धनलोभसे धनी वैष्णवोंको देखकर शैवकी निन्दा और आढ्य-पाशुपतको देखकर उसके पास शिवस्तावक हो वैष्णवके निन्दा-वादमें प्रवृत्त होगा। वह महानन्द सन्ध्या-स्नानादिवर्ज्जित पाषण्डधर्म्मग्रस्त, विपुलतिल-कलाञ्छितकपाल, माल्यधारी, धौतवस्त्र-परिधायी और लम्बितशिखाशोभितशीर्ष हो अत्यन्त कपटताके साथ असत् प्रतिग्रहनिरत होगा। समयसे उस दुरात्माके दो सन्तान

उत्पन्न होंगी; इस तरह शठता द्वारा महानन्द दिन बितायेगा। इसी समय पर्व्वतदेशसे तीर्थयात्राके निमित्त एक धनी काशीमें समागत होगा। वह धनी चक्र-सरोवरमें स्नान करनेके उपरान्त कहेंगे, मेरे पास कुछ धन है, मैं उस धनको दान करूंगा, किन्तु मैं चाण्डालजाति हूं; ऐसे कोई ग्राहक हैं, जो मेरा यह धन प्रतिग्रह कर सकें? उसको ऐसी बात सुन कोई व्यक्ति उंगली निर्द्देशकर महानन्दको दिखा कहेगा, "वह व्यक्ति उपविष्ट हो जप करता है, यही तुम्हारा धन ग्रहण करेगा, और कोई न लेगा।" यह बात सुन वह चाण्डाल महानन्दके पास उपविष्ट हो दण्डवत् प्रणामकर कहेगा, "हे महाविप्र! मेरे पास यहां जो कुछ धन है, आप उसे ग्रहणकर मेरी तीर्थयात्रा सफल और मुझे उद्धार करिये।" फिर शठ महानन्द जपमाला श्रवणदेशमें विलम्बित और ध्यान परित्यागकर उंगली दिखा पूछेगा, "तुम्हारे पास कितना धन है?" चाण्डाल उसकी संज्ञाका अर्थ जान प्रफुल्लान्तःकरणसे कहेगा, "जितना धन पानेसे आप सन्तुष्ट होंगे, मैं आपको उतना ही दूंगा," महानन्द उसकी बात सुन मौनत्यागकर अतिशय आनन्दके साथ कहेगा, "यद्यपि मैं प्रतिग्रहस्पृहारहित हूं, तथापि तुम्हारे प्रति अनुग्रह प्रयुक्त ऐसा करनेपर प्रस्तुत हूं। जो मैं कहूं, यदि तुम वैसा ही करो, तो मैं तुम्हारा प्रतिग्रह करनेमें स्वीकृत हूं; तुम्हारा जितना धन है, उसमें थोड़ा भी यदि दूसरेको न देकर सब मुझीको दो, तो तुम्हारा प्रतिग्रह करूंगा।" फिर चाण्डाल कहेगा, 'हे विप्र! विश्वेश्वरकी प्रीतिके निमित्त मैं जितना अर्थ ले आया हूं, वह सब आप हीको दूंगा; कारण, आप ही मेरे लिये विश्वेश्वर हैं। हे द्विजोत्तम! इस विश्वेश्वरकी राजधानीमें जो वास करते हैं, वह चाहे क्षुद्र हों या महान्, इसमें सन्देह नहीं, कि सभी विश्वेश्वरके रूपान्तर हैं। जो पराथीका उद्धार करते हैं परार्थीकी इच्छा पूर्ण करते हैं और परोपकारनिरत हैं; वही तो विश्वेश्वरके अंश हैं, इसमें सन्देह ही क्या है?" ब्राह्मण महानन्द ऐसा विनीत वाक्य सुनकर अतिशय आनन्दिता-न्तःकरणसे उस पर्व्वतवासी अन्त्यजसे कहेगा, "तब आओ, कुशग्रहणपूर्व्वक शीघ्र दान करो" तब वह पर्व्वतवासी चाण्डाल "हां ऐसा ही करता हूं" कह "विश्वेश्वर प्रसन्न हों" ऐसा उच्चारण करता हुआ सङ्कल्पित अर्थ ब्राह्मणको दानकर अपने स्थानको प्रस्थान करेगा। महानन्द दूसरे ब्राह्मणों द्वारा निन्दित हो, इस काशीमें ही वास करेगा। इस काशीमें जब वह, बाहर निकलेगा, तभी लोग उसकी निन्दा करेंगे, कि यह ब्राह्मण, चाण्डालब्राह्मण है, इसने चाण्डाल प्रति-

ग्रह किया है. यह व्यक्ति ही सर्व्वलोक-निन्दित चाण्डालतुल्य ब्राह्मण है।" वह जहां जायगा नगरवासी मनुष्यगण ऐसा कहते हुए उसका अनुसरण करेंगे। फिर महानन्द काकभीत उलूककी तरह पुरवासियोंके भयसे फिर गृहके बाहर न निकलेगा और लज्जासे सदा उसका वदन विनत रहेगा। बाराणसीधाममें इस तरह अपमानित और अतिमात्र लज्जित महानन्द, एक दिन उस उपपत्नीके साथ परामर्शकर गयाकी ओर जायगा। वहां जानेके समय पथमें कितने ही लोगोंके बीचमें रहनेपर भी महानन्द अवरोधकारी दस्युगणसे बहु-धनशाली होनेके कारण स्थिरीकृत होगा। तब दस्युगण परिचारकसहित महानन्दको बलसे वनमें ले जा उसका सब धन हरण-कर मन्त्रणा करेंगे, कि "देखो भ्रातृगण! यह विपुल अर्थराशि ले छिपा रखना सहज नहीं है, तब इसे मार डालनेसे स्वच्छन्दसे यह छिपाया जा सकता है; अतएव परिचारकोंके सहित यत्नके साथ इसका विनाश किया जाय।" दस्युगण ऐसा निश्चयकर उससे कहेंगे "अहो पथिक! तुम जो कुछ स्मरण करनेकी इच्छा करो इस समय उसे स्मरण कर लो, हमलो-गोंने स्थिर किया है, कि अभी परिचार-कोंके सहित तुम्हें निहत करेंगे।" दस्यु-गणकी बात सुन महानन्द मन ही मन चिन्ता करेगा, कि "हाय! मैंने जिसके लिये चाण्डालसे विपुल अर्थ प्रतिग्रह किया; मेरा वह कुटुम्ब विनष्ट हुआ। मेरा धन ग्रहण वृथा हुआ, मेरा जीवन भी विनष्ट हुआ! हाय! मैं काशीमें अवस्थान करने न पाया। हाय! मेरी दुर्व्वुद्धिवश युगपत् सभी विनष्ट हुआ। असत्प्रतिग्रहदोषसे काशीमें भी मेरी मृत्यु न हुई।" मरनेके समय कुटुम्ब और काशीस्मृति होनेसे उसके फलसे महानन्द दस्युगण द्वारा निहत होकर भी दूसरे किसी नरकका भागी न हो कीकट अर्थात् मध्यदेशमें कुक्कुट होकर जन्मग्रहण करेगा और उसके सन्तानदय भी उसीके औरससे कुक्कुट हो जन्म लाभ करेंगे। किन्तु मृत्युके समय काशीस्मर-णजनित सुकृतप्रभावसे जन्मवृत्तान्त स्मृतिपथारूढ़ रहेगा। इस तरह बहुत काल बीतनेपर उसके गयायात्राके सङ्गि-गण, जहां कुक्कुट हो वह चारो विचरण करते थे, उसी पथसे प्रत्यागत होंगे। सह-यात्रिगण उच्चस्वरसे परस्पर काशीकी कथा कहते जायेंगे। उनके मुंहसे काशीकथा सुन वह कुक्कुटचतुष्टय पूर्व्वजन्मके तवतकका वृत्तान्त उत्तमरूपसे स्मरण करनेमें समर्थ होंगे और तत्क्षणात् कीकट परित्यागकर उनके साथ बाराणसीयात्रा करेंगे। तीर्थ-यात्रि पथमें उन्हें आते देख नित्य तण्डु-लादि दे उनके जीवनकी रक्षा करते हुए

निर्द्दिष्टकालमें उन्हें काशी ही आवेंगी। फिर कुक्कुटचतुष्टय काशीमें आ इस परम पवित्र मुक्तिमण्डपकी चारों ओर विचरण करेंगे। वह कुक्कुटचतुष्टय त्यक्ताहार, नियमी, कामक्रोधशून्य, स्मितपूर्व्वाभिभाषी, लोभ-मोहशून्य, स्नानाह्निकेप्सु, मन्त्रामोच्चारण-निरत, सद्वार्त्ताश्रवणासक्त, सद्गतमानस, क्षेत्रवासी, मेरे भक्तगणका दर्शन करेंगे, उनके प्रति यथाशक्ति समधिक सम्मान प्रदर्शन करेंगे। "पूर्व्वजन्मके संस्कारसे यह कुक्कुटचतुष्टय इस प्रकार सद्वृत्ति हुए हैं" वहांके लोग ऐसी चिन्ताकर उनके प्रति यथासाध्य यत्न करेंगे। इस तरह कुछ दिन बीतनेपर, वह कुक्कुटचतुष्टय क्रम क्रमसे लघु भोजनकर प्राणत्याग करेंगे। हे नारायण! तब सब लोगोंके सामने हो एक दिव्य विमान उपस्थित होगा, वह उस विमानपर आरोहणकर मेरी बातसे कैलास जा बहुकाल दिव्यभोगसमूह उपभोगकर पश्चात् पृथिवीमें जन्मग्रहण करेंगे और उसी जन्ममें परमज्ञान लाभकर निर्व्वाणमुक्ति पावेंगे। इसलिये द्वापरके मनुष्योंद्वारा उसी दिनसे यह मुक्तिमण्डप, कुक्कुटमण्डप नामसे अभिहित होगा। जो मनुष्य इस मुक्तिमण्डपमें आ उन कुक्कुट-चतुष्टयका चरित स्मरण करेंगे, वह भी उत्कृष्ट श्रेयोलाभ करेंगे। भगवान् त्रिलोचन जिस समय नारायणसे यह भविष्यत् वृत्तान्त कह रहे थे, उसी समय घण्टा-समूहकी शब्दकी तरह विशालशब्द सुनाई दिया। तब देवदेव शङ्करने नन्दीको बुलाकर कहा, हे नन्दिन्! शीघ्र जाकर देखो, क्यों हठात् ऐसी ध्वनि समुद्भूत हुई। नन्दीने जा वृत्तान्तसे विदित हो आकर प्रणामपूर्व्वक हृष्टमुखसे हाथजोड़ निवेदन किया हे देवादिदेव! विभो! एक अनिर्व्वचनीय आश्चर्यकी बात कहता हूं, सुनिये। हे देव! इस धाममें मोक्षलक्ष्मीका विलासोदय देख कितने ही लोग विपुल कोलाहलके साथ उनकी पूजा करते हैं। फिर महेश्वरने स्मितके साथ कहा, नन्दिन्! हमलोगोंकी इच्छा सफल हुई है। तब देवादिदेव शङ्कर उठकर देवी पार्व्वति, नारायण और ब्रह्माके साथ रङ्गमण्डपमें प्रविष्ट हुए। कार्त्तिकेयने कहा कुम्भयोने! परमानन्दनिदान इस अध्यायके सुननेसे, मनुष्य अतुल आनन्दलाभ करते और मरणके अन्तमें निःसंशय ही कैलास जाते हैं।

अष्टनवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९८ ॥

नवनवतितम अध्याय।

विश्वेश्वरलिङ्ग-माहात्म्य-कीर्त्तन।

व्यासने कहा, हे सूत! कार्त्तिकेयने अगस्त्यसे देवदेव परमात्मा विश्वेश्वरका जैसा चरित्र कीर्त्तन किया था, मैं वह कहता हूं सुनो। अगस्त्यने कहा, हे कार्त्तिकेय!

यह कहिये, कि देवाधिदेव शूलपाणिने देवगणके साथ मुक्तिमण्डपसे निकलकर क्या किया। स्कन्दने कहा, ब्रह्माविष्णुके साथ भगवान् महेशने मुक्तिमण्डपसे शृङ्गारमण्डपमें उपस्थित हो जो किया था, वह कहता हूं, सुनो। देवदेव महादेवने, शृङ्गारमण्डपमें भगवती और हमलोगोंके साथ 'पूर्व्वास्य हो उपवेशन किया, ब्रह्मा उनके दक्षिणपार्श्व और विष्णु वामपार्श्वमें आसीन हुए ; इन्द्र उन्हें वीजन करने लगे। मुनिगण उन्हें चारो ओरसे घेरके बैठे; पीछे प्रमथ समूह अस्त्रशस्त्रहस्तसे नीरव हो अवस्थान करने लगे। महेश्वरने इस तरह अत्यन्त मानसे सेवित हो दक्षिण बाहु उठा ब्रह्मा और विष्णुको विश्वेश्वर लिङ्गका दर्शन करा कहा, "देखो, देखो यह लिङ्गकी सर्व्वोत्कृष्ट ज्योति, यही श्रेष्ठोंसे श्रेष्ठतर, यही सिद्धिदायक मेरे स्थावरस्वरूप, यही शैवसम्प्रदाय सिद्ध, यह बाल्यसे ब्रह्मचर्य्यनिरत, इन्द्रियविजयी, तपस्यानिरत, पञ्चार्थज्ञानविधौतमल, भस्मशायी, दमगुणयुक्त, सत्स्वभाव, ऊर्द्ध्वरेताः, सर्व्वदातद्गतमानसे लिङ्ग पूजामें आसक्त, अनवरत वारुण और आग्नेय स्नानसे निर्म्मल, कन्दमूलफल भोजी, परमतत्त्वदर्शी, सत्यभाषी, क्रोधशून्य, मोहवर्ज्जित, परिग्रहविहीन, निरीह, प्रपञ्चशून्य, आतङ्कविहीन, निरामय, ऐश्वर्य्यभागी, निश्चेष्ट, सङ्गपराङ्मुख, निर्म्मलान्तःकरण, संसारानासक्त, निर्व्विकल्प, निष्पापी, निर्द्वन्द्व, अर्थनिश्चयवान् और अहङ्कार वर्ज्जित हैं। मेरे पुत्र भी अत्यन्त प्रियपात्र और मेरे स्वरूप हैं। मेरे उपासकगण मेरी तरह इनकी पूजा और इन्हें नमस्कार करें। इसमें सन्देह नहीं, कि इन लोगोंकी पूजा करनेसे मैं प्रसन्न हूंगा। विश्वेश्वरके इस क्षेत्रमें मनुष्य सदा शिवयोगिगणको भोजन करावें। एक एकको भोजन करानेसे कोटिजनको भोजन करानेका फल मिलेगा। यह मेरे स्थावर आत्मा विश्वेश्वर जगत्प्रभु और भक्तगणके सर्व्वप्रकार सिद्धिविधायी हैं। हे सुरगण! मैं इस आनन्दकाननमें अपनी इच्छाके अधीन हूं ; कभी लोगोंकी दृष्टिसे गोचर, कभी उनके अगोचर हो अवस्थिति करता हूं, किन्तु उपासकगणकी अनुग्रहके निमित्त मैं लिङ्गरूपमें सदा यहां अवस्थानकर उनका मनोवाञ्छित पूर्ण करता हूं। स्वयम्भू और अस्वयम्भु जो समस्त लिङ्ग यहां हैं, वह समुदय लिङ्ग सदा इन लिङ्गका दर्शन करते आते हैं। मैं सब लिङ्गोंमें कृतप्रतिष्ठ हूं, किन्तु यह लिङ्ग ही मेरी श्रेष्ठमूर्त्ति है। जो श्रद्धाके साथ शुभनयनसे मेरे इन लिङ्गका दर्शन करते हैं, हे देवसमूह! वह मेरा ही दर्शन करते हैं। सब ऋषि और देवगण सुनें ; इन लिङ्गका नाम सुननेहीसे क्षणकालमें आजन्मार्ज्जित दुरित निचय विध्वस्त होता

है। इसमें संशय नहीं, कि इन लिङ्गका स्मरण करनेसे मेरे वाक्यसे. दो जन्मका अर्ज्जित पाप उसी क्षण विनष्ट होता है। इन लिङ्गकी दर्शनोद्देशसे वहिर्गत होनेके समय ही तीन जन्मकृत पाप विध्वस्त होता है। हे देवगण! इन लिङ्गका दर्शन करनेसे मेरी अनुकम्पासे शत अश्वमेध यागका पुण्य मिलता है। हे अभरनिकर! विश्वेश्वर नामक मेरे इन लिङ्ग स्वयम्भुके स्पर्श करनेसे सहस्र राजसूय यज्ञका फल मिलता है। भक्तिके साथ इन लिङ्गको एक गण्डूष जल और पुष्पमात्र दान करनेसे शत सौवर्णिक श्रेय लाभ होता है। भक्तिपूर्व्वक इन लिङ्गराजकी पूजा करनेसे सहस्र स्वर्णशतदल द्वारा पूजा करनेसे जो फल होता है, वही फल लाभ होता है। पञ्चामृत द्वारा स्नान करा इन लिङ्गकी महती पूजा करनेसे पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध होता है। हे देवगण! वस्त्रपूत सलिल द्वारा मेरे लिङ्गको स्नान करा सत्पुरुष सहस्र अश्वमेधयज्ञसम्भूत सुकृत भाजन होते हैं। भक्तिपूर्व्वक सुगन्धि चन्दन द्वारा इन लिङ्गको अनुलिप्त करनेसे अमरनारी द्वारा सौरभमय यक्षकर्द्दमसे मनुष्य विलेपित होते हैं। इन लिङ्गको सुगन्धधूप दान करनेसे मनुष्य ज्योतिरूप विमानगामी होते हैं। इन लिङ्गको भक्तिपूर्व्वक कर्पूरवर्त्ति प्रदान करनेसे कर्पूरवत् शुभ्रशरीर और कपालमोचन होता है। इन लिङ्गको नैवेद्य दान करनेसे प्रति सिक्थमें युगपरिमित काल महाभोगवान् हो कैलासवास करते हैं। जो मनुष्य विश्वेश्वरको घृत और शर्करायुक्त पायसान्न दान करते हैं, उनके द्वारा त्रैलोक्य तर्पित होता है; जो मनुष्य, विश्वेश्वरको मुखवाद्य, दर्पण, मनोज्ञ चामर, उल्लोच और सुखद पर्य्यङ्क दान करते हैं, उनका सुमहत् सुकृत होता है। समुद्रस्थित रत्नराशिकी किसी प्रकार संख्या की जा सकती है, किन्तु विश्वेश्वरोद्देशसे मुखवाद्यादिदाताको जो असीम पुण्य होता है, किसी तरह उसकी संख्या की जा नहीं सकती। जो मनुष्य भक्तिके साथ विश्वेश्वरको घण्टा और लड्डुक आदि पूजाकी उपकरण सामग्री दान करते हैं, वह यहां मेरे निकट वास करनेमें समर्थ होते हैं। जो व्यक्ति मेरे सन्तोषसाधनोद्देशसे गान, वाद्य या नृत्य करते हैं, उनके सामने अहोरात्र तौर्य्यत्रिक प्रवृत्त होता है। जो मेरे इस प्रासादमें चित्रकर्म्म अर्पित करते हैं, वह मेरे पास रह विचित्र भोगके अधिकारी होते हैं। जो जन्ममें एकबार मात्र विश्वेश्वरको नमस्कार करते हैं, वह त्रैलोक्यजनपूजितपाद नरपति होते हैं। जो विश्वेश्वरका दर्शनकर स्थानान्तरमें भी मृत होते हैं, इसमें सन्देह नहीं, कि वह व्यक्ति भी जन्मान्तरमें मुक्तिभाजन होते हैं। जिनके रसनाग्रमें विश्वेश्वरका नाम, कर्णमें विश्वेश्वरकथा

अथवा और मानसमें विश्वेश्वरचिन्ता है, उन्हें फिर जन्म लेना नहीं पड़ता। जो व्यक्ति मेरे इन विश्वेश्वर लिङ्गके दर्शनका अनुमोदन करते, वह महापुण्याश्रय व्यक्ति मेरे पारिषद्‌समूहमें परिगणित होते हैं। जो मनुष्य त्रिसन्ध्य "विश्वेश्वर विश्वनाथ" इस प्रकार जप करते हैं, वह सदा मेरे हृदयमें जागरूक रहत हैं। हे देवगण! यह लिङ्ग मेरे भी सतत पूज्य हैं, अतएव सुर, नर और ऋषिगण सर्व्वप्रयत्नके साथ इनकी पूजा करें। जो विश्वेश्वरका स्मरण नहीं करते, यमकिङ्करगण उन्हें ही दर्शन देते हैं और वही गर्भवासयातना भोगते हैं। जो इन लिङ्गको नमस्कार करते, देव और दानवगण उन्हें नमस्कार करते हैं। इन लिङ्गको मात्र एक प्रणामसे दिक्‌पतित्व भी अल्प है; इसलिये, कि दिक्‌पतित्वका भ्रंश है, महादेवका प्रणाम भ्रंश नहीं। निखिल विदश और ऋषिगण सुनें, मैं महोपकारके लिये कहता हूं, कि "भूर्लोक भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक और जनलोकमें किसी स्थानमें ही विश्वेश्वरके सदृश दूसरे लिङ्ग नहीं हैं।" हे देवगण! सत्यलोक, तपोलोक, वैकुण्ठ, कैलास या रसातलमें, कहीं मणिकर्णिका सदृश तीर्थ, विश्वेश्वरतुल्य लिङ्ग और मेरे आनन्दकानन सदृश तपोवन नहीं है। समस्त काशी ही तीर्थमयी है, वाराणसीका नाम तीर्थका भी तीर्थ है; इस काशीमें पवित्र मणिकर्णिका मेरा अद्वितीय सुखस्थान है। मेरे प्रासादसे थोड़ा ईशानकोणस्थित [पूर्व्व और उत्तरकी ओर तीनशत हस्त, दक्षिण दो शत हस्त और गङ्गाके मध्यमें पञ्चशत हस्त परिमित स्थान मणिकर्णिका है; यह त्रैलोक्यका सार परमात्माकी आश्रयभूमि है। जो यहां वास करते हैं, वह मेरे हृदयमें शयन करते और मेरे आनन्द काननमें यह जो अमृतधाम मेरे लिङ्ग हैं, यह सप्तपाताल भेदकर भक्तके प्रति कृपापरतन्त्र हो स्वयं समुत्थित हुए हैं। जो कपटभावसे इन लिङ्गको भजेंगे और हेतुवाद करेंगे, उनके प्रति यह दण्डविधान किया है, कि वह कभी गर्भवाससे निष्कृति न पावेंगे। मेरे भक्तगण सदा इन लिङ्गको अपना अपना अभिलषित द्रव्य दान करें। यहां पाप करनेसे जैसे वह कभी क्षय नहीं होता, उसी तरह वह सब द्रव्य इह और परकालमें क्षय नहीं होता। जो दूर रहनेपर भी आधिक्यबोधसे मेरे लिङ्गकी उपासना करेंगे, महत्त मङ्गल वस्तुसमूहके साथ मोक्षलक्ष्मी उन सत्पुरुषगणका आलिङ्गन करेंगी। हे विष्णो! हे स्रष्टः! हे देवनिवह! हे मुनिनिचय! तुम लोग सुनो। यह लिङ्ग सत्पुरुषगणके असाधारण सिद्धिदायी हैं, मुझमें और इन लिङ्गमें कुछ भी प्रभेद नहीं है। जो निखिल सिद्धिनिदान, इन लिङ्गको

सत्कर्मार्जित वित्त प्रदान करते हैं, उन्हें मैं निखिल सुखसाधन मोक्षपद दान करता हूं। मैं ऊर्द्धबाहु हो भूयोभूयः कहता हूं, कि "विश्वेश्वर लिङ्ग, मणिकर्णिका और वाराणसीपुरी, यह तीनो सत्य हैं।" महादेव यह सब कह भक्तोंके साथ विश्वेश्वर लिङ्गकी पूजाकर उसीमें विलीन हुए। देवनिवह जयध्वनि करते हुए उन्हें प्रणामकर अपने अपने धाम गये! स्कन्दने कहा, हे मित्रावरुणनन्दन! तुम काशी वियोगविधुर हो तुमसे मैंने यथाज्ञान अविमुक्तक्षेत्रका स्वल्पमात्र पापप्रणाशन माहात्म्य कहा। तुम शीघ्र ही काशीप्राप्त होगी। इस समय सूर्य्यदेवने चरमपर्व्वतकी शिखरका आश्रय किया, यह तुम्हारे और मेरे दोनोंके ही वाक्संयमनका समय है। व्यासने कहा, हे सूत! यह सुनकर कुम्भसम्भवमुनिने कार्त्तिकेयको प्रणामकर सन्ध्योपासनाके लिये लोपामुद्राके साथ वहांसे प्रस्थान किया और महेशकी क्षेत्रमहिमा जानकर निश्चिन्त चित्तसे उनकी ही आराधनामें चित्त निविष्ट किया, हे सूत! इस जगत्में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो शतवर्षमें भी आनन्द काननका माहात्म्य कीर्त्तन करनेमें समर्थ हो। परमात्माने भगवतीसे जो कहा था और स्कन्दने अगस्त्यको जो सुनाया था, मैंने तुमसे और शुकप्रभृतिसे उसी प्रकार माहात्म्य कीर्त्तन किया। कहो, इस समय तुम्हें मुझसे कुछ पूछना है, मैं उसका भी उत्तर दूं। निखिल अभिलषित फलदायक सर्व्वपापनाशक इस पवित्र अध्यायके सुननेसे मनुष्य कृतकार्य्य होते हैं।

नवनवतितम अध्याय समाप्त ॥ ९९ ॥

शततम अध्याय।

अनुक्रमणिका।

सूतने कहा, हे महात्मन् पराशरतनय! मैंने यह स्कन्दपुराणान्तर्गत अनुपम काशीखण्ड सुनकर परम प्रीति लाभ की है और इसको सम्यक् अर्थसे परिज्ञात हुआ हूं; अब इसका सम्पूर्णतासम्पादक अनुक्रमणिकाध्याय और उसका माहात्म्य कीर्त्तन करिये। व्यासदेवने कहा, हे पुण्यात्मन् जातुकर्णीतनय सूत! मैं अब सबके पापविनाशार्थ महापुण्यजनक अनुक्रमणिकाध्याय और उसका माहात्म्य वर्णन करता हूं, अवहितचित्त हो सुनो और शुकवैशम्पायनादि बालकगण भी सुनें। इस काशीखण्डमें पहले विन्ध्य-नारद संवाद कीर्त्तित हुआ है। फिर क्रमसे सत्यलोकप्रभाव, अगस्त्याश्रममें देवगणका आगमन, पतिव्रताचरित्र, अगस्त्यका प्रस्थान, तीर्थ प्रशंसा सप्तपुरी वर्णन, संयमीका स्वरूप कथन, सूर्य्यलोकविवरण, शिवशर्म्मा नामक ब्राह्मणकी इन्द्रादिलोकप्राप्ति, अग्नि, निर्ऋति और वरुणदेवकी जन्मकथा, गन्धवती

और अलकापुरी वृत्तान्त, शिवशर्म्माकी चन्द्रलोकप्राप्ति, नक्षत्रलोकका विवरण, शुक्रकी उत्पत्ति, मङ्गललोक, वृहस्पतिलोक, शनिलोक और सप्तर्षिलोकका विवरण, ध्रुवकी तपस्या, ध्रुवकी परमपदप्राप्ति और उनकी ध्रुवलोकमें अवस्थिति, शिवशर्म्माका सत्यलोक दर्शन, चतुर्भुजाभिषिक और निर्व्वाण लाभ, स्कन्द और अगस्त्य-संवाद, मणिकर्णिकाकी उत्पत्ति कथा, गङ्गा माहात्म्य, दशहरास्तव, गङ्गाका प्रभाव, गङ्गाका सहस्र नाम कीर्त्तन, वाराणसीकी प्रशंसा, कालभैरवका आविर्भाव, दण्डपाणि और ज्ञानवापीका उत्पत्तिविवरण, कलावतीका उपाख्यान, सदाचार वर्णन, ब्रह्मचारिप्रकरण, स्त्री-लक्षण, कर्त्तव्याकर्त्तव्यप्रकरण, अविमुक्तेश्वर वर्णन, गृहस्थधर्म्म, योगनिरूपण, महाकालका ध्यान; दिवोदास, काशीधाम और योगिनीगणका वर्णन, लोलार्क और उत्तरार्कका विवरण; शाम्बादित्यकी महिमा, द्रुपदादित्य विवरण, गरुड़ाख्यान; अरुण और सूर्य्यदेवका उदय विवरण; मन्दरपर्व्वतसे दशाश्वमेध तीर्थका समागम, पिशाचमोचनका उपाख्यान, गणेशप्रेरण, गणेशमाया वर्णन, ढुंढिगणेशका आविर्भाव, विष्णुमायाविस्तार, दिवोदासविसर्ज्जन, पञ्चनदकी उत्पत्ति, विन्दुमाधवका विवरण, वैष्णवतीर्थनिचयका माहात्म्यकीर्त्तन, विन्ध्यपर्व्वतसे वृषभध्वजका गमन; ज्येष्ठ स्थानमें महेश्वर और जैगीषव्यका कथोपकथन, महेश्वर द्वारा काशीक्षेत्रका रहस्य वर्णन; रत्नेश्वर और व्याघ्रेश्वरका उत्पत्तिविवरण; शैलेश्वरका वृत्तान्त, रत्नेश्वरका दर्शन, कृत्तिवासेश्वरकी उत्पत्ति, अष्टषष्ठि आयतनका समागम कथन, काशीधाममें देवगणका अधिष्ठान, दुर्गासुरका पराक्रमवर्णन, भगवती दुर्गा द्वारा उसका पराजय, ओङ्कारेश्वर वर्णन, ओङ्कारेश्वर माहात्म्य कीर्त्तन, त्रिलोचनका प्रादुर्भाव, त्रिलोचनका प्रभावकीर्त्तन, केदारेश्वरका उपाख्यान, धर्म्मेश्वरका महिमाकथन, पक्षिगणकी कथा, विश्वभुजाका उपाख्यान, दुर्द्दमकी कथा, विश्वेश्वरका उपाख्यान, वीरेश्वरका महिमा वर्णन, निखिल तीर्थोंके साथ गङ्गाका मिलन, कामेश्वरकी महिमा, विश्वकर्म्मेश्वरका माहात्म्य, दक्षयज्ञका समुद्भव, सतीका देहत्याग, दक्षेश्वरकी उत्पत्ति, पार्व्वतीश्वरका महिमाकीर्त्तन, गङ्गेश्वरका माहात्म्य, नर्म्मदाकी उत्पत्ति, सतीश्वरका प्रादुर्भाव, अमृतेश्वरादिका वर्णन, काशीधाममें व्यासका शाप और शापमुक्ति विवरण, क्षेत्रतीर्थ कथन, मुक्तिमण्डपका वृतान्त, विश्वेश्वरका आविर्भाव, और यात्राप्रकरण यह शत संख्यक आख्यान क्रम क्रमसे वर्णित हुआ है। इन सब आख्यानोंके सुननेसे समुदय काशीखण्ड सुननेका फल मिलता है। उसमें उपस्थित अनुक्रमणिकाध्यायमें यथाप्रकरण कीर्त्तित है। सूतने कहा,

हे महात्मन् सत्यवतीसुत ! तब आप सिद्धिप्रार्थी मनुष्योंके हितके लिये यात्राप्रकरण वर्णन कीजिये । व्यासदेवने कहा, हे महाप्राज्ञ ! यात्रिकगण, पहले जैसे यात्रा करेंगे, वह यथाविधि प्रकाश करता हूं, सुनो । मनुष्य पहले चक्रपुष्करिणीजलमें स्नानकर यथाविधि देवता और पितृगणकी अर्चना, ब्राह्मण और अर्थिगणका सत्कार और आदित्य, द्रौपदी, विष्णु, दण्डपाणि, और महेश्वरको प्रणामकर ढुंढिगणेशके दर्शनार्थ जावें । फिर ज्ञानवापीका जल स्पर्शकर नन्दिकेश्वरको पूजाके उपरान्त तारकेश्वर, महाकालेश्वर और दण्डपाणिकी अर्चना करें, इसका नाम पञ्चतीर्थिका है । महाफलाकाङ्क्षी मनुष्योंको नित्य पञ्चतीर्थिका करना चाहिये । इसके उपरान्त विश्वेश्वरकी सर्व्वार्थसिद्धिप्रदा यात्राकर फिर यत्नके साथ चतुर्द्दश आयतनके उद्देशसे यात्रा करें । क्षेत्रसिद्धिप्रार्थी यात्रिकगण, कृष्ण प्रतिपदसे अमावास्या पर्य्यन्त या प्रति अमावास्याको यथाविधि पूर्व्वोक्त चक्रतीर्थमें स्नान और वहांके लिङ्गकी अर्च्चनापूर्व्वक मौनी हो यात्रा करनेसे सम्यक् फलभागी होते हैं । काशीवासी मनुष्य, पहले मत्स्योदरीमें स्नानकर और ओङ्कारेश्वरका दर्शनकर क्रमसे त्रिपिष्टप नामक महादेव, कृत्तिवासेश्वर, रत्नेश्वर, चन्द्रेश्वर, केदारेश्वर, धर्म्मेश्वर, वीरेश्वर, कामेश्वर, विश्वकर्म्मेश्वर, मणिकर्णीश्वर और अविमुक्तेश्वरका दर्शनकर विश्वेश्वरकी अर्च्चना करें । जो क्षेत्रवासी मनुष्य, यत्नके साथ ऐसी यात्रा नहीं करते, उन्हें क्षेत्रके उच्चाटनसूचक सब विघ्न उपस्थित होते हैं । विघ्नशान्तिके लिये दूसरे अष्टायतनकी यात्रा करना भी कर्त्तव्य है । मनुष्य प्रति अष्टमीको भीषण पापराशि निवारणार्थ पहले दक्षेश्वर लिङ्गका दर्शनकर क्रमसे पार्व्वतीश्वर, पशुपतीश्वर, गङ्गेश्वर, नर्म्मदेश्वर, गभस्तीश्वर, सतीश्वर और अष्टम तारकेश्वर लिङ्गका दर्शन करें । दूसरी एक सर्व्वविघ्नविनाशिनी योगक्षेमकरी शुभदायिनी यात्रा है, यह क्षेत्रवासियोंका सदा कर्त्तव्य है ; वह कहता हूं, सुनो । वरणामें स्नानकर पहले शैलेश्वरका दर्शनकर गङ्गायमुनासङ्गममें स्नानके उपरान्त सङ्गमेश्वरका दर्शन करें । फिर स्वर्लीनतीर्थमें स्नान करते हुए स्वर्लीनेश्वरका दर्शनकर मन्दाकिनीमें स्नानके उपरान्त मध्येश्वरका दर्शन, फिर हिरण्यगर्भतीर्थमें स्नानकर हिरण्यगर्भेश्वरके दर्शनके उपरान्त मणिकर्णिकामें स्नान और ईशानेश्वरका दर्शनकर गोप्रेक्षकूपजल स्पर्श करते हुए गोप्रेक्षेश्वरका दर्शन करें । फिर कपिलह्रदमें स्नानकर वृषभध्वजका दर्शन करते हुए उपशान्तकूपमें जलक्रिया समाधापूर्व्वक उपशान्तेश्वरका दर्शन करें । फिर पञ्चचूड़ह्रदमें स्नानकर ज्येष्ठस्थानको

अर्च्चनापूर्व्वक चतुःसमुद्र कूपमें स्नानके उपरान्त चतुःसमुद्रेश्वरके सम्मुखवर्त्ती वापीका जल स्पर्श कर उनका दर्शन करें। फिर शुक्रेश्वर कूपमें स्नानकर शुक्रेश्वरके दर्शनके उपरान्त दण्डखाततीर्थमें स्नान करते हुए व्याघ्रेश्वरकी अर्च्चनापूर्व्वक शौनकेश्वर कूपमें स्नान और महालिङ्ग जम्बुकेश्वरकी पूजा करें। मनुष्य इस तरह यात्रा करनेसे फिर दुःखसागररूप संसारमें जन्म ग्रहण नहीं करते। कृष्णप्रतिपद्से चतुर्द्दशी पर्य्यन्त नित्य यह यात्रा करें। एकादशायतनोद्भव और एक प्रकारकी यात्रा करना मनुष्यका कर्त्तव्य है। अग्नीध्रकुण्डमें स्नानकर क्रमसे अग्नीध्रेश्वर, उर्व्वशीश्वर, नकुलीश्वर, आषाढ़ीश्वर, भारभूतेश्वर, लाङ्गलीश्वर, त्रिपुरान्तकेश्वर, मनःप्रकाशेश्वर, महालसेश्वर और तिलपर्णेश्वरनामक एकादश लिङ्गकी यत्नपूर्व्वक पूजा करें, मनुष्य इस यात्राके करनेसे रुद्रत्व लाभ करते हैं। अब अनुपम गौरीयात्राका विषय कीर्त्तन करता हूं; शुक्लपक्षमें तृतीयाको यात्रा करनेसे परम समृद्धि लाभ होती है। मनुष्य पहले गोप्रेक्षतीर्थमें स्नानकर मुखनिर्म्मालिका देवीके निकट उपस्थित हों। फिर ज्येष्ठवापीमें स्नानके उपरान्त ज्येष्ठागौरीकी पूजाकर ज्ञानवापीमें स्नानके उपरान्त सौभाग्यगौरी और शृङ्गारगौरीकी पूजा करें; विशाल गङ्गास्नान और विशालाक्षीपूजा और ललितातीर्थमें स्नानकर ललितादेवीकी अर्च्चना करें। फिर भवानीतीर्थमें स्नानके उपरान्त भवानीकी पूजाकर विन्दुतीर्थमें स्नान और मङ्गलादेवीकी अर्च्चनापूर्व्वक स्थिरलक्ष्मीलाभके लिये महालक्ष्मीकी पूजा करें। जो व्यक्ति मुक्तिक्षेत्र काशीधाममें पूर्व्वोक्त यात्रा करते हैं, उन्हें इहकालमें कभी दुःखभोग करना नहीं पड़ता। मनुष्य प्रति वर्ष इस काशीधाममें विघ्नेश्वरकी यात्रा और प्रीतिके लिये ब्राह्मणगणको मोदक दान करें। मङ्गलवारको भैरवयात्रा करनेसे समस्त पातक विनष्ट होते हैं। रविवारयुक्त षष्ठी या सप्तमीको समुदय विघ्नशान्तिके लिये रवियात्रा विधेय है। अष्टमी या नवमी तिथिको चण्डीयात्रा करनेसे परम शुभ लाभ होता है। प्रति वर्ष अन्तर्गृहकी यात्रा करना कर्त्तव्य है। मनुष्य, पहले प्रातःस्नानकर पञ्च-विनायक और विघ्नेश्वरको प्रणामपूर्व्वक निर्व्वाणमण्डपमें अवस्थिति करते हुए पापराशि शान्तिके लिये, "मैं अन्तर्गृहमें यात्रा करूंगा" ऐसा सङ्कल्पकर मणिकर्णिकामें मौनभावसे स्नानके उपरान्त मणिकर्णीश्वरकी अर्च्चना, कम्बलेश्वर और अश्वतरेश्वरको प्रणिपात और वासुकीश्वरकी अर्च्चनाकर क्रमसे पर्व्वतेश्वर, गङ्गाकेशव, ललितादेवी, जरासन्धेश्वर और सोमनाथका दर्शनकर वराहेश्वरकी पूजा करें। फिर ब्रह्मेश्वर और अगस्तीश्वरका दर्शनकर और काश्यपे-

श्वरको प्रणामपूर्व्वक क्रमसे हरिकेशेश्वर, वैद्यनाथ और ध्रुवेश्वरका दर्शन, गोकर्णेश्वरकी अर्च्चना, हाटकेश्वरके समीप गमन और अस्थिक्षेपतड़ागमें कीकशेश्वरका दर्शनकर भारभूतेश्वर, चित्रगुप्तेश्वर और चित्रघण्टा देवीको नमस्कारकर पशुपतीश्वर, पितामहेश्वर, कमलेश्वर, चन्द्रेश्वर, वीरेश्वर, विघ्नेश्वर, अग्नीश्वर, नागेश्वर, हरिश्चन्द्रेश्वर और चिन्तामणिविनायक, सेनाविनायकका दर्शन करें। वशिष्ट और वामदेवका दर्शन और सीमाविनायक, सृष्टीशके पास गमन करें। फिर क्रमसे त्रिसन्ध्येश्वर, विशालाक्षी देवी, धर्म्मेश्वर आशाविनायक, वृद्धादित्य, चतुर्व्वक्त्रेश्वर, ब्राह्मीश्वर, मनःप्रकाशेश्वर, ईशानेश्वर, चण्डी और चण्डेश्वर और भवानीशङ्करका दर्शन और ढुंढिगणेशको प्रणामकर राजराजेश्वरकी पूजा करें। फिर क्रमसे लाङ्गलीश्वर, नकुलीश्वर, परानन्देश्वर, परद्रव्येश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, निष्कलङ्केश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, परमेश्वर और गङ्गेश्वरकी अर्च्चना, ज्ञानवापीमें स्नान और नन्दिकेश्वर, तारकेश्वर, दण्डपाणि, महेश्वर, वीरभद्रेश्वर, अविमुक्तेश्वर और पञ्चविनायकको प्रणामकर विश्वनाथके पास गमन करें। इसके उपरान्त मौनभाव परिहारपूर्व्वक "हे प्रभो! यथायोग्य मेरी की हुई यह अन्तर्य्यहयात्रा चाहे न्यून हो, या अधिक आप इससे मेरे प्रति प्रसन्न हों" ऐसा मन्त्रपाठकर, घ्राणकाल मुक्तिमण्डपमें विश्रामके उपरान्त पुण्यात्मा मनुष्य निष्पाप हो अपने घर आवें। मनुष्य हरिशाश्वरको महापुण्यसमृद्धिके निमित्त समुदय विष्णुतीर्थमें यात्रा करें। भाद्रमासको पञ्चदशी तिथिको कुलस्तम्भकी अर्च्चना करनेसे रुद्रपिशाचत्वजनित दुःख भोगना नहीं पड़ता। तीर्थवासी मनुष्य श्रद्धापूर्व्वक पूर्व्वोक्त सब यात्रायें करें, विशेषतः पर्व्वदिनमें सर्व्वतोभावसे समुदय कर्त्तव्य है। पुण्यशाली व्यक्ति बिना यात्रा किये कभी दिन निष्फल न करें। प्रति वर्ष परमयत्नसे पहले भागीरथीकी और फिर विश्वेश्वरको यात्रा अवश्य करणीय है। काशीवासियोंका जो दिन बिना यात्राके निष्फल जाता है, उस दिनमें ही उनके पितृगण निराश होते हैं और जिस दिन विश्वेश्वरका दर्शन नहीं करते, निःसन्देह उसी दिन वह कालरूपसर्प और मृत्यु द्वारा दृष्ट होते हैं। जो व्यक्ति मणिकर्णिकामें स्नान और विश्वेश्वरका दर्शन करते हैं, वह सत्य सत्य ही समुदय तीर्थमें स्नान और समुदय यात्राका फललाभ करते हैं। इसलिये प्रतिदिन मणिकर्णिकामें स्नान और विश्वेश्वरका दर्शन करना मनुष्यका अवश्यकर्त्तव्य है। हे सूत! स्कन्दपुराणान्तर्गत यह काशीमाहात्म्य सुनकर मनुष्य अशेष पातकी होनेपर भी कभी निरयगामी नहीं होते।

हे सूत! एकमात्र काशीखण्ड सुननेसे तीर्थस्नानके सब फल निश्चय मिलते हैं। केवल काशीखण्ड सुननेसे मनुष्य निःसन्देह सर्व्वप्रकार दान और बहुत यज्ञानुष्ठानके पुण्यभागी हो सकते हैं। उग्र तपोनुष्ठानसे जो महत् फल है, काशीखण्ड सुननेसे भी वही फल होता है। केवल काशीखण्ड सुननेसे ही मनुष्य, साङ्गवेद-चतुष्टयके पाठके सदृश फलभागी होते हैं। गया क्षेत्रमें पिण्डप्रदान और काशीखण्ड श्रवण, दोनोंसे ही पितृपुरुषगण समान तृप्त होते हैं! जो परम मङ्गल-जनक काशीखण्ड सुनते हैं, वह स्थिरचेता मनुष्य समुदय पुराण सुननेका फल पाते हैं और जो मनुष्य परमोत्तम काशीमाहात्म्य सुनते हैं, वह महापुण्यशील व्यक्ति समुदय धर्म्मशास्त्र सुननेके फलभागी होते हैं। हे द्विज! भगवान् महेश्वरकी ऐसी परम आज्ञा है, कि सभी श्रद्धाके साथ सम्पूर्ण काशीखण्डका पाठ और श्रवण करनेसे और यदि कोई इसका मात्र एक भी आख्यान सुने, तो निश्चय वह समुदय धर्म और धर्म्मशास्त्र सुननेके फलभागी होंगे। काशीखण्ड महाधर्म्मका एक मात्र कारण, महार्थप्रतिपादक और सर्व्वप्रकारके अभीष्टलाभका निदानस्वरूप होनेके कारण प्रसिद्ध है। इसके सुननेसे मनुष्योंका मोक्षपद भी दूरवर्त्ती नहीं होता और उनके प्रति पितृगण, समुदय सुरगण, मुनिगण और सनकादि-ब्रह्मर्षिगण प्रसन्न होते हैं। अधिक क्या, काशीमाहात्म्य सुननेसे चतुर्व्विध भुवननिचय ही श्रोताके प्रति निःसन्देह सन्तुष्ट होते हैं। जो ज्ञानी पुरुष समस्त काशीखण्ड या आधा या पादमात्र अथवा पादार्द्ध, या मात्र एक आख्यान भी सुनते हैं, वह परम नमस्य और देववत् पूज्य होते हैं; उनके सन्तोषार्थ उन्हें परम समादरपूर्व्वक विविध वस्त्र-रत्नादि दान करना कर्त्तव्य है। कारण, उनके सन्तुष्ट होनेसे निःसन्देह विश्वेश्वर सन्तुष्ट होते हैं। जहां यह परम आनन्द निदान काशीखण्ड पढ़ा जाता है, वहां किसी तरहका अमङ्गल उपस्थित नहीं होता। जो ज्ञानवान् व्यक्ति काशीखण्ड श्रवण, पाठ या श्रवण कराते हैं, वह सभी रुद्रस्वरूप हैं। उक्त पाठक और श्रावकको हिरण्य, धेनु, वस्त्र, अन्न और पुस्तक दान करें। जो व्यक्ति यह सुरम्य स्तव लिपिबद्धकर ब्राह्मणके हाथ समर्पण करते हैं, वह निःसन्देह समुदय पुराणदानफल पाते हैं। इस काशीखण्डमें जितने व्याख्यान, श्लोक, श्लोकपाद, वर्ण, पत्र, पत्रपंक्ति और पुस्तक-बन्धन वस्त्रमें जितने वस्त्र रज्जु सूत्र और चित्रकार्य्य हैं, पुस्तकदाता उतने युग-सहस्र स्वर्गधाममें परमानन्दसे अवस्थान करेंगे। जो व्यक्ति द्वादशवार यह काशीखण्ड सुनेंगे, शङ्करानुग्रहसे शीघ्र उ-

नका ब्रह्महत्यापातक भी दूरीभूत होता है। अपुत्रक व्यक्ति यदि यथाविधि स्नान-कर श्रद्धाके साथ इस पुस्तकको सुनें, तो शिवाज्ञा प्रभावसे वह पुत्ररत्न पाते हैं। हे सूत! अधिक और क्या कहूं, जिन मनुष्योंका जो अभिलाष हो, इसके सुन-नेसे वह समस्त ही सफल होगा। दूर-देशमें रहकर भी काशीखण्ड सुननेसे, शङ्करकी आज्ञासे वह काशीवासका फल पाते हैं। इसके सुननेसे सदाशय मनुष्योंको सर्व्वत्र विजय और सौभाग्य होता है। जिनके प्रति विश्वेश्वर प्रसन्न हैं, उन्हीं पुण्यात्मा निर्म्मलचेता मनुष्यको इसके सुननेकी अभिरुचि होती है। मनुष्य सर्व्वमङ्गल-सिद्धिके लिये अपने घरमें यह अत्यन्त मङ्गलकर मनोहर काशीखण्डकी लिखकर पूजा करें।

शततम अध्याय समाप्त॥ १००

काशीखण्ड सम्पूर्ण।



हाथी-मार्का सालसा।

सद्गन्धयुक्त और सुस्वाद है।

हिन्दुस्थानी लोग यौवनहीमें वृद्ध हो जाते हैं। बत्तीस वर्षकी उमरसे पहले ही कितनोंका अङ्ग शिथिल हो जाता है। बयालिस वर्षकी उमरमें कितने ही सचमुच बूढ़े हो जाते हैं। बी० बसु० एण्ड कम्पनीका सालसा पीनेसे आदमी बहुतमें बूढ़ा न होगा। शरीर सुस्थ रहेगा। जो साठ वर्षके बूढ़े हैं, कमर झुक गई है और मांस लटक गया है तीन महीने यह बी बसु एण्ड कम्पनीका सालसा पीके देखिं शरीरमें नई जवानीका उमर होगा; बलवीर्य्य बढ़ेगा नए आदमी बन जावेंगे। लड़की बच्चे पुरुष स्त्री सब बी० बसु० एण्ड कम्पनीका सालसा सेवन करें। नाना प्रकारके पारेके घाव नाना प्रकारके चर्म्मरोग सूखो खाज गर्मीके घाव बातरोग जोड़ोंका दर्द अङ्गोंका दर्द बवासीर भगन्दर इत्यादि नाना रोग आराम होते हैं।

हाथीमार्का सालसाका मूल्यादि।

नम्बर	शीशी मूल्य	डा: म:	पैकिङ्ग
१ नं० आध पावकी शीशी	॥=)	।)	=)
२ नं० पावभरकी ,,	१=)	॥)	=)
३ नं० डेढ़ पावकी ,,	१॥=)	१)	≈)

बी० बसु० एण्ड कम्पनी।
७९ नं० हैरिसन रोड कलकत्ता।